

पत्तन

पत्तन

पतन

लेखक
आल्वेयर कामू

अन्तरकार
उमा राव



राजावताराना प्रावचनाना
दिल्ली इलाहाबाद मम्बई पटना

मूल्य २२५ रुपये

कॉब जपयात La Chute १९५६ का हिन्दी रूपान्तर

मूल प्रकाशक गेसीमार, मेरिस

© १९६० राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली

मुद्रक हिन्दी प्रिन्टिंग प्रेस, दिल्ली

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली

श्रीमान बेना न मानें तो मैं आपकी सहायता करूँ। मुझे डर है कि आप उस बनमानुस को, जा डम जगह का भाग्यविधाता है, अपनी बात समझा न सकेंगे। बात असल में यह है कि बट्ट डच भाषा के अलावा और कोई भाषा नहीं जानता। अगर आप मुझे अपनी ओर से बवालन करने की इजाजत न देंगे तो शायद वह अनुमान ही न कर पाएगा कि आप जिन गराब की मांग कर रहे हैं। लीजिए, उम्मीद है कि वह मेरी बात समझ गया—उसके सिर हिनाने के तो यही मतलब हुआ कि उसने मेरी बात मान ली है। लीजिए, वह चल पड़ा। वाह! उसकी जन्दगाजी में भी एक प्रकार की सावधानी और सकल्प है। आप भाग्य गानी हैं कि उसने बहम्वर नहीं निकाला। जब वह किसी की खिदमत नहीं करना चाहता तो बस मुँह की-सी एक आवाज कर देता है। कुछ जोर-जबरदस्ती नहा करता। बड़े-बड़ जन्तुआ को ही तो अधिकार है अपनी तबीयत के मालिक हान का। अच्छा श्रीमान, अब मैं चला हूँ। आपकी सेवा कर सका इसकी मुझे प्रमन्नता है। धन्यवाद! अगर मुझे यह निश्चय होना कि मैं आपका परधान नहीं कर रहा हूँ तो अवश्य ले लेता। आप बहुत ज्यादा महरबान हैं तो मैं अपना गिलास यही लिए आता हूँ।

आप ठीक कहते हैं। उसका मौन हमें बधिर बना देता है। आत्म बना का निम्नव्यता है वह मौन, विभीषिकाया की मार से बाधित। कभी-कभी तो मैं अचम्भे में पड़ जाता हूँ कि वह किन्नर हठ के साथ सम्य भाषाओं की उपमा करता है। उसका धंधा है एम्प्टरडम के

इस शराबखाने में हर दश के नाविका का मन बहलाना—और इस शराबखाने का नाम इसने रख छाड़ा है जाने क्या, मेक्मिका सिटी'। क्या आपका खयाल नहीं है कि इस तरह के काम में अपने अज्ञान के कारण दिक्कत उठान का उसे डर होगा ? जरा कपना कीजिए, डामनो न मनुष्य की बबल की, मीनार में बंद ! बेगव बहदुरा-बन्का रह जाएगा अपनी जानी-पहचानी दुनिया से मिलकुल बाहर । पर इसे तो अपने निर्वासन का कोई आभास नहीं है । यह तो अपने ही रास्ते चलता जाता है । कोई चीज इस पर असर नहीं करता । इसका मुख से एक दुलभ वाक्य मैंने सुना था जब इसने घोषणा की थी कि लना हो तो लो, करना जान दो । वह क्या चीज थी जिस कोई लता या जाने देता ? जरूर वह हमारा यार खुद ही रहा होगा । मैं मानता हूँ कि ऐसी जीव मुझे बहुत आकर्षित करते हैं जो समूचे एक ही खण्ड से गढ़े गए हों । ऐसी किसी भी व्यक्ति के मन में, जिसने व्यवसाय की खातिर या अतः प्रेरणा से मानव के विषय में चिन्तन किया हो स्तनपायी यात्रियों के लिए बसक उठती ही है । कम-से-कम उनकी प्रेरणाओं का को-परोग हेतु तो नहीं होता ।

सच कहूँ तो हमारे मेजबान के मन में कुछ तो है ही, जिस का अपने मन की गहराई में छिपाए रहता है । अपने सामन की जाने वाला याता-यान समझ पाने की बजह से वह बड़ा अविश्वासी प्रकृति का हो गया है । तभी तो उसके चेहर पर एका-एकी भाव टपकता रहता है माना उसे इसमें सन्देह हो कि मनुष्य में सब-कुछ सबका दोष हीन नहीं है । उसकी इसी प्रकृति के कारण उसका व्यवसाय के प्रति रिक्त यात्री विषयों पर उमम बातचीत करना मुश्किल है । मित्रान के लिए, उसके सिर के ऊपर पीछ की दीवार पर वह खाली चोरी-चोर जगह दग रह हैं न वहाँ में कोई तस्वीर उतार दी गई होगी है । सचमुच वहाँ एक तस्वीर लगी थी बड़ी उम्र की तस्वीर थी एक सही मायना में उत्कृष्ट कलाकृति । इस जगह के मालिक ने जब उसे प्राप्त किया था

और जब उसमें विदा न तो तब दाना अवसरों पर मैं मौजूद था। दोनों ही अवसरों पर उसमें एक-आ निश्चय अनिश्चय होने का विचार। इस दृष्टि में आप मानेंगे कि समाज न उसके स्वभाव की सहज निष्प-
टता का कुछ दूषित कर दिया है।

आप यह न समझें कि मैं उसके बारे में कोई फसला दिय दे रहा हूँ। मैं उसके अविश्वाम का मुनासिब समझता हूँ और अगर मेरा वाचान स्वभाव इसके विरुद्ध न होना तो उसके अविश्वाम में समा भी बैठता। पर अन्तर्गत में बहुत बानूनी हूँ और बड़ी जल्दी दोस्ता कर लेता हूँ। हालांकि मैं आचार-व्यवहार में दूरी बनाए रखना भी जानता हूँ, पर बातचीत करने के अन्तर में हाथ में नहीं जान देता। जब मैं पास में था और अगर मुझे कोई बुद्धिमान व्यक्ति मिल जाता तो फौरन उसके मन लगन की वाणिज्य करता। यदि यह भ्रष्टता है तो आप मेरे इस समाधि-कारक के प्रयोग पर मुस्करा रहे हैं। मैं मानता हूँ कि यह कारक मुझे काम पसंद है और वह ही मुमस्कृत सम्भाषण भी। आप सब मानिए कि अपनी इस कमजोरी का मैं स्वयं बड़ा आलाचक हूँ। मैं खूब जानता हूँ कि अन्तर रंगी कपड़े पहनने के यह अनिवाय अथ नहीं हात नि आपके पर गड़े हैं। जो भा हो, विगुद्ध रंग की तरह गला के पाछे भी साज दिया रहता है। मैं अपने को यह कहकर सात्वता दे लेता हूँ कि भापा के हथारे भी तो पाक-भाप नहीं होत। हाँ जरूर एक गिराम गराव और लें।

आप क्या एम्प्टरडम में अभी कुछ दिन ठहरेंगे? बड़ा मुश्किल गहर है है न? मनमाहक? यह विनोपण मैं बहुत दिन में नहीं सुना था जबसे परिम छाहा, तब मे—वर्षों हुए। पर स्मृतिपा की बात ही निरासी होती है। हमारा उस रमणीय राजधानी की—या उसका घाटा की—मार्द भा जान मैं नहीं भूता हूँ। परिम चाम्पन में एक मराचिका है एक भव्य रमच चानीस लास छायाचित्रा में आवाज। विद्यनी जन-गणना के अनुसार पचाम नाम। अब तो और भी बढ़ गए होंगे। पर यह

काई आश्चर्य की बात नहीं। मुझे हमेशा लगता था कि हमारे नागरिक मधुमो के दो ही व्यसन हैं—विचार और व्यभिचार। जिसको यह लीजिए न काई अर्थ न कोई तुक्का। फिर भी हम उनकी निंदा न ही करें तो अच्छा। वे अवेले तो एस नहीं, सारे यूरोप का ही यह हाल है। कभी-कभी मैं साचता हूँ कि भविष्य के इतिहासकार हमारे विषय में क्या कहेंगे? आधुनिक मानव के लिए एव वाक्य पर्याप्त है—उसने व्यभिचार किया और अखबार पढ़े। और अगर आप इजाजत दें तो मैं कहूँगा कि उस आजपूण परिभाषा पर इस विषय की इतिथी हो चुकेगी।

पर हाँ, उच्च जाति की बात नहीं है, बस तो कहीं कम आधुनिक हैं। उनका पास समय है। दवाएँ तो उन्हें वे करते क्या हैं? य सज्जन जो इधर बैठ है वहाँ बठी उन महिलाओं का मेहनत पर जीते हैं। और ये सब घर और भाँदा, दोना बिलबुल मध्यम-वर्गीय जीव हैं जो ये हमेशा की तरह बल्पना-जगत में रहने की इच्छा से या मूर्खतावश आये हैं या दूम्बर सट्टा में या यह कि अत्यधिक या अति-न्यून बल्पना-शक्ति के कारण। कभी कभी य सज्जन छुरे या पिस्तीन के खेल खेल लते हैं, पर आप यह न समझ लीजिएगा कि इन्हें उनमें कोई विनाश रचि है। य बचल अपना पाट भँदा करने के लिए यह सब करते हैं और गोली चरन-बलाने के समय उनकी जान निवृत्तनी रहती है। फिर भी मैं इन्हें उन नागा में अधिक नतिनतापूण समझता हूँ जो परिवार की परिधि के अन्दर ही पारम्परिक संघर्ष की प्रक्रिया में व्यक्ति की हत्या कर डालते हैं। क्या आपने कभी इस पर ध्यान नहीं लिया कि हमारे समाज की व्यवस्था इसी ढंग की समष्टि के निष्पत्ति की गई है? आपने शास्त्रान की उन छाटी-छाटी मठनियाँ के बारे में तो मुना ही होगा जो अभाव घान तराव पर हजारों की समस्या में आक्रमण करती हैं और तज़ीमे नुतन-नुतन उमरा माँस साफ कर देती हैं—और सब रह जाता है बेचन एव डाना। जो हाँ यही उनका व्यग्रसा है। 'क्या तुम ए

घण्टा, माफ-मुयरा जीवन चाहत हा, जैसा और का है ?' आप जवान दत हैं 'हाँ अब'। कोना कर ही कम सकता है ? 'ठीक है साफ-मुयरा बना दिया जाएगा—यह रही तुम्हारा नौकरी, यह तुम्हारा परिवार और यह तुम्हारा व्यवस्थित विधाम।' और फिर वे नुसीले दात भास को छेद-छेदकर हड्डी तक पहुँच जाते हैं। पर मैं धन्याय कर रहा हूँ। मुझे ब्यवस्था 'उनकी' नहीं कहनी चाहिए, यह तो 'हमारी' है। सवाल यह है कि कौन किसे साफ-मुयरा कर देगा।

सीजिए हमारी शराब भाविन आ ही गई। आपकी सम्पन्नता बढ़े। हाँ वनमानुस न 'डॉक्टर' कहकर मुझे सम्बोधित करने के लिए अपना मुँह खाना था। इन देगा म हर काई या तो डॉक्टर कहा जाता है या प्रापमर। ये लाग आदर प्रकट करना पसंद करते हैं—कुछ तो दया के कारण और कुछ विनय के। कम-से-कम इन लागों में विद्वत् भावना एक राष्ट्रीय सस्यान नहीं बन गई है। इसके अलावा मैं डॉक्टर हूँ भी नहीं। आप अगर जानना ही चाहें तो मैं यहाँ आन में पढ़ने बकीन था। और अब मैं कह सकता हूँ कि मैं एक अनुज्ञापी निर्णायक हूँ।

मुझे अपना परिचय दन की आप इजाजत दें—डा. बपटिस्ट कमस आपकी सेवा में हाज़िर है। आपम मित्रकर लुगी हुई। आप निश्चय ही व्यापारा होंगे। एक प्रकार से ? क्या खूब जवाब है। समझ-बूझ का भी है। हर जगह हम जो भी हैं एक प्रकार से हीं तो हैं। अब मुझे जामूसी बरतनी इजाजत दें। आपकी आयु एक प्रकार से मरी आयु के बराबर है। आपका नजर चालीस साल की उम्र के दुनियादार आदमी का नजर है जिसने एक प्रकार से सब-कुछ देखा और अनुभव किया है। आपकी वेगमूषा मुर्चिपूरा है, एक प्रकार से जसा कि हमारे दग में लागों की रहती है और आपके हाथ मुनायम हैं। इसलिए आप बूनुषा हैं—एक प्रकार से। पर एक सुमस्तुन बूनुषा। सम्भाव्य-कारक के प्रयोग पर मुस्तराना वास्तव में आपकी मस्तिष्क की दूनी स्पष्टता से सिद्ध करता है, क्योंकि एक तो आपने उसे पहचाना और फिर आपन का उससे

अष्टतर अनुभव किया। और अन्त में मैं आपने लिए बिनाद की सामग्री हूँ। आत्म-नाथा न समझ इसे आप। आपकी इस प्रवृत्ति में उदारता निहित है। इसलिए आप एवं प्रचार से पर जाने भी दीजिए। व्यवसाय। मैं मुझ सम्प्रदायों से भी कम रचि है। आप मुझे दो सवाल पूछने दें और अगर उन्हें तामुनासिब समझें तो जवाब न दीजिएगा। आपकी कोई सम्पत्ति है? कुछ है? बहुत खूब। उसके उपभोग में आपन गरीबी को शामिल किया है? नहीं? तो मैं आपको सद्गुसी कहूँगा। आप यदि धर्मग्रन्थों में भली भाँति परिचित नहीं हैं तो मैं मानता हूँ कि यह बात आपकी समझ में न आएगी। समझ में आ गई? तो आप धर्मग्रन्थों से परिचित हैं। निश्चय ही आपको जानने की मेरी इच्छा बनवती हो रही है।

और मेरे बारे में आप स्वयं निश्चय कर लें। ब्रह्म, क्या और चेहरे में मुझ बताया गया है मैं फुटबाल के खिलाड़ी की तरह लगता हूँ। है न यह बात? पर अगर मेरी बातचीत में अन्तर्ज लगाएँ तो मैं मानना पड़गा कि मूर्खता के कुछ गुण मुझमें हैं। जिस जानवर के मान। मैं मेरा ओवरवॉश बना है यह होसकता है कि गंदा रहा हो, पर मेरे नामून तो अच्छी तरह सँवरे हुए हैं। मैं भी दुनियादार हूँ पर मैं बिना आगा-पीछा मोके मात्र आपकी आदृति के आधार पर बिनास करने में तय धाँसे कर रहा हूँ। और अन्त में गिरा आचरण और गुप्त स्तुत भाषा के बावजूद मैं जोदिव पर स्थित नाथिक। वे इस पराजयाने में बराबर आया करता हूँ। थोड़ा छान भी दीजिए। मेरा व्यवसाय दुर्गा के दम—मनुष्य की तरह। मैंने आपका अभी बताया ही है कि मैं अनुनापी निर्णायक हूँ। बरल गव चीज मेरे धार में सजल है कि मेरी कोई सम्पत्ति नहीं है। हाँ मैं घनी था। नहीं मैंन गरीबों के साथ कुछ बेगया नहीं। दमग क्या साहित होता है? कि मैं भी मद्गुमी था—आह! आपका अन्तरमाह में कुहास के रिगुन की आवाज सुनायी दे रही है? आप गाँव जाकर गरीबी पर कुहासा रूँगा।

आप अभी न चले दिए ? क्षमा करें, मैंने शायद आपका रोके रखा । नही-नही, मेरी प्रायना है मैं आपको दाम न चुकाने दूंगा । 'मेक्सिको सिटी' में मैं मेज़बान हूँ और आपको मेहमान बनाकर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई । मैं निश्चय ही बल भी यहीं रहूँगा, जैसे कि हर ग़ाम रहता है और आपका निमन्त्रण सह्य स्वीकार करूँगा । आपन जान का रास्ता ? हूँ, अगर आपको आपत्ति न हो तो सबसे आमान तो यही होगा कि मैं बदरगाह तक आपके साथ चला चलूँ । वहाँ से यहूदी बस्ती के किनारे से निकलकर आप उन आलीशान सड़कों पर पहुँच जाएँगे जहाँ फूलों से लदी ट्रामगाड़ियाँ गरजती हुई दौड़ती हैं । आपका होटल उही में एक पर है—'गमराक' पर । पहले आप । मैं यहूदी बस्ती में रहता हूँ—या कहिए कि जातवतक यहूदी बस्ती थी जब तक कि हमारे हिटलरपन्था भाई-बंदा न उसके घनेपन का घन नहीं दिया । क्या सफाई की गई थी । पचहत्तर हजार यहूदियों को या तो निवासित कर दिया गया था या मौत के घाट उतार दिया गया था । इसे कहते हैं 'वर्षभूमि की निर्मिति' । उनके परिश्रम की और नियम में चलने के धीरज की मैं दाद देता हूँ । आदमी में चारित्रिक दण्डता न हो तो नियमों का पालन आवश्यक है । यहाँ तो उसने कमाल ही कर दिखाया, काई दस बान में इन्कार नहीं कर सकता । और मैं जहाँ रहता हूँ वह म्यान इतिहास के धारण में अपराधा में मे एक का घटनास्थल रहा है । शायद इसी कारण मैं उस बनमानुस और उसकी मंते करने की प्रवृत्ति का समझ पाता हूँ । इस तरह मैं अपनी प्रवृत्ति के विरुद्ध, जा मुझ मंचिकर चीजों की तरफ़ मीचनी है सपन कर पाता हूँ । जब मुझे काई अनजानी ग़बन दिखायी देनी है, तो मेरे भीतर खतर की घण्टी बज उठती है 'आहिस्ता ! 'बनरा है !' जब आपण अधिकतम हाता है तब भी मैं मनक रहता हूँ ।

आप जानते हैं मेरे छोटे-न गाँव में प्रतिगोष के मन्त्रि काय में एक जमन भ्रमर न बड़ी ग़ालीनता से एक बड़ा म निबदन किया था, 'आप कृपया चुनाव कर लें कि आपके दोनों बेटा में से कौनसा बंधक

के रूप में गानी स उड़ा दिया जाए ?" चुनाव कर लें ! कल्पना कर सकत है आप इसकी ? वह ? नहीं, यह ? और फिर उसे जाते हुए देखें । खर हम लोग उसकी और चर्चा क्या करें ? पर विश्वास कर श्रीमान् अचम्भे की कोई भी बात सम्भव है । मैं जानता था एक छुड़ हृदय का । अविश्वास उसने त्याग दिया था । वह गतिवादी और स्वाधीनतावादी था । समस्त मानव-जाति यहाँ तक कि पशुमा को भी समान रूप से प्यार करता था । विसंगण आत्मा था, इतना तो निश्चित है । हाँ तो, सूराप के पिछन घममुड़ के दौरान उसने गाय की गरण ली । अपनी बहरी पर उसने लिख रखा था—तुम जहाँ बड़ी स भी भाये हो अदर आभा तुम्हारा स्वागत है । और क्या आप साच मकन हैं कि हम उदात्त निमंत्रण को किसने स्वीकार किया ? नागरिक सना ने । वह अदर घुसी मकान में पसरकर पन गई—और उस उदार मकान मालिक की अतद्विद्या-नमस्त्रियाँ पाह पेंकीं ।

ओह श्रीमतीजी ! क्षमा प्रार्थी हूँ । पर उ हाने तो धने श्री एक सञ्ज भी न समझा था । इनने सारे लोभ ? इनती दरहुण भी बाहर घूम रह हैं—चारिख के बावजूद जो कई दिन से धमने का नाम ही नहीं लती है ? भाग्य से 'जिन सराब लो है—इस अथरार में प्रकाश की एक मात्र भवन ! आपका भी सगता है न कि वह एक सुनहले तारि के रंग का अनाम आपने अदर जगाती है ? 'जिन सराब का गरमाहट में मुक्त शाम के वक्त सहर की सड़की पर घूमना अच्छा लगता है । मैं राता घूमता रहता हूँ, सपने देखता रहता हूँ या निरंतर अपने आपमें वार्ता-लाप करता रहता हूँ । हाँ इस गाम की तरफ—मुझे डर है कि मरी वाता स आपका सिर न चराने सगा हो । युत्रिया आप बहुत महर-वान हैं । पर यह तो मेरा उपान है । जगे ही मरा मुह खुलना है सख उफनन घने भात हैं । इसने अनावा इस देन से मुक्त प्ररणा मिलती है । सहर की पत्रिया पर उमहनी मोह मुक्त पस है । यरो और नहरा के बीच की बोही-ना जमीन में गवाख भरे हुए कुहागा, टण्णी भूमि और

पीले कपड़ा की तरह मपाते हुए समुद्र के कदी । मुझे यह सब पसन्द है । इसमें द्वन्द्व है । यह यहाँ भी है अन्यत्र भी ।

हा-हा । इस भीषी सड़क की पट्टी पर परा की मारी आवाज सुन-
कर और गम्भीरता में दूकानों के अन्दर-बाहर जान आत दबकर (उन
दूकाना से जा मुनहनी 'लिरिंग' मद्धलिया में और पीली पतिया के रंग के
आभूषणों से भरी हैं) आप साचने हगि कि व साग आज गाम को यही
है । आप भी धीरा की तरह ही हैं । आप भी साचन हैं कि ये भद्र लो
व्यापारी और व्यवसायी मधा के सदस्य हैं जा अपन अमरत्व का सम्मा-
वनामा के साथ मुनहली अगष्टिया का भी गिनन हैं, जिनके जीवन की
गात्रात्मकता इसनी ही है कि वे कभी-कभी बिना अपनी चौड़ किनारा
की टापिया पहने शरीर-विज्ञान का पाठ पढ़ सेन हैं । आप मलती कर
रह हैं । व हमारे साथ टहन रह हैं । बेग' पर देखिए उनके दिमाग
कहाँ हैं ? उस कुहास में जा निर्मोह प्रकाश, तिन' गराव और दूकाना
पर लगे लाल और हर साप्न-बोडों में स उछली हुई पिपरमेट की खुशबू
स बना है ? होलण्ड देग एक सपना ह श्रीमान्—घुएँ और सोन का
सपना दिन में घुएँ से भरा रात का मुनहने प्रकाश में जगमगाना हुआ ।
और रात दिन उस कल्पना-दग में वन्हीं-जम 'रोहिंगिन' भर रहन हैं, ऊँचे
हैंटल लगी काली साइकिलें स्वप्नावस्था में चलात हुए, माना वे अन्त्य-
सन्देशवाहक हस हा—दग मर में समुद्रा के चारों ओर नहरो के
किनार किनारे निरन्तर तरत हुए । उनका मन ताग्रवण बादलों में
उड़ता रहता है वे सपन दबत रहन हैं चक्कर मारत घूमन रहत
हैं, व उपासना करत हैं कुलम के मुनहने आरू धूम्र में नीरू में चलते
हुए-वे वे अब यहाँ नहीं हैं । व हजारों मान दूर जा चुके हैं जावा के
उस सुदूर द्वीप की ओर । वे इटालीनिया व विहृत भू-वान दबनामा
की धाराधना करन हैं जिनमें उठाने अगनी दूकाना की सत्र लिडकियाँ
सजा रखी हैं और जा इस समय निरुध्य हमार मिरपर में दरा रह हैं—
नीच उतरन के पहने जम के कोई भडकीले बन्दर हा जो सीनीशर दता

और साइनबायों पर उतरेंगे और घर की याद से बेचन इन उपनिवेशवासियों का याद दिलाएंगे कि हानण्ड केवल व्यापारियों का यूरोप नहीं है, समुद्र का भी है—वही समुद्र जो उन दूसरे द्वीपों को रह दिया है जहाँ मनुष्य उमस और आह्लादित होकर मृत्यु पाते हैं।

पर मैं तो अपनी बातों में बहल गया, इनकी बकालत हो करती लगा। क्षमा प्रार्थी हूँ। घान्त श्रीमन् और पेगा और साथ ही यह आकाशा भी कि इस शहर का आप पूरी तरह समझ लें और हर चीज के मूल तत्त्व का जान लें। क्योंकि यहाँ हम मृत्यु के द्वार पर पहुँच गए हैं। आपने हम और प्यान दिया कि यहाँ की घुमावदार नहर नरक के चक्रों में समान है—मध्यमवर्ग का नरक जो दुस्वप्ना से भरा है। जब कोई बाहर से आता है और उन चक्करों में घूमता है जीवन सघनतर होता जाता है और अधिक अवधारण। इसी कारण उसके पाप भी। मगर हम आतिथी चक्कर में पहुँच गए हैं, यह है ? अच्छा आप जानते हैं ? राक्षसों आपका वर्गीकरण बढिततर होता चला जा रहा है। तो आप समझते हैं कि मैं क्या कहता हूँ कि गरीबी चीजों का मूल केन्द्र यही है, यद्यपि हम इस मतांगण के केवल एक छोर पर ही हैं। एक संवेदनशील व्यक्ति के लिए इन विनम्रताओं का समझ लेना बढित नहीं। खर, आपका पढ़न यात्रा और व्यभिचार करने वाले इसके आगे तो जा नहीं सकते। यूरोप के चारा कोना से आकर व अन्तर्देशीय समुद्र की ओर मुह बिय उमके मलिन तट पर गिर जाना है। वे कुहासे के त्रिगुल मुनते हैं, कुहासे का मग्न म धुपली नाश का छायाचित्रों को टूटने की व्यर्थ चेष्टा करने हैं फिर उहरे के ऊपर से चीटन हुए बर्षों में भीगत आपा परचने जान ?। हृदयों तक ठंड से ठिठरते हुए वे भोक्मिया सिटी में पहुँच कर समाम आयाआ में गराब की माँग करने हैं। मैं वहीं उनकी प्रतीक्षा करता हूँ।

मल लक व निण विना श्रीमा—भरे स्वप्नवासियों वधु ! आपकी भव भासानी में रास्ता मिन गणगा। मैं इस घुन तर आपकी छो-

दूगा। मैं रान को कभी पुल पार नहीं करता मैंने गपय ली थी। मान लीजिए कि कोई पानी में कूद पड़। दो म में एक ही बात सम्भव है— या तो आप उसे बाहर निकालने के लिए खुद भी वही रास्ता अपनाएंगे या इस ठण्ड के भीमम में खतरे में खानी नहीं है, या आप उस वही छोड़ दोगे। छत्राग मारने का इच्छा का दमन करने से कभी-कभी एक विचित्र व्यथा उत्पन्न होती है। नमस्कार ! क्या ? उन खिड़कियों के पीछे वाली व महिलाएँ ? सपना श्रीमन् एक सस्ता सपना—“डीज की याना। वे मसाला की गंध से अपना शरीर मुबामित करती हैं। आप अन्दर जान हैं परदे खींच लिय जाते हैं और यात्रा आरम्भ हो जानी है। उन नग्न शरीरा में देवता उतर आते हैं द्वीप तरन-उतरान नगते हैं वायु में लहरान हुए ताड़-वृक्षा के अव्यवस्थित केना का मुकुट पहने खोमी हुई आत्माएँ। जाइए, देखिए !

अनुनायी निनायक होता क्या है ? तो मैंने आपका कुतूहल जगा दिया ? विश्वास कीजिए मेरा तनिक भी बुरा इरादा न था। अच्छा मैं अपना ध्यान ज्यादा साफ करके कह दता हूँ। एक तरह से कहूँ तो यह मेरे स्पर्श के कामो में से एक है। परपहले मुकुटस्थ व्य आपके सामने खन हूँ ताकि आप मेरा रामकहानी सहज समझ जाएँ।

कुछ मान हुए मैं परिस में बकालत करता था, और मध पूछिए तो काफी नामी बकीन था। हाँ, मैंने आपका अपना अमनी नाम ताबताया ही नहीं। ऐसे मामला में जो नक काम मान जाएँ, मरी विनोद भवि थी, जसे विषवा आर अनाथ। कहा जाता है जान क्या ऐसी भी विषवाएँ हाती हैं जो छल-कपट करती हैं और अनाथ ऐसे भा हैं जो बबर हाने हैं। पर मेरे लिए तो इनना ही काफी था कि मुझ प्रतिवादा पर अत्याचार की गंध-मात्र मिल जाए और मैं भदान में कूद पड़ता था। सा कूदना भी कसा भभावात की तरह ! मेरा हृदय खुला हुआ रहता था। आप

यहाँ तक वह सबत था कि नीति हर रात मरी हो गीत म साती थी। मुझ विस्वास है कि अदालत के सामने मेरे स्वर की विगुहता, मेरे सवेगा की उपयुक्तता, वक्तव्या की प्रेषणीयता यथा सवेदनशीलता, और आशोष के गद्यम की आप अवश्य सराहना करने। प्रकृति न मेरे शारीरिक गटन के सम्यग्ध म उदारता दिखायी है और मुझ दाक्षिण्य की मुद्रा सहज ही प्राप्त हो जाती है। इसके अलावा दो सच्ची भावनाएँ मुझ ऊपर उठाए रखती थी। एक तो थी वकील-समाज म प्राप्त प्रतिष्ठा का सन्तोष और दूसरी 'यायाधीन'वग के प्रति स्वामाविक अवहेलना। गायद अवहेलना का भाव दूतना स्वामाविक नहीं था। जब मैं जान गया हूँ कि उसके पीछे कई कारण थे। पर या बाहर से देखने म वह एक तरह का उमाद लगता था। इससे तो इन्कार नहीं किया जा सकता कि कम-संयम अभी कुछ समय के लिए हम 'यायाधीन' रखने ही पड़ेगे। क्या ? मैं यह नहीं समझ पाया था कि कोई भी व्यक्ति ऐसा विचित्र काम करने के लिए अपने को कस तयार कर लेता है। उस समय को मैं इसीलिए स्वीकार कर लेता था कि मुझे यह सामने दीस पटना था। यह कुछ उसी तरह था जने मैं टिड्डिया के दल का स्वीकार कर लेता हूँ। अंतर केवल इतना था कि उन जन्तुमा के आक्रमण से तो भरा एक पने का भी साम न होता था, जब कि मरी आजीविका खतना थी ऐसी क साथ सलाप करने जिनका मैं तिरस्कार करता था।

सद मैं सत के पक्ष म था और अपने अन्तमन की गान्ति के लिए मेरे लिए यही पयाप्त था। 'याय का ससंग, सत के पक्ष म हमारे का सतोष आत्म-शीरव का आनन्द—श्रीमन् य अनुभूतियाँ हम सच्चा बनाए रखने के लिए, या आगे बढ़ने के लिए बलवना प्रेरणा देनी हैं। दूसरी तरफ अगर आप लाग का इन भावनामा से वचन कर देते हैं तो आप उह आप म पागल बुद्धि म परिणत कर देते हैं। जान कितने अपराध किये जाते हैं कवल इसलिए कि उनके करने वाले मन्त्री पर हाना कर-दान नहीं कर पाते। मैं एक ठो व्यापारी को जानता था जिसकी पत्नी म

कोई कमी न थी। सब उसकी प्रशंसा करते थे, फिर भी उस व्यक्ति ने अपनी पत्नी को घोसा दिया। अपनी गलती के गह्वार में आप सब मानिए, वह ओछा भाव में पागल हो गया था, क्योंकि सदाचार की सनद पाने या अपने को देने के वह बाध्य नहीं रह गया था। उसकी पत्नी जितनी ही मद्गुणा का प्रदर्शन करती थी उतना ही उसका कोप बढ़ता जाता था। निदान गलती पर रहने हुए जीवन बिगाना उसके लिए असहनीय हो गया। सोच सकते हैं आप कि उसने क्या किया? अपनी पत्नी का धावा दना छाड़ दिया? जी नहीं, उरा भा नहीं। उसने उसकी हत्या कर ली। उसने मेरा सम्बंध इसी घटना में स्थापित हुआ था।

मेरी स्थिति अत्यधिक ईर्ष्या करने योग्य थी। अपराधिया के गुट में शामिल होने की कोई आसना तो मर लिए थी नहीं (और पत्नी की हत्या करने की तो उरा भी नहीं थी क्योंकि मैं धर्मावाहीन था), मैं तो उनका भी पक्ष लेना तैयार रहता था। केवल इस आधार पर कि वे उपाय हथारे हैं—उसी तरह जिस तरह और लोग उपाय बढाते हैं। जिस तरह मैं उनकी बकालत करता था मुझे समझ बहुत काफी सलीप मिलता था। मेरा व्यावसायिक जीवन सबका अनिष्ट था। यह बहुत की तो ऊपर नहीं है कि मैंने कभी कोई धूम नहीं ली, न ही मैंने मुझे छिप कोई काम किया। और—यह और भी दुःख है—मैं कभी किसी पत्रकार की सलाह करने पर नहीं उतरा कि वह मरणा म हो जाए और न ही किसी सरकारी अपसर की, जिसकी मिथना मरना उपयोगी हो सकती थी। यह मेरा सीमास्थ रहा कि दा-तीन बार 'लीजन ऑफ़ ऑनर' मुझे भेंट किये जान का प्रस्ताव किया गया, जिसमें मैं गम्भीर भाव-गौरव के साथ अस्वीकार कर सका। वास्तव में मेरा मज्जा पुम्बार मही था। और आन्तरिक बात यह है कि मैंने परावा स कभी कुछ नहीं किया, और न ही कभी इसका ज़िगरा पीटा। बाधु, धार यह न समझें कि मैं गेता बंधार रहा हूँ। इसके लिए मैं कोई शय नहीं लेता।

हमारे समान मलाख की जिस भावना को महत्वाकांक्षा समझ लिया जाता है उस पर मुझ हमारा हँसी आती रही है। मेरा लक्ष्य इससे ऊँचा था। आप देखें कि यह कबन भर सम्बन्ध मबितकुल ठीक बैठता है।

आप मेरे परिनाय की कल्पना ता कर ही सकते हैं। मैं अपने स्वभाव का पूरा रस लता था और हम सब जानते हैं कि आनन्द इसी में है। यद्यपि एक-दूसरे का साहचर्य बन के लिए हमें मुख को हम स्वायत्त कह-फर भत्थना करने का ढाग कर लिया। अर्थात् मैं अपने स्वभाव के कम-से-कम उम्र में ता रस से हा लेता, जिसकी प्रतिनिधा विधवा और अनाथ के लिए दत्तनी समीचीन होती थी, अग्रास करते-करते अन्त में यह मेरे समूचे जीवन पर छा गया। मिसाल के लिए अन्धा को सड़क पार करने में सहायता देना मुझ बहुत प्रिय था। सड़क की पटरी पर जहाँ तक मरा नजर जा सकती अगर किसी के हाथ की छोटी सबोच परती दाखता तो मैं भगदोर पहुँचता। कभी-कभी तो अपने में केवल एक क्षण पहले कहना से आगे बढ़े किसी दूसरे के हाथ से, अपने अतिरिक्त दूसरे के दया भाव से अन्ध को छुड़ा लेता और आती-जाती गाड़िया के रास्ते के बीच हाथ घामे धीरे धीरे, बिन्दु दुदता से पदल रास्ते से दूसरे पार की पटरी की गणन में उम पहुँचा देता, जहाँ पहुँचकर हम भावुकता के साथ एक-दूसरे से अलग होत। उसी तरह मुझ प्रिय भा राहगीरा का सड़क बनाना मुत्तगनी दियासलाई बन करना भारी सामान टोक की गाड़िया ठान में सहायता करना, बिगड़ी हुई माटर ठकाना 'छातवेगन आमी' की लकड़ी से अलवार लेना और धुड़िया फेरीवाली से पून मरीना—हानी कि मैं जानता था कि उमन य मापर नास के कश्तिस्तान से बुराण है। और मुझ पसंद था—यह जान कहा पृथ मुनिन ही है—मुझ दान देना पसंद था। मेरे एक अति धर्मिया मित्र ने स्वीकार किया था कि धरकीतरफ आन हूए भिगमग की दम कर आमी के मन में पहला भाव ता उठता है वह पणा का होना है।

पर मेरे साथ जा यात थी वह तो और भी मराव थी, मैं मस्त हो उठता था। परन्तु छाड़िए इस विषय का।

मरी निष्ठा को ही ले लीए। वह विन्यास थी। काद मेरी तरफ उँगला नहीं उठा सकता था। सब तो यह है कि निष्ठाचारमे मुझे बड़े-बड़े आनन्द मिले। अगर किसी दिन मुझसे मुझे अडरगाउण्ट गाड़ी या बस में किसी एक व्यक्ति के लिए अपनी जगह छोड़ सकने का सौभाग्य प्राप्त हो जाना जो स्पष्ट ही मुझसे योग्यतर पात्र हो या किसी बड़े महिला की गिरायी हुई वस्तु अपनी सुपरिचित मुश्किल के साथ उस बापस कर सकता, या केवल इतना ही कि किसी ऐसे व्यक्ति के लिए अपनी टकसों का त्याग कर सकना जो मुझसे ज्यादा जल्दी में हो, तो वह मेरे लिए मंगल दिवस होता था। मुझे यह भी स्वीकार करना पड़गा कि उन दिनों जब मावजनिक यातायात के साधनों का हड़ताल हानी थी तो मैं आह्लादिन हो उठता, क्योंकि बस-स्टॉप पर खड़े, घर पहुँचने में असमय बचारे अपने कुछ सह-नागरिकों को अपनी मोटर में भरकर ले जाने का मुझे अवसर मिलता। थिएटर हॉल में अपनी जगह छोड़ देता ताकि कोई दम्पति साथ बैठ सकें रलगाड़ी में किसी युवती का सूटकेस उठाकर ऊपर रखना, य सब काम धीरा से ज्यादा मैं इसलिए करता था कि मैं अवमरा की ताक में ज्यादा रहूँ या और उनसे प्राप्त मुल्य का उपयोग ज्यादा कर पाता था।

इसी कारण मैं उगार समझा जाता था—और या भी। मैं प्रकट और गुप्त रूप में बहुत-कुछ किया करता था। किसी वस्तु भ्रमवा किसी घनराशि से बिना लन समय बना होता तो दूर, मुझे निरन्तर मुल्य ही पहुँचते रहते थे। उन्हीं में विपाद का वह भाव भी था जो इन दान-कृत्या की निष्पत्ति और सम्भाव्य अकृत्यता के विचार से बन्धो-बन्धी मेरे मन में उठता था। दन में मुझे इतना हय होता था कि अगर ऐसा स्थिति आ जाए कि देने में असमयता-नी आ सही हो तो मुझे अत्यन्त लाभ होता था। हिमाचल-विनाय के पगार नियमा में मैं जितना अधिक

उठता जाता था कि उनका पासन में बाफा अगोमन तरावे में करता था । अपनी उदारता का स्वामी मैं स्वयं ही रहना चाहता था ।

य तो कुछ छोटी मोटी बातें रही पर इनसे आप इतना तो समझ ही जाएंगे कि आपन जीवन में और खास तौर से आपन पने में, मुझे अनवरत कितने सुख मिलते रहते थे । बचहरी के दाखान में किसी प्रतिवादी का पत्नी द्वारा रोका जाना जिस प्रतिवादी का पण आपन केवल 'यापपरता' या 'करणाव' लिया हो—मेरा मतलब है बिना फीस लिये—और उस महिला का पुसपुसाकर आपने कहना कि आपने उनका लिए जा लिया उसका मूल्य कभी नहीं चुकाया जा सकता है और आपका उत्तर देना कि वह तो कोई ऐसी बात नहीं थी इतना सा कोई भी करता । और फिर आगे आने वाले बुरे दिनों के लिए कुछ आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव करना और फिर—उदगारों का बेग रोकने के लिए ताकि उनकी भवारमुरी न रह सके—उस भभागिनी महिला का हाथ धूमकर बिना लेना—किन्नाम मानिए श्रीमान यह प्राप्ति, सामान्य महत्वाकांक्षी व्यक्ति की प्राप्ति से कहीं अधिक है और यह आपका उस सर्वोच्च गिम्बर पर पहुँचा देती है, जहाँ सदाचार अपना ही प्रतिमान है ।

अच्छा तो हम ऊँचाई की बात पर जरा ठहरें । अब आप समझ गए होंगे कि जब मैं न्याय ऊँच लेने की बात की थी तो मेरा मतलब क्या था । याम्ना में मैं उही सर्वोच्च गिम्बर की बात कर रहा था । केवल यही नाम स्याम है जहाँ मैं बाम्ना में गाँव ले सकता हूँ । हाँ ऊँचे परिवर्ण के अनाया और कहीं मुझ वन नहीं मिलना । रोजमर्रा की बातों में भी मुझ ऊँचाई का अनुभव करने की आस-पसना प्रतीत होती थी । अदरशाज्य गाँवों की अपणा मुझ वन स्याम पस-दखी टक्की की अपणा गली गाँवों अदर रहने की अपणा सुती छन । मैं उन हवाई जहाजों का गर-गगर चानक था जिनमें चाखक का गिर बाहर खुल रहा है । और मसुनी जहाज पर मैं हमेशा सबसे ऊँचे दर पर धन

बदमी करने वाला म हाता था। पहाड़ी स्थानों में घाटिया से भागकर मैं पठारा और दरों पर जा पहुँचना था, यानी कि मैं ऊँचे स्थानों का निवासी था। यदि नियति के आदेश से मुझे खराद पर और छता पर काम करने की दीक्षा देना पड़ना पड़ जाता, तो मैं छतों का ही चुनाव, और ऊँचाई पर सिर चकराने के अनुभव से परिचित होता। कायले की खाना, जहाजों के निचले हिस्सों, जहाँ सामान रहता है, जमीन के नीचे जाने की मदद के गुफाओं और गड्ढों से मुझे घना था। भूगर्भात्मिकों से तो मुझे विशेष घना हा गई थी। उनका दुस्साहस था कि हमारे समाचारपत्रों के मुखपृष्ठ उनकी करामातों से भर दिए जाते थे, और उन करामातों से मुझे मनली आती थी। दा हज़ार फुट नीचे उतरने की चेष्टा करना—यह खतरा उठाने हुए कि चट्टानों की कीप में सिर में फँस जाए (उसे वे मूल्य नहीं कहते हैं) मुझे ता लगता था कि विचार-प्रसन्न व्यक्ति का काम है। उसकी तरह मैं कोई अपराध प्रवृत्ति है।

दूसरी तरफ़ किसी १५०० फुट ऊँचे प्राकृतिक छत्ते पर जहाँ मैं मूल्य के प्रकाश में रहना समुद्र दीक्ष पड़ता था, मैं सबसे ज्यादा खुनकर साँस ले सकता था—विशेषकर अगर अवेला हाता मानवी चीटि-चीटिया से बहुत ऊपर। मैं खूब समझ सकता था कि धार्मिक प्रवचन, निश्चयात्मक उपदेश और अग्नि-परीक्षाएँ मुझे ऊँचाई पर ही सम्भव बनाती थी। मेरी राय में तहखानों या कारावास की कोठरियाँ में किसी न चिन्तन न किया जागा (व कोठरियाँ किसी भीनार में रही हैं, जहाँ मैं दूर-दूर तक दीक्ष पड़ता हो, तो और बान है), नहीं तो आदमी में फफूँदा लग जाता है, बस। और मैं उस व्यक्ति के मनोभाव भी समझ सकता था जिसने धार्मिक पथ में प्रवृत्ति करने के बाद केवल इसलिए उसे त्याग दिया कि उनकी कोठरी से प्राकृतिक दुःख का विस्तार दीक्षन के बजाय एक दीवार दीखती थी। इनका तो तब मानिए कि जहाँ तक मेरा प्रश्न था मुझमें फफूँदा नहा ला। हर पहर अपने अन्तर में और दूसरों के बीच मैं ऊँचाई को साँपकर आम्बर अग्नि प्रज्वलित करना

था और एव आह्लासमय जयघोष मेरी आर उठता चला आता था । इस प्रकार बम-जे-बम में जीवन का और अपनी थोप्टता का आनन्द उठा लेता था ।

आप्यवग भरा पगा ऊँचाइयाँ की मेरी प्रवृत्ति को तृप्ति प्रदान करता था । पड़ोसी के प्रति बटुता घुन जाती थी और मैं उस पर हमला एहसान किया करता था—हालाँकि मेरे ऊपर उसका कुछ दण्ड नहीं था । यह भाव मुझ निर्णायक से अष्टतर घना देता था और मैं स्वयं उसके विषय में निणय देता था, प्रतिवादी के अतिरिक्त जिस में विवश करता था कि मेरा आभार मान । मेरे मित्र सोचिए जरा मुझ जीवन में दण्ड विमुक्ति प्राप्त थी । किसी भी निणय से मेरा कोई निमित्त नहीं था , मैं 'यायालय में उपस्थित नहीं रहूँगा था यत्कि नपथ्य में रहता था—उन देवताओं की तरह जा नाटक का भूमिका की परिणति करके उसे अथ प्रदान करने के लिए किसी यंत्र द्वारा ऊपर से मंच पर उतारे जाते हैं । आगिर ऊँचाई पर रहकर ही तो अधिकतम व्यक्तित्व को दान देना और उनका अभिवादन पाना सम्भव है ।

मेरे विही भने अपराधिया न इसी भावना के बगीभूत होकर ही तो हत्या की थी । बाद में अपनी उस असह्य स्थिति में जहाँ थ तब तक पहुँच चुके थे, समाचारपत्रों को पढ़कर नि सदेह उन्हें एक प्रकार का येदनामय परितोष मिता होगा । बहुतों की तरह उन्हें भी अज्ञात रहना असह्य हो गया था और उनकी इस बेचनी में भी उन्हें दुर्भाग्य की इस सीमा तक पहुँचाया था । बदनामी के लिए अपन द्वार रखर की हत्या करना ही काफी है । बदनिस्मृती में यह न्यायि साधारणतः क्षण भंगुर होती है । उन बितने ही द्वार रखर हैं जो हत्या के पात्र हाते हैं और इन परिणति का प्राप्त भी करते हैं । अपराध का अलगावों में गीर्षा तीन हाने का एकाधिकार मन्त्र में प्राप्त है किन्तु अपराधी तो क्षणिक प्रवृत्ति का मरता है एक अपराधी का स्याद दूसरा जता रहना है । मरण में वहे तो एसी क्षणिक सपना बहुत मटगी पत्नी है । पर इन

अभाग महत्वाकांक्षियों के पक्ष में खड़ा होना वास्तव में स्याति प्राप्त करने का मुगम भाग मिद्ध होना है। सा भी उहा स्यानां म, उसी समय और अधिक मिनव्ययिता के माय । परिणामस्वरूप इसमें मुझे और भी अधिक पुण्य प्रयाग वग्न की प्ररणा मिलती थी कि उह (मेरे मुवक्किला का) कम-से-कम मृत्यु चुकाना पड़े । किसी हद तक दात-प के मेरी जगह चुरा ही रह ये । जा आकाग जा याग्यना और जो भावुकता में उन पर निछावर करना था प्रतिदान में वह आभाग की उस भावना का उड्डन देने थे, जा मर मन में उनके लिए उठ सकती था । 'यायाधीन' दण्ड दन थे, प्रतिवादी प्रायश्चित्त करत थे और मैं वस्तव्य के भावों में मक्का विमुक्त, निणय तथा दण्ड दाना में समानत परिरक्षित में था । अन्य स्याति स्नान, निवध महिमा-मण्डन ।

और सब बनाइय बधु क्या वह स्वग नहीं था ? जीवन और मेरे बीच कोई मध्यवर्ती नहीं । ऐसा था मेरा जीवन । मुझ कभी यह नहीं सोचना पना कि जिया कम जाना है । उसके बारे में मैं जम लेत ही सब-कुछ जान गया था । बुद्ध लागी की समस्या होनी है कि कम मनुष्या ग अपनी रभा करें, या कम-से-कम कम उनमें समझौता कर लें । पर मेरे लिए तो समझौता पहन ही हो चुका था । मेरी मगति सदा ठीक बट्ना थी । उचित होना तो पुन मिल जाता आवश्यकता पडनी ता मीन रहना । आचार-व्यवहार में गम्भीरता और महज स्वाभाविकता दाना के लिए समान रूप में समथ था । इसीलिए मेरी लोकप्रियता बढत थी और समाज में मेरी मफनताएँ अनगिनत थी । मेरी साहृति स्वीकार थी, बिना थके नाच सकन की क्षमता और बिनयपूर्ण विद्वत्ता दाना ही मैंने अपने आपमें प्रर्णित की थी और मैं नारी और न्याय दानो में एक साथ प्रेम करने का—यह करने नहीं है—मामध्य प्राप्त कर ता थी । मैं ललिततावादा और मेन-कूद दाना में रम लेता था । पर बहुत हुआ भवमें और न कङ्गा, नहाता कहीं आप यह नक न करने नगे कि मैं डींग हाँक रहा हूँ । मेरा ता नना अनुराध है कि

आप जरा^१ करना बीजिण एव एसे व्यक्ति को, जो अपनी शक्ति की पराकाष्ठा पर है, जिसका स्वास्थ्य उत्तम है, जिसको प्रतिभाएँ प्रदान करने में नियति ने उदारता दियायी है जो शारीरिक तथा मानसिक व्यापारों में कुशल है जो न निधन है न धनवान, जिसे चन की नींद आती है और जो मूलतः आत्म-तुष्ट है पर जो इस भाव को अपनी सहज मिलासारिता के अतिरिक्त और किसी तरह नहीं दिखाता। आप आसानी से समझ जाएंगे कि मैं कैसे दत्ताया के बिना सफल जीवन की बात कर सकता हूँ।

हाँ मुझमें ज्यादा सहज-स्वाभाविक कुछ ही जीव और रहे होंगे। मैंने जीवन के साथ पूर्ण एकरूपता प्राप्त कर ली थी, ऊपर से नीचे तक मैं उससे मेल खाता था उससे निहित किसी व्यंग्य गौरव अथवा दासत्व का परित्याग किए बिना। विरोध रूप से काया प्रकृति या, सदाप में बहूँ तो भौतिक तत्व जो बहुतरा को अवेक्षण या प्रम के क्षणों में विमुक्त या हताशाहित करते हैं मुझे जिना निन्ही बंधनों में बाँधे निरन्तर मुक्त पहुँचाने रहे। मैं तो जन्मे शरीर भोगने के लिए बना था। उसीसे प्राप्त वह सतुल्य और वह अनायास उत्पन्न मुझमें था जिसे लाग अनुभव करते थे यहाँ तक कि कभी-कभी मुझमें यह भी कहते थे कि उससे उह जीवन में सहायता मिली है। उसकी वजह से मेरी सोहबत की बहुत माँग रहती थी। अक्सर लोगो को या लगता था कि वे मुझमें पहल बही मिल चुके हैं। जीवन उसका जन्तु और उगवें उपहार मेरे लिए प्रस्तुत थे और मैं शांतिमान कृपालुता से श्रद्धाजति के इन चिह्नों को अंगीकार करता था। साथ साथ ही यह है कि भूवि में एक सहज और सम्पूर्ण भाव था, मैं अपने का कुछ-कुछ अतिमानव समझने लगा था।

मैं एक प्रतिष्ठित पर गरीब परिवार में पैदा हुआ था। मेरे पिता एक सामान्य बम्बारी थे पर मैं गविन्दु म्हावार करता हूँ कि किसी किसी दिन मुझ लगता कि मैं जिगा राजा का बेटा हूँ—इस वजह से नहीं कि मुझे पूरा विश्वास था कि मैं सबसे ज्यादा बुद्धिमान हूँ। इस

विश्वास में कोई लाम भी नहीं न जाने कितने मूख ऐसा ही समझते हैं। बात यह थी कि यद्यपि ऐसा कहने में मुझे सचाच होता है— नियति की कृपाया की प्रचुरता से मैं अपने का विशिष्ट व्यक्ति समझने लगा था, माना सबसे से एक दीघकालीन और अनवरत सपना के लिए व्यक्तिगत रूप से मुझे ही चुना गया हो। ऐसा समझना भी मेरी विनयशीलता का ही परिणाम था। उस सपना का श्रेय अपनी योग्यता को देना मुझे स्वीकार नहीं था और न ही मैं यह विश्वास कर पाता था कि एक ही व्यक्ति में इतने विविध और उत्कृष्ट सद्गुणों का होना केवल संयोग हो सकता है। इसीलिए अपने खुहाल जीवन में मुझे लगता था कि मेरा सुख किसी उच्चतर आदेश द्वारा अधिकृत किया गया है। जब आपको यह विदित होगा कि मेरा किसी धर्म में विश्वास नहीं था, तब आप और भी अच्छी तरह अनुमान लगा सकेंगे कि मेरी यह धारणा कितनी विलक्षण थी। खर वह साधारण रही हो या नहीं कुछ समय के लिए तो राजमर्मा की जिदगी में मुझे ऊपर उठाने के काम आई और मैं कुछ वर्षों वास्तव में उठाने भरता रहा। और मच कहें तो आज भी उनके लिए मेरा जी तड़प उठता है। मैं उठाने भरता रहा। उम्र गाम तक, जब—पर नहीं, वह बात ही और है, उसे भुला देना चाहिए। और शायद मैं कुछ बुरा बुरा करवाने कर रहा हूँ। यह तो सच है कि मैं हर तरह से भले में था, पर साथ ही किसी भी चीज में सन्तुष्ट न था। एक सुख की प्राप्ति दूसरे की आकांक्षा मेरे मन में जगानी थी। एक आनन्दोत्सव में मैं धूमना रहता था। कभी-कभी मैं रातें नाचते बिनाता, लोका और जीवन के बार में अधिकाधिक पागल होता हुआ। कभी कभी काफी रात बीत जाते जब नाच, एक हल्का-सहर मेरा निर्वाण उत्साह और हर एक का प्रचण्ड अभय मुझे एक घान्त और परामूर्त हर्षोमाद से भर देने थे तब—गाति की चरम सीमा पर पहुँचकर मैं मर के लिए, मुझे लगता कि आखिर इस ससार और उसके जन्तुओं का रहस्य

मरी समझ में आ ही गया। पर दूसरे ही दिन मेरी ध्वनि गायब हो
 जाता और उसके साथ ही रहस्य का जान भी। और मैं फिर नय सिरे
 से निरल पड़ता था। इसी तरह मैं दोड़ लगाता रहा, सदा उपहारों के
 भार में लदा, सबका अतण, यह न जानने हुए कि कहीं एक जाना
 चाहिए उस दिन तक—या कहना चाहिए—उम नाम तक, जब सगात
 घम गया और प्रकाश बुझ गया। उस घटवती महफिज में जहाँ मैं
 खूना खुन रह चुका था—पर मुझ अपने मित्र उस आत्मिजीव, को
 बुनाने की इजाजत द। इनका गुनिया अदा करने के लिए अपना सिर
 हिला दीजिए और एक प्याला गरव पीने में मर सार दाजिए मुझ
 आपकी सहानुभूति की आवश्यकता है।

देवता हैं कि नस घापणा में आप स्तम्भित हैं। क्या आपकी कभी
 अचानक सहानुभूति आश्रय या मित्रता की आवश्यकता नहीं पड़ी है ?
 ऊपर पनी हाथी। मन मात्र सहानुभूति में सन्तुष्ट हो बना सीर लिया
 है। यह श्याम आमाजी ने मिला जाती है और इससे अलावा उमम
 कोई धपन भी नहीं। यह कहना कि मेरी प्रायना है कि आप मेरी
 सहानुभूति पर विनास कर किसी भी अनय बात का प्राक्धन
 होता है, इसका कि अर हम दूसरे विषय पर आएँ। यह तो सभाध्यक्ष
 की ही भावना है। किसी महाविपत्ति के बाद यह कहना सत्ता
 पड़ता है। मित्रता इतना सरन रहा। उमे पाता मुक्ति है और पान
 में काफी समय लगता है पर जय मित्र जानी है तो उसमें मुक्ति पान
 का भी कोई उपाय नहीं। उम नृगतना ही पाना है। पल भर के लिए
 भी यह न समझ बैठोग्या कि आपने मित्र हर नाम आपकी टलीपात
 करेंगे, जो उन्हें करना चाहिए यन् पता करने के लिए कि कभी आपन
 आत्महत्या करने का निश्चय तो नया कर डालता है या फिर इतना ही
 पूछने के लिए कि आपकी सगन्माय की उम्मीद तो नहीं या आपका
 कही बाहर बनन का आता नहीं हो रहा है ? नहीं, निश्चित रहें मैं
 पान करेंगे तो उम नाम को जब आप अवनम होंगे जय जिन्गा

हमीन होगी। और रहा आत्महत्या की, सा व शायद आपका उस तरफ धक्कलने में ही ज्यादा सहायक होंगे, इस आधार पर कि आपका अपन प्रति दायित्व क्या है? बंधु, मित्रा द्वारा ऊँचे सिंहासन पर बिठाए जान में भगवान् रमा करें। और जिनका वनव्य ही है कि हम प्यार करें, मराने मतलब है कुटुम्बिया और सम्बन्धिया से (वाह! क्या गब्द है!)—उनकी बात ही और है। उन्हें उपयुक्त गब्द मिल ही जाते हैं, और निगाना अच्छूक बठना है, व तो ऐसे फोन करते हैं मानो चाँदमारी कर रहे हों, और निगाना लगाना वे खूब जानते हैं।

क्या? कौनसी शाम? उस पर भी आऊँगा, जरा धीरज रगविए। एक तरह से तो चिपरा ही हुआ हूँ अपने विषय में, मित्रा और सम्बन्धिया की य सत्र बानें करके। बात यह है कि मैं एक ऐसे आदमी के बारे में सुना है जिसका मित्र कद कर लिया गया था और वह अपन कमरे के फर्श पर इसलिए साने लगा था कि उस आराम का भाग न करे जो उसका मित्र में छीन लिया गया था। हमारे लिए बंधु कौन फर्श पर साएगा? क्या मैं ही ऐसा कर सकता हूँ? मैं जरूर चाहूँगा कि कर सबू और कर भी सकूँगा। हाँ एक दिन हम सब ऐसा कर सकेंगे, और वही हमारा मोक्ष होगा। पर यह आमान नहा है, क्योंकि मित्रता अभयमन्का होती ही है या कम-से-कम क्या तो होती ही है। अपनी इच्छा पूरा करने में वह असमर्थ है। गायद उसकी इच्छा काफी तीव्र न होगी हा। गायन जीवन से हमारा पर्याप्त लगाव न हो। आपका ध्यान कभी दम पर गया है कि केवल मरु हमारी भावनाएँ जगाने में समर्थ होगी है? हम अपने उन मित्रा का कितना प्यार करते हैं जो अभी अभी हमसे बिछुड़े हैं। अपन उन गुदमा का कितना आदर करते हैं जिनकी बाणी बर हा चुका है जिनके मुह मिट्टी में ढाँप दिये गए हैं। तब अद्धा के भाव सहज व्यक्त हो उठते हैं—उसी अद्धा के जिसकी आत्मा गायद व जीवन भर हमसे करत रहे। पर जानते हैं आप, हम मूनकों के प्रति अधिक उदार और

‘मायशील क्या होत है ?’ कारण सरल है। बंधन का उनके साथ कोई प्रश्न नहीं। वह हम मुक्त छोड़ दते हैं और हम अपनी सुविधा के अनुसार अपनी श्रद्धा का प्रमाणपत्र देन का समय किसी कावटेल-पार्टी और प्रमिता के साथ अभिसार के बीच यानी अपने पालतू वक्त में नियत कर सकते हैं। अगर वे हमें बाध्य करें भी तो बेचम याद रखने के लिए ही ना करेंगे और हमारी स्मृति काफी मजबूत होती है। हाँ, हम अपने मित्रों में हाल के मर हुआ से ही लगाव रखते हैं, दुखदाई मनवा ने ही, स्वयं अपनी भावनाओं से, अन्ततः अपने आप में ही।

उत्साहपूर्ण मेरे एक मित्र थे, जिनसे मैं बहुत बचता था। वह मुझे उगा देने थे और इसके अनाना वह कुछ उपदेशक भी थे। पर जब वह अपनी मृत्यु गम्या पर पड़े तो मैं जा पहुँचा। मैंने एक दिन का भी नागा नहीं किया। वह मुझसे सन्तुष्ट होकर मर गये दोनों हाथ अपने हाथों में लिए हुए। और एक औरत थी जो मेरे पीछे पड़ी थी—बिल्कुल बेकार। उसने बुद्धिमानी का कि सुनावस्था में ही मर गई। बितनी जगह निबल आई घबानक मेरे दिल में उसके लिए। और जब साथ में आत्महत्या की हो। उफ ईश्वर, तब कसी सुगम हलचल मचती है। आपने टेलीफोन की घण्टी बजाती है आपका हृदय उमड़ने लगता है घब भरे और जान-बूझकर छोटे बिये वाक्यांश आपकी मयत पीछा, और हाँ, और अपने ऊपर पाछा-ना दावारोपण भी।

मनुष्य बना ही ऐसा है, बहुत। उसके दो चेहरे हैं। आत्म प्रेम के बिना यह प्रेम नहीं बरसता। अपने पड़ोसियों पर गौर कीजिए। मान लीजिए कि जिस मयत में वे रहते हैं उसमें कोई मौन हो जाती है। वे अपनी नित्यप्रति की जिन्दगी में डूबे हुए हैं कि मान लीजिए द्वारा पाल की मौन हो जाती है। तुरन्त वे चीर-न हो जाते हैं, हाथ-पर हिनाने डगाने लगते हैं। छोटी-छोटी बातों का पता लगाने हैं, महानुभूति प्रकट करते हैं। कोई मराने की निशान का आरम्भ हो जाता है। जानने नहीं आप कि उन्हें दुःख घटनाओं की उन्मूलन होती है। वह

उच्च-भचरण की उनकी छोटी-मोटा चप्पटा है मुख उगाने की बीज ।
 पर क्या मैं चौकीदार की बातें बोल नया मे की ? मेरा भी था एक
 उदमूरन, भूमिमान विद्वप सुदना और दुमावना ने भरा रागस, ऐसा
 कि जो फामिस्किन पादरी का भी हाथ न धरन दना । मैं तो उमम
 योना नय बंद कर दिया था पर अपन अस्मिन् मात्र मे वह मेर
 सन् सन्तोष को विचसिन करना रहना । जब वह मरा तो मैं उसके
 अन्तिम मस्कार में शामिल हुआ । आप बना मकने हैं क्या ?

खर, बहरहाल मस्कार के पहले के दा दिन बहुत राबक रह ।
 चौकीदार की पत्नी श्रीमती थी, छोटे-से कमरे में पड़ी थी और पास ही
 पाया पर ताबूत रखा था । हर एर को अपन खन लेन मुड़ ही जाना
 पड़ता था । आप दरवाजा खानन और कहन 'नमस्कार, श्रीमतीजी,
 निबगन स्नेहपात्र की प्रणाम व कुत्र गन् सुनन जो वह उनके शरीर की
 तरफ इगारा करत हुए कहती थी अपने खन उठान और खन आने ।
 इस बात में कोई बिगप मनोरजन नहीं था पर उस भवन का प्रत्येक
 निवासी उनके कमरे में जा बावॉनिक की बूम भरा रहता था गुड़-
 रना उरर था । किरायदार अपने नौकरा का नहा बेजत थे, स्वय ही जान
 थे, ताकि इस अप्रत्याशित आकषण का रस न मक । नौकर भी चाते
 अवयध, पर लुक-छिपकर । अन्त्यष्टि त्रिशाके त्रिन यह पना चना कि
 ताबून दरवाजे में ज्यादा चौड़ा है । दइया ने दइया ।' पत्नी ने पला
 पर मे ही कहा अचम्भ व माय जिसम हथ और व्यथा दोना गामिन
 थ । 'कितन बड़े थे वह । 'आप चिन्ता न कर श्रीमतीजी अडरटेकर
 न जवाब दिया, 'हम नातून को लडा करके एक किनार से निकान
 मेंगे । लडा करके ही उसे निवाना गया और फिर लिग दिया गया ।
 और केवल मैं (एक नाटभंगाला व भूतपूव द्वारपान के साथ जा पना
 चना कि राज गाम स्वगवामी के माय बठकर परना पिया करता
 था) बद्रिस्तान तक गया, और एक एम नातून पर फून चडाए जिसकी
 बिगाला न मुक्त चबिन कर दिया था । फिर मैं चौकीदार की पत्नी

ने भट करन गया, उसका आभार प्राप्त करने के लिए और समने किसी महान दुःमान्त नाटक की नायिका की भाँति उस व्यक्त किया। अब बताइए इस सबके पीछे कारण क्या था ? कुछ नहीं, केवल भूख जगाने वाली चाह।

इसी तरह मैं बार एसोसियशन के एक सहयोगी को दफनाया था। वह एक बचक था, उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता था, हालाँकि मैं हमेशा उसमें हाथ मिला लेता था। खर, जहाँ मैं काम करता था, वहाँ हर एक ने हाथ मिलाता ही था बहुतो से ता दो दो बार। मरा कुछ लगता थोड़ा था और इस तरह की शिष्टतापूर्ण सादगी मुझे वह लोकप्रियता दिला देती थी, जो मेरे सन्तोष के लिए बहुत जरूरी थी। बार-एसोसियशन के अध्यक्ष न हमारे इस बलक के अत्यन्त सत्कार में कुछ खाता किया नहीं। पर मैं किया, और सो भी याथा पर जाने के ठीक पहले जिस बात का पर्याप्त प्रचार भी हुआ। मैं जानता था कि मेरी उपस्थिति लागा का ध्यान भावपित करगी और उसकी संरचना भी की जाएगी। इसलिए उस दिन गिरती हुई बफ भी मुझे पीछे नहीं हटा सको।

क्या ? ता ही जी ही मैं अभी पहुँचता हूँ उस पर, आप चिन्तित न हा। मैं विषय छाड़ा ही क्या है ? पर बहुत मयह अब कर दें कि मेरे चौकीदार की पत्नी, जिनका पास की प्रतिमा और तातूत के लिए चाँदी और बज्र के हैंडल बनाने में इतना था इसलिए किया था कि अपने उत्सारा का पूरा रंग रंग का उम भीना मिल। तब ही महाने या एक बाने क यहाँ जिनकी आवाज उठी सुराली थी बठ गई। वह उम पीटता था, दन्ताक चीन्ने गुनामी पडती थी और फिर तुरन्त हा वह निडकी गानकर अपनी विषय पमन्द के गीत की तरफ गगाता था— 'तारी, तुम कितनी सुंदर हा।' 'ही-ही ठीक है मगर तो भी पडामी कहा करते। तो भी क्या ? मैं आपसे ही पूछता हूँ। ठीक है जा कुछ रात पना था वह गायक के मित्राफ था, और चौकीदार की पत्नी के भी पर कोई

बात लगी नहीं थी जा यह सिद्ध कर कि वह एक-दूसरे में प्रेम नहीं करते थे। श्री काट लगी बात भी नहीं थी जा यही सिद्ध कर कि वह प्रीति अपने-पनि में प्रेम नहीं करती थी। श्री जब वह बाबा अपनी दाढ़ी और गन को धकाकर भाग खड़ा हुआ तो उस पति-परायण पत्नी ने फिर मझने स्वादामी पति का स्तुतिगान शुरू कर दिया। और फिर मैं लगी का भी जानता है किन पत्र में सब कुछ दाख पढ़ता है वह जा विशेष मुख्य और पक्के नहीं जोत। मैं एक आदमी का जानता था किमन एक पगला और पर अपनी जिन्गी के बीच मान निद्राकर कर लि, अपना सब कुछ अपनी जानिरे खा दिया—अन मित्र अपना धना यहाँ तक कि अपने जीवन का मान मरणा भी—और कि एक गाम उस यह पता चला कि उसन उस औरन में कभी प्रेम नहीं किया था। वह अधिकांश गाँव की तरफ सिन्दगी में केवल उठा हुआ था। इमनिण उसन गानी करके अपने जिन्गी खटिना और नाटकीयता में भरे जीवन का निमाण कर लिया था। कुछ ता ज्ञान भी चाहिए। अधिकांश मानवी बाधनाओं का कारण इसी में निहित है। कुछ ता होना ही चाहिए, चाह वह प्रेम रूप जानता ही क्या न था युद्ध या मृत्यु ही क्यों न था। ता फिर जब ही अच्युति-सम्पत्तों की।

पर मेरे पास कम-से-कम यह कहना नहीं था। मुझ जब नहीं मना रही थी, क्योंकि मैं तो उल्टी दृष्टि नष्ट कर शिव पर मवार था। जिस गाम की मैं चला कर गया था उस गाम का ता मैं बिल्कुल मुक्तता है कि और शिनों में भी कम उठा हुआ था। ता भी जान या है, बापु। पनम्ड का मुनाबना गाम थी शहर के बाजारगण में गरमी था, पर मन पर नमी छा चुकी थी। गन हा चली थी आकाश में पश्चिम की धार तब तक उजाला था पर अधिकांश ज्ञान लगी था सब की वसिती दिमिमा रही थी। मैं बाएँ किनार शीश्या में का नरफ धागा पर धाग-धोरे चलता हुआ जा रहा था। सबन्ड ईड किनारें बचन वाता की छाती ठूकाना के प्रकाश के बीच नहीं चल रहा था। घाटा पर बहुत कम

लोग थे। पेरिस का नगर रात के गाने पर बठ चुका था। मैं धूल मरी पीली पतियावा, जा ग्रीष्म की याद दिलानी थी, रौंदता हुआ चल रहा था। धीरे धीरे घावा तारों में भरता जा रहा था, सड़क की एक बत्ती छोड़ दूसरी की तरफ जाते हुए वे एक क्षण को दीख जाते थे। मैं शांति की वापसी, सध्या की मृदुता और पेरिस के सूनेपन का रस ले रहा था। मैं सुखी था। दिन अच्छा गुजरा था। एक अच्छा, सजा म कमी, जिसकी मैंने आशा की थी, मुक्किस का पूरे निल स हाथ मिलाना, उदारता के कुछ काम और दोपहर को मित्रमण्डी में शामक-बग की बठार-हृदयता और नेताओं के पाखण्ड पर प्रत्युत्पन्नमनित्व का प्रदर्शन।

मैं पौडजाट से तब पहुँच गया था। उस समय वहाँ सुनसान था। मैं नदी का देखने के इरादे में गया था, रात हो जाने के कारण उसका पता लगाना कठिन था। वन-माला की प्रतिमा की तरफ मुह बिय खड़ा मैं उस द्वीप पर छा रहा था। मुझ अपने अंतर से एक त्रिस्ट गति की अनुभूति उठनी हुई जान पड़ी, और—नहीं जानता कैसे कहूँ—और सम्पूर्णता की। उसने मेरे हृदय को उल्लास से भर दिया। मैं तनकर खड़ा हो गया, और सिगरेट जलाने ही जा रहा था—सन्तोष की सिगरेट—जब उसी समय मेरे पीछे एक हेंमी फूट पड़ी। चॉकनर मैंने घूमकर देखा, वहाँ कोई नहीं था। मैं रेलिंग तक गया, कोई ताम्र या बजरा भी नहीं। मैं फिर द्वीप की तरफ मुड़ा और फिर मुझे वही हेंमी अपने पीछे गुतायी पड़ी—जरा दूर जसे पारा के प्रवाह में नीच की ओर जा रहा हो। मैं वहीं स्थिर खड़ा रहा। हसी क्षीण होती जा रही थी पर मैं अब भी उसे अपने पाछे साफ़ गुन सकता था। जाने वहाँ मे आ रही थी अगर पानी से नहीं तो! साथ ही मुझ अपने निल की धक्कन बढ़ती हुई लगी। आप मुझ गलन न समझें। उस हेंमी में कोई रहस्य नहीं था—अच्छी खुनी हुई वह सजते हैं नि मित्रता की हमी थी जिसने हर चीज को उचित स्थान पर बिठा लिया था। और वैसे भी कुछ दर बाद मुझ

फिर कुछ भी मुनायी न दिया। मैं घाटों पर लौट आया, रूंदों की राह पकड़ा, सिराटे खराद जिनकी मुझे आवश्यकता नहीं थी। मेरा सिर चक्कर रहा था और मेरी मांस तेज चल रही थी। उस गाम का मैंने एक मित्र को फोन किया, वह घर पर नहीं था। बाहर जान के बार में मेरे मन में दुविधा हा रही थी, जब कि सहसा अपना बिडकी के नीचे मुझे हँसी मुनायी दी। मैं बिडकी खाल दी। नीचे सड़क की पटरी पर कुछ नौवान गार मचात हुए एक-दूसरे से विदा ले रहे थे। सिडकी बन्द करत हुए मैं मोचा, जान दा। आखिर मेरे पास एक मुकद्मा तैयार करने को था हा। एक गिनाम पानी पीने में गुसलखान में गया। पीने में मेरा चेहरा मुन्वरा रहा था, पर मुझ लगा कि मरी मुत्तराहट दोहरी है।

क्या ? माफ़ कीजिए मैं कुछ और सोचने लगा था। मैं गायद आपसे बन मित्रा। जा हाँ, बल। नहीं-नहीं, मैं ठहर नहीं सकता। उसके अलावा वह जा भूरा भालू वहाँ बटा है मरी राय लेने के लिए मुझे बुला रहा है। अज्जा आदमी है बगल पुलिस बचन दुगाइवना, नीचना स जे मता रही है। आपके ब्याल में उसकी आइति हयारो-जसी है ? बिबास रविए, जम्मे कम उनकी आइति से ही मेल खात हैं। चारी भी वह जमी प्रकार करता है। और आपको जानकर आश्चर्य होगा यह आदिम-जीव बना-कृतिया के व्यापार का विगेषन है। होंमड दंग में हर आदमी बना-कृतिया और टमूतिप के फूलो का विगेषन हाता है। यह जो है, यन् जा बडा विनयगील लग्ना है, यह सबसे प्रसिद्ध चित्र शोध का कता है। कौनसा चित्र ? किसी दिन शायद आपका बत्राऊँ। पर मेरी जानकारी पर आप आश्चर्य न करें। यद्यपि मैं एक अनुतापी निगायक हूँ यहाँ पर मेरा एक घना है। इन सज्जना का मैं कानूना सलाहकार हूँ। मैंन एम देश के कानून का अध्ययन किया और इस माट्ने में मुक्किना की जमात इकट्ठा करली। यहाँ कानूनी डिग्री की आवश्यकता नहीं पडती। आस्तान नहीं था पर मैं दूसरों में बिस्वास

जगाता हूँ, हूँ न ? मरो हुसी बन्धिया, खुली हुई है मरा हाथ मिलाना गानदार है, और य गुण तुम्हारे के पत्त है । इसके अन्तर्गत मैंने कुछ जटिल मुकद्दमा को हल किया था, मुझे मैं अपने हित के लिए और बाद में ठीक समझकर । यदि चोर और दलाल हर बार सजा पा जायें तो सब मर्यादापूर्ण व्यक्ति यह सोचने लगेंगे कि वे स्वयं निरन्तर निर्दोष रहें हैं और मेरी राय में ही मैं आ रहा हूँ भाई । उम परिणति का तो किसी भी मृत्यु पर परिहार करना ही चाहिए । नहीं तो सब कुछ एक उपहास बन जाएगा ।

मैं वास्तव में बहुत अनुग्रहीत हूँ, मेरे व्यापार स्वदेशवासी बहुत आपसी जिज्ञासा के लिए । पर मरा गाथा में कुछ भी अनाधार नहीं है । चूँकि आपने दिनचर्या लिखा है मैंने भी आपको बताता हूँ कि कुछ दिन उस हँसी के बाद मैंने सोचा कि फिर मैं उम भूल गया । कभी-कभी मुझे अपने अन्तर में वह सुनायी पड़ जाती थी । पर ज्यादातर बिना कोई प्रयत्न किए मैं और चीन्हा के बारे में सोचता रहता था ।

तो भी यह मुझे बताना पड़ा कि गरिब के घाटों पर टहलना मैं छोड़ दिया । जब कभी किसी मोटर या बस में मैं घाटा के किनारे से गुजरता था तो एक प्रकार का मौन मेरे ऊपर आ जाता था । मैं शायद इतना डरता था । पर मैं मन पर कर जाता था और होता कुछ नहीं था । राखी साँस फिर देने लगती थी । उसी समय स्वास्थ्य की भाँस तो भी मुझे कुछ दिखा रही । कोई निश्चय गेग नहीं । शायद उन्नीसों अपना उन्नास फिर से प्राप्त करने में एक प्रकार की कठिनाई । मैं डॉक्टरों के पास गया उन्होंने मुझे स्पर्शदायक दवाइयाँ दीं । मेरे मन में अन्तर में मैं कभी स्पर्श और कभी अवगान के भाव आते-जाते रहता । मेरे लिए जीवन कुछ कम मँसल हो गया । जब गरीब उन्नास हो तो हँसना ही बचता रहता है । मुझे लगता था मैं उम चीन्हा का मुन्ना

दे रहा हूँ जो मैंने कभी सीखा नहीं था, पर जानना बहुत अच्छी तरह था—यानी जीना। हा, मैं माचता हूँ मक्खन-तनी गुन्ना आ।

पर आज गाम भी मैं पूरी तरह ने स्वस्थ नहीं हूँ। आज तो मुझे बान बदन में भी कठिनाई हो रही है। मुझे लगता है कि मैं ठीक से बान नहीं पा रहा हूँ और अपने गन्धों के बार में मुझे बाधित आत्मविश्वास नहीं है। गाम में मौसम का अंतर है। सास सेन में मुश्किल हो रही है। बातावरण में इतना भारीपन है कि सोने का दबा रहा है। आपका बाहर चलकर गहरा में घूमने में कोई एतराज नान हाँगा बंधु? गुन्ना!

आज गाम में नहीं किननी मुन्दर का रही है। मुझे स्थिर, प्रवाह-हीन जल की माँ में प्रिय है। नहर में डूबी हुई सूखा पनिया की गन्ध प्रिय है, और फूलों में लद बजरा पर में उठनी हुई अन्ध-गन्ध प्रिय है। नहीं-नहीं, मैं आपका विश्वासिताना हूँ कि इस गन्ध में कुछ भी दूषित नहीं है, बल्कि यह तो मेरा एक निश्चयात्मक कम है। मक्ख बान तो यह है कि मैं इन नहरों का पन-दक्का के लिए अपने आपको मजबूर करता हूँ। आपका बजाऊँ, ममार में मुझ सबसे अधिक प्रिय है। मिसनी और विनोदकर एना की चौटी में मूत्र के प्रकाश में उसका दृश्य, वगैरें कि समुद्र और द्वीप पर मैं ज़ामा हुआ हूँ। जावा भी प्रिय है पर केवल व्यापारी वायुमा के समय। हाँ मैं मुवाबस्था में वहाँ गया था। सामान्यतः मुझ मक्ख डान प्रिय है। उन पर छा जाना ज्यादा आमान है।

प्यारा मकान है, है न? ऊपर जा आप दो सिर देव रहे हैं बहानी गुलामों के हैं। दूकान का सादनबोर्ड है। घर गुलामों के एक व्यापारी का था। उन लोग में आत्म विश्वास था। बंधोपणा करने थे—'दक्ते' हैं आप में समझिगानों हूँ मैं गुलामों का व्यापार करता हूँ, जाने मौस का मग वागजार है। आप साबते हैं आन बार्ड खुद आप कह सकगा कि यह है उसका धंधा? उफ़, क्या अनाचा है! माना मुझे अपने परिमो सहपाठियों के स्वर सुनाया दे रहे हैं। ब इस विषय के सम्बन्ध में

दठ हैं। दो-तीन घोषणा पत्र प्रकाशित करने में उन्हें मनाच न होगा—
 या दो-तीन से ज्यादा भी। और सोच विचारकर मैं भी अपना दस्तखत
 उन दस्तखतों में शामिल कर देता। गुलामी ? क्यापि नहीं। हम उसके
 विरुद्ध हैं। अपने घरों या कारखानों में इस स्थान देने की लाचारी हम
 हासिल नहीं हैं—पर वह तो स्वाभाविक है पर उसके बारे में बड़-बुद्ध
 बातें करना ! विलकुल हद है !

मैं खुद जानता हूँ कि बिना अधिपत्य जमाएँ या सेवा स्वीकार किये
 आप काम नहीं चला सकते। हर एक व्यक्ति का गुलामी की उसी प्रकार
 आयुष्मकता है जिस प्रकार स्वच्छ वायु की। आपने देना, सोच लेना है
 आप सहमत हैं मुझसे ? फिर अधिपत्य दीन-हीन भी सामंति ही है।
 सामाजिक शृंखला की निम्नतम कड़ी पर जो व्यक्ति है उसके भी बीबी
 बच्चे तो हैं ही। और अगर अधिपत्य है तो उसके पास कुत्ता तो है।
 मैं बात तो यह है कि आप ऐसे व्यक्ति पर गुस्सा हासिल करें जिसे उत्तर
 पर जवाब देने का अधिकार न हो। अपने पिता को उत्तर देकर जयाम
 नहीं दिया जाता, आप जानते हैं न इस व्यक्ति को ? एक तरह से यह
 बड़ी विचित्र बात है। दुनिया में जवाब कोई किस दे, अगर उसे नहीं
 जिसमें प्रेम करता है ? दूसरी तरह यह बात विचारजनक है। किसी
 न किसी को तो आगिरी बात बनी ही होगी। नहीं तो हर एक तक
 न जयाम में दूसरा तक हाजिर किया जा सके और इस तरह सभी किसी
 बात का अन्त हासिल न हो। दूसरी तरफ सबका हर मामले को हल
 कर देती है। समय तो गया, पर अन्त में यह बात हमारी समझ में आ
 गई। मित्रों के लिए आपने गौर किया होगा कि हमारे पुरातन यूरोप
 की दास्यता अधिपत्य अब सही रास्ते पर आ गई है। पुगने सीधे
 आपने उमान में हम जैसे कहते थे पर नहीं कहते कि 'यह बराबर है।
 आपकी क्या आपत्तियाँ हैं ?' हम ज्यादा स्पष्ट हो गए हैं। सत्ताप के
 स्थान पर हमने विनम्र प्रतिष्ठा कर दी है। 'सत्य यह है' हम कहते
 हैं आप जिनको चाहें इस पर बहुत कर न हम कोई दिनचर्या नहीं,

पर कुछ साल में पुनिस आपको दिखा देगी कि हमारी बात सही ही है।

और यत्प्यारा पुरानन ग्रह ! अब सब-कुछ साफ़ हो गया है। हम अपने आपका जान गए हैं, हम अपनी क्षमता में परिचित हो गए हैं। मुझे ही ले लीजिए—विषय न सही, उदाहरण में ही परिवर्तन जा दें। मेरी हमें इच्छा रही है कि मेरी नवा मुस्कराते हुए की जाए। अगर नौकरानी की मुखमुद्रा दुःख भरी होती थी तो मेरे निम्न विपाक हो जाते। य। य। य।, उसे प्रसन्न रहने का अधिकार था। पर मैं अपने-आपने कहा था कि उसका लिए बहुत हागा कि रा रोकर काम करने के बजाय हँसते-हँसते करे। असल में बहुत ता मेरे लिए था। फिर भाग्य बघारने का सबाल नहीं है, पर मैं समझता हूँ कि भरा तक कोई मूल्यतापूर्ण नहीं था। यो ही मैं चीनी रस्मों में न्याय में सदा इन्कार करता रहा। क्या ? क्याकि जब वे मौन रहते हैं और गारी-चमटी, बार्नों के सामन रहते हैं ता पूरव के रहने वालों के चहर पर अक्षर भवना के भाव होते हैं। स्वाभाविक है कि खाना परामत समय भी उनके चेहरे का भाव बही बना रहता है। फिर इस दगा में कम आप मुा का भग्न सचते हैं ? और सबसे बड़ी बात, कमे आप उनकी तरफ़ देखते हुए भा भाव सचते हैं कि आप हर तरह में ठीक ठाक हैं ?

नो मैं या कहूँगा कि दासता मुस्कराती हुई इसीलिए अनिनाय है। पर हम यह बात स्वीकार नहीं करनी चाहिए। क्या यह बहुत नहीं कि जा गुलामा के बिना अपना काम नहीं बना करता वह उन्हें 'स्वाधीन' घोषित कर ? पहल ता सिद्धान्त के नाम और दूसरे इसलिए ताकि वे घोर नराय्य में न डूब जाएँ। यह मुभावता ता उन्हें हमारी तरफ़ में पान का अधिकार है ही क्या ? इन तरन्व मुस्कराते रहा और हम अपने बनमान का परिशुष्य बनाए रख सकेंगे। नहीं तो हमें अपने धार में अपना राय पर पुनर्विचार करना पड जाएगा हम वन्ना से पागल हो उठेंगे या फिर विनाश बन जाएंगे, क्याकि कुछ भी सम्भव है।

पन्नास्वल्प दुकानों पर साइनबोर्ड लहंगे और यह साइनबोर्ड तो बहुत ही बुरा लगता है। इसके अलावा अगर हर आदमी सब कुछ बता दे, अपना सच्चा प्रभाव और सच्चा परिचय दे, तो हमारी समझ में न आएगा कि किधर जाएं। जरा खयाल तो बीजिए बिजिटिंग कार्डों का—'ड्यूपों विश्रुतल दाननिक' या 'धमनिष्ठ जमीदार' या 'व्यभिचारी मानवता वाली' मन पूर्णता तो उहाही विस्तृत क्षत्र है। पर एवदम नारकीय हो जाएगा सब। हाँ, नरक ऐसा ही होगा—दुकानों के साइनबोर्डों से भरी सड़कें और अपना आनंद स्पष्ट करने का कोई उपाय नहीं। एक बार जा धर्मीकरण हो गया तो हा गया।

आप अपने को ही ज लीजिए मेरे स्वप्नवासी बंधु जरा ठहर कर सोचिए तो कि आपका साइनबोर्ड क्या होगा? आप चुप हैं? सर बाद में बताइएगा। मैं अपना तो जानता हूँ—दो मुह वाला प्यारा जतस और ऊपर मस्था का आदम-वाक्य उस पर विश्वास न करो। और मेरे कार्डों पर होगा 'जो-वर्षातस्त वनमत नाटक' मेलने वाला। जिस नाम की मैंने आपने चर्चा की थी उसने बाद मुझे एक बात पता चली। जब मैं किसी मध्य को पटरी तक पहुँचाकर बिदा लेता था तो अपनी टांगी उठाकर। साफ है कि टोपी उठाकर अभिवादन करता मध्य के लिए तो था नहीं वह तो लेव हा नहीं मरता था। था किमके लिए? जनता के। अपना पाठ भ्रष्ट करने मैं जनता को सलाम भुजाना था। कुछ बुरा कहा क्यों? उहीं दिन एक दिन जब एक मोटर चालक बाल न सहायता के लिए मुझे घबराव दिया तो मैंने कहा 'बाई भी जाना न करता। मेरा मतलब था 'इतना ना कोई भी कर देता। पर उस कमजोर भूत का बाक मेरे मन पर चला रहा। विनयशीलता में तो मैं बाई तीममारणा था।

मुझे नरनिर हायर स्त्रीतर करना पड़ना है मेरे स्वप्नवासी बंधु रि म म्म ने भरा था। म म म यही मेरी जीवन रागिनी की टंग रही है और जा भावान मैं करता था उमी म म्म गुतापी पड

सक्ती थी। बिना ज्ञान बंधार में बान ही नहीं कर सकता था। साथ
 तोर स तब, जब मैं अपनी ध्वस्तकारी विवेक की गती का अपनाता था,
 जिसका मैं पटित था। यत् विवृत सच है कि मैं जीवन में हमेशा
 स्वतन्त्र और गतिमान रहा। और के साथ अपने मन्त्रों में मैं धनु
 भव करता था कि मैं मुक्त हूँ, सिर्फ इसलिए कि मैं किसी का अपन
 बराबर का नहीं मानता था। मैं आपका बना ही चुका हूँ कि मैं अपने
 को हर एक से ज्यादा बुद्धिमान समझता था। मैं अपने को ज्यादा कुशल
 और ज्यादा सुखदानीय भी समझता था। अचूक निगानेवाज, बजाव
 हाथों और प्रेम-व्यापार में अनुपम। उन मना में जो जहाँ मुझे
 अपनी हानि का प्रमाण पाना मुश्किल नहीं था। जम टनिस में—मैं
 बस साथ खेल नरे लेता था—मैं लिए यह सोचना कठिन था कि
 अभ्यास करने का जो समय मिलता था थपलम निवाडिया में आता
 न पहुँच जाऊँगा। मुझ पर अदर थपलाया के अनावा और कुट्ट न
 दीवता था और अभी मैं ज्ञान प्रवृत्ति का था, सौजन्य में मरा
 जाता था। जब मैं दूरों में मारता था पड़ता था तो माय कृपा में प्रवृत्ति
 हाथों पूरा रूप में स्वाधीन पर सारा भय मुझ ही प्राप्त होता था।
 मरा नाम ज्ञाता एक डिग्री और बढ़ जाती थी।

कुछ और वास्तविकताओं के साथ-साथ इनकी भी उस नाम के,
 जिसकी मैं आपस में बचा की थी, बाद के ज्ञान में धीरे धीरे मुझे जान
 का हुन। सब कुछ एक साथ ही नहीं न ही बहुत स्पष्ट रूप में। पहले
 तो मुझ पर अपनी स्मरण-शक्ति फिर से प्राप्त करने पड़ी। धीरे धीरे मुझ
 ज्यादा माफ जीवन लगा। मुझ का ज्ञान प्राप्त था उसी की मने निगता
 था। उन समय तक मुझ विस्मय की विवृत वास्तवता से सदा सहा
 मना मिलता रही थी। मैं सब कुछ भूल जाता था, गुप्तान अपने
 कहलों से हाँती थी। कोई बात ऐसी नहीं थी जिसका गहरा प्रभाव
 पड़। मुझ, महामहता, प्रेम, गरीबी सब मरा ध्यान आवर्षित करने
 प्रवृत्ति में जब परिस्थितियाँ बाध्य करती थीं तब, पर वह देकर

ग्रीष्म-चारिण और सतही ध्यान होता था। कभी-कभी मैं अपने दैनिक जीवन के बाहर की किसी बात के लिए भी उत्तजित होने का ढोंग किया करता था। पर बिलकुल मत्त पृथ्वी-तल मैं वास्तव में उनमें पड़ता नहीं था—सिवा उस वक्त जब भारी स्वतंत्रता में बाधा पहुँच रही हो। कभी-कभी मैं इस बात को 'हर एक चीज़ मेरे ऊपर मैं फिसल जाती थी—हाँ वगैरह सरबती जानी थी।

पर इन्साफ़ करें हम लोग। कभी-कभी मेरा भुलना-डपन प्रसा के योग्य होता था। आपन दया होगा कि कुछ लोगों का धर्म यही है कि सबको क्षमा कर दें और वे माफ़ कर भी देते हैं पर उन्हें भुला नहीं पाते। मैं इतना भला तो नहीं था कि कमूरो का माफ़ कर दूँ पर प्रसा में सदा उन्हें भुलानिया करता था। और फिर, जो आदमी साचता था कि मैं उसमें धना करता हूँ उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहता था जब देखता था कि मैं टोपी उठाकर मुखराना हुमा उसका अभिवादन कर रहा हूँ। तब अपने स्वभाव के अनुपम वह था तो मेरे महान चरित्र की स्तुति करता था या मेरे अगिष्ट आचरण की भत्तना। वह यह न समझ पाता था कि कारण इनमें कहीं सीधा-सादा है। मैं उसका नाम सब भूल चुका होता था। यही कमजोरी जो किसी स्थितियों में मुझे कृतघ्न या उदासीन बना देती थी ऐसी स्थितियाँ मैं अत्यन्त उदार भी बनाती थी।

परिणामतः दिन-प्रतिदिन मेरे जीवन की शृंगारिता का बाँधन वाला और कुछ न रहा। वेसल वही मैं था। और तो के गगन पाप और पुण्य में—आने वाले बन्धन का कोई ध्यान नहीं—हर दिन अपना मैं ही सीमित—राज जमे कुत्त पर हर दिन मैं अपनी जगह पर जमा हुमा। इस तरह मैं जिंदगी की गतह पर जीना रहा। 'वगैरह' की मुनिया मैं वास्तविकता से परे। वे मारी जिन्नाबें नाम के विषय की हृदय के मार दास्त, जिनमें मुहम्मद नाम के विषय थे वे मारे गहर जिन्नाबें नाम भर के लिए दया था और वे सारी औरों के नाम मात्र के लिए

अपनाई हुई। या तो ऊँच म या अनपनेपन म मैं माथ चेष्टाएँ करना रहा। फिर आय इन्सान व चिपक जाना चाहत थ, पर उहे धामन के लिए कुछ मिता नहा, और यह दुभाग्य की बात थी, उनके लिए। रही मरी बात, सा मने मुता दिया। मुझे अपने अनावा और विसा चीज की याद ही नहीं रहती थी।

फिर धीरे धीरे मरी स्मरण शक्ति वापस लौटी। या वहे कि म ही उस तब वापस पहुँचा और उसम मुझे वह स्मृति मिली जो मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। पर उसकी चर्चा करने के पहले आप इजाजत दें ता कुछ मिसालें बेग बर्हे / मरा विश्वास है कि य आपके लिए उपयोगी मिद्ध हागी—बताने के लिए कि मैंने अपनी ग्लोब के दौरान म क्या-क्या पाया।

एक दिन अपनी मोटर म जाते हुए जब मैंन बीराहे पर हरी बत्ती का इगारा पावर भी आग बन्द म मुम्मी का गार हमारे कई सन्नापी नागरिक फौरन मरे पीछे जार-जार से हान बजान लग तो मुझ सहमा एक घटना याद हा आई जो दसी तरह की परिस्थिति मे घटी थी। चन्मा लगाए और प्लस फोर पहन एन दुबले-सत्रने जरा-स आदमी म अपनी माटर-माइकिन मेरे सामन ल आकर लान बत्ती के पास लडी कर दी थी। जब उमन माटर-माइकिन राकी तो उसका इजन बन्द हो गया था, और उम फिर स चालू करने का वह ध्यर्थ चेष्टा कर रहा था। जब रागनी बदनी ता मैंन अपनी मामाय गालीनता मे उममे प्राधना की कि वह अपनी मोटर-माइकिन रान्म मे हटा ने ताकि मैं आग बड सकूँ, वह बचारा अपने खान्वा करने हुए इजन म जूम रहा था, अन उमन परिसी गिप्टना के अनुसार जवाब दिया, 'आमा, जाकर पन् पर चन् जाभा। मैंन फिर जार दिया—'गालीनता से ही पर आधारता क हवा-सा भाव अपन स्वर म लात हुए। फौरन मुभने कहा गया—'प्रो बाड़ी गण्ट गन्म म कहा गया—'कि मैं जहनुम का जा सकता हूँ उपर तब तब अनक हान मर पीछे बजन नग थ। बडी नृशता म मैं

अपने प्रतिवादी में प्रार्थना की कि वह भलमनसाहत से पेश आए और यह समझ न कि वह सारा ट्रफिक रोक रहा है। उस चिड़चिड़ आदमी ने—'गाय' तब तब वह अपने इजन के दुर्व्यवहार से बहुत परेशान हो चुका था—मुझ जापित कराया कि अगर मैं खूब अच्छी तरह से अपनी भरम्मत करवाना चाहता होऊँ तो वह बड़ी खुशी से करने को तयार है। इस प्रकार के बह्मन्पन ने मुझमें एक स्वस्थ आक्रोश उत्पन्न कर दिया और मैं इस इरादे में अपनी माटर से उतरा कि उस बदजवान की अच्छी तरह पिटाई करूँ। यह मैं नहीं समझता कि मैं कायर हूँ। (पर क्या क्या विचार आदमी के मन में नहीं उठते!) मैं अपने प्रतिद्वन्द्वी से एक बालिश लम्बा था। मेरी मासपरियाँ भी हमेशा दृढ़ और मुडोल रही हैं। अब भी मेरा विश्वास है कि भरम्मत उसकी हाजी न कि मेरी। पर मैंने उसीन पर पर रखा ही था कि जमा हानी हुई भीट में से एक आदमी आगे बढ़ा और मुझमें बासा कि मैं धूल का कीड़ा हूँ और वह मुझ उस आदमी पर हाथ न उठा। देगा जिसके परो के नीचे मोटर-साइकिल है और जिसकी बजह में मैं उससे साथ उलझन में फाँदे में हूँ। मैं उस थोड़ा की तरफ मुड़ा, पर सब कहूँ तो मैंने उस लम्बा भी नहीं। मैंने अपना निर धुमाया ही था कि मुझ माटर-माइकिल की फटफट सुनाई पड़ी और वह जोर का एक घूँटा मेरी कनपटी पर पड़ा। हमने पहन कि मैं समझूँ-बूझूँ कि हुआ क्या, मोटर-माइकिल खती गई। सक्कर लाता हुआ सिर तब मैं यत्रवत् फिर दार्तानियो की तरफ उठा कि उसी समय सब तब बाकी मर्याद इन्ट्री मोटरों में हानों का तुमुल-नाम गुरु हो गया। बत्ती हरी होने लगा था। तब कुछ विरतभ्यमिस्त्र भाग उग मूल की भरम्मत किये बिना हा दुम दशाण मैं अपनी माटर पर वापस चला गया और मोटर स्टार्ट कर दी। जब मैं उस मूल के पास में गुहरा तब उगन बवबूफ 'मधा' 'बहवर मेरी अभ्यथा की। मुझ आज ही यात्र हो आती है।

विनम्र ही तुझ क्या है आपकी राय में? हाँ, गायद। फिर भी

उमे भुलाने में मुझे कुछ समय लगा और यही तत्त्व की बात है। मेरे पास वहाने का बेशक। मैं जिना जवाब दिया मार खा ली थी लेकिन मुझ पर कायरता का आरोप नहीं लगाया जा सकता था। अचानक एक साथ दो तरफ से सम्बोधित किये जाने पर मैं चकरा गया था, मेरे दिमाग में सब गड़बड़ा गया था, और माटर के हानों की भाँति मेरी धड़कन राहट का बचा-बुचा हिस्सा भी पूरा कर लिया था। पर मैं उसके बारे में इस तरह दुखी था जैसे मैंने मयादा के नियमा का उल्लंघन किया हो। मेरी नज़रों के सामने बिना किसी प्रतिक्रिया के मोटर की तरफ अपना वापस जाना था जाना था, भीड़ की ध्वज भरी दृष्टि मुझ पर थी और वह भीड़, जहाँ तक मुझ यात्र है, इस वजह से और भी ज्यादा घबराहट ले रही थी क्योंकि मैं एक बड़िया नीला सूट पहने था। मेरे कानों में 'बबकूक' गया गूजता रहा और सब बातों के बावजूद यह मुझ मुना-सिब ही लगता था। संक्षेप में मैंने तो जनता के सामने मेरा मानमदन हो गया था। बेगुन परिस्थितियों के क्रम के कारण, पर परिस्थितियाँ तो हमें ही रहनी हैं। बाद में मुझे साफ दीक्षा कि मुझ क्या करना चाहिए था। मैं कल्पना करता कि मैंने गानानियों को जड़ पर धूसा मारकर गिरा दिया है, अपनी मोटर में वापस पहुँचा हूँ, उस बन्दर का, जिसने मुझे मारा था, मैं पीटा किया है उस पर डलिया है, उसकी माटर-मार्चकल दवावर बिना लेगा दी है और एक तरफ से जाकर खूब अच्छी तरह से उसकी मालिश की है, जो कि उसने पूरा तरह कमाई थी। कुछ हर-फेर करके यह छोटा-सी फिल्म सबका बार मेरे कल्पना-मन पर आनी-जानी रही। पर मौका हाथ से निकल चुका था और कई रोज तक एक बड़वा आक्रान्त मुझ कचोटता रहा।

अरे पानी फिर बरसने लगा। आइए क्या न हमला इस बरमाती के नीचे ख जाँ। ठीक। हाँ, तो मैं कहाँ था? हाँ-हाँ मान-मर्यादा। मुझे जब उस घटना का पुनः स्मरण हुआ तो मेरी समझ में आया कि उसका अर्थ क्या है। आखिरकार मेरा स्वप्न यथाथ के सामने टिक नहीं

पाया था। यह साफ ज़ाहिर था कि मैंने एक सम्पूर्ण मानव हान का सपना देखा था—एक ऐसा मानव का जो व्यक्तिगत रूप में और अपने व्यवसाय में सम्मान प्राप्त कर सके था। आप चाहें तो कहें कि आपका सपना और आधा डिग्री गोल। बाइस कहें तो मैं हर चीज पर छा जाना चाहता था। इसीलिए मैं गान दिखाना था निमागी प्रतिभा के उजास गानेगिक कला-जीवन का प्रदर्शन करना चाहता था। पर उसके सामने बिना कुछ चपड़ किये मार खा लेने के बाद मेरे लिए सम्भव न था कि अपना वह चित्र मजबूत रख सकूँ। अगर मैं सचार्ई और बुद्धिमानी के प्रति इतना निष्ठावान होता, जितना कि मैं कहता था कि मैं हूँ तो वह घटना मर लिए क्या महत्व रखती। जो उसके साथी रहे वे वही तो उसे भुना चुके थे। मैं बिना बजह गुस्सा हाँ जाने के लिए अपने को कुछ कोस लेता और कुछ इसके लिए भी कि गुस्सा करने के बाद दिमाग सही न रख सके के कारण अपने गुस्से के परिणामों का भी समुचित सामना नहीं कर सका। उसकी वजह से मैं जन्म लेना चाहता था मारकर विजय पाना चाहता था। जमे भरी सच्ची आकांक्षा पृथ्वी पर सत्रमे अधिव बुद्धिमान होने की या सबके अधिन उदार होने की न रहा है। बल्कि यह रही है कि जिसे मैं चाहें मारकर गिरा सकूँ, यानी त्रिलकुल प्राथमिक धर्मों में अधिन गतिगामी सिद्ध होऊँ। सच बात तो यह है कि हर बुद्धिजीवी गुणों का मरणा होने के और समाज पर मान गति के गहारे आधिपत्य जमाने के सपने देखता है। चूँकि यह उतना मरल नहीं है जितना कि जामूनी उपयामा में निखा रहना है। इसलिये आधमी क्यातर राजनीति का सहारा लेता है और सपनकर कूराम दान में शामिल हो जाता है। हज क्या है अगर अपने विरोध का ध्यमान करके मनुष्य हर एक पर आधिपत्य जमाने में सफल हो सके ? गुप्त अपना अन्तर में भाग्य जमाने के मधुर सपनों का आभास मिला।

तम-न-नम इतना तो मैं जान ही गया कि मैं अगलाही और नोपी का पग उमी हूँ नक उता हूँ जहाँ तक कि उनका अगलाध मुझ कोई

हानि न पहुँचाए । उनका अपराध मरी राक्षसदुता प्रचर करना था, क्योंकि मैं उनका गिहार नहाना था । उस बटका मेरे लिए हाना तो मैं न बंदन निगायन बन जाना बल्कि उसमें अधिपति एक प्राणी स्वामी बन जाना, जो चाहता था कि माय के सिद्धान्तों की अवहटना करके दासी पर आघात कर उस घुटन के बल टिका । उसका बात, मेरे स्वर्गात्तामासी प्रभु इस पर विश्वास करने रहता बटित था कि आदमी माय का पतन के लिए बना है और विश्वास और अनाय का रणा का भार भाग्य न उस सीमा है ।

चूँकि पानी और भी जार में बरस रहा है और हमारे पास समय है क्या मुझे उजाड़न है एक और बात आपका बताना की, निमकी खोज मैंने जल्दी ही (अपना स्मृति में) की थी ? आइए हम प्राणि में बच कर उस प्रच पर बैठ । मरिया में पाण्य पीने वाले अभी नहर पर ऐसा ही पानी बरसने दखन रह हैं । जो बात मुझे आपका बतानी है वह कुछ ज्यादा मुश्किल है । इस बार उसका सम्बन्ध एक औरत में है । पहचानता आप यह जान लें कि औरतों के माय मुझे हमारा सफलता मिलनी रही बिना कोई विशेष प्रयत्न किए । मैं यह नहीं बताना कि सफलता उन्हें मुनी करने में था उनका द्वारा अपन को ही मुखा करने में मिलनी रही । नहीं कम सफलता मिलनी रहा । अपना सम्बन्ध में जो भी चाहता था प्राप्त कर लेता था । कहा जाता था कि मेरा आचार व्यवहार आक्षेपक है । गोचिण तो जरा भाव जानत हैं कि यह आक्षेपक है क्या—बिना कोई स्पष्ट प्रश्न किए ही उत्तर में 'हाँ' कहनेवाला सना । और उस समय मेरे बार में यह सब था । आपको आश्चर्य होना है ? मान भी मीजिए इन्वार क्या करने के ? मगर चेहरे जसा अब है उसमें तो यह स्वाभाविक ही है । अपमान । एक अवस्था प्राप्त करने के बाद अपनी प्राप्ति का दायित्व हर व्यक्ति पर भार बन जाता है । मरने पर उमन क्या ? पर अपनी जाह पर सब है कि सम्मान जाना था कि मुझमें आक्षेपक है और मैंने उसका मूल प्रायण उठाया ।

पर बिना कोई जोन्-नोट लगाए मैं ईमानदारी उरतता था या, परोक्ष-परोक्ष। श्रीगता मे मेरे सम्बन्ध सहज-स्वाभाविक और मुक्त थे। उनमें कोई कपट न था, सिवाय उस प्रकट कपट के जिस के श्रद्धाजति समझती हैं। मैं उह प्रेम करता था उस पावन बचन के अनुसार ही जिसका मतलब है कि मैंने उनसे किसी से कभी प्रेम नहीं किया। मैं हमेशा नारा विरोध का बहदा और मूलनापूण समझता रहा और जितनी भी औरतों में मरी मुलाकात हुई उनमें प्रायः सभी को मैंने अपने से बेहतर ही पाया। फिर भी ऊँचे घास पर बिठाकर मैं मवा परत की अपेक्षा उनका उपयोग ही अधिक किया। फिर इसका किसी का पना भी कने बल सक्ता है ?

यह बात तो है ही कि सच्चा प्रेम समाधारण होता है एक क्षात्री में वग हो या क्षात्रिक और क्या ? बाकी समय या तो माया होती है या उग्र। रहा मरी बात मा मैं किसी क्षात्रिक में भी उर्ध्वगत भक्ति तो था नहीं। मैं बठोर हृदय नहा हूँ उनमें बहुत दूर बन्धि उससे विपरीत, करुणा से भरा हुआ हूँ यही तब कि मर भ्रम पलका पर रहे रहत हैं। बस यही है कि मरी भावनाएँ सदा मरी ही धार उमुल्ल होती हैं। परुणा के मर भाव अपने ही लिए होते हैं। यह बात सच नहीं है कि मैंने कभी प्रेम नहीं किया। अपने जीवन में हम-मे-नम एक महान प्रेम की भावना तो मेरे मा में उठी ही, जिसका पाव हममा मैं स्वयं ही रहा। उस दृष्टि में, युवावस्था की अनिष्टाय बठिनायों के बाद मैं जन्मी ही मुख्यस्थित हो गया था। मर प्रेम जीवन में केवल विषयासक्ति का प्रभुत्व था। मैं बल भाग विनाग तो और परास्त बग्न का सामग्री की तलाश में रहता था। मरा रूप दसम मरा सहाया था। प्रकृति न मर प्रति उदारता दिखाया थी। मुझ उस पर गव था और उनका द्वारा मैं बहुत में परित्याप्त प्राप्त किया जो अन्न मैं नहीं जानता कि केवल पारिस्व गुण में या प्रतिष्ठा प्राप्ति में। आप अवश्य कहेंगे कि मैं फिर दान बेघार रहा हूँ। मैं इसमें इन्कार नहीं करूँगा और मैं मुझ इस

पर कोई गव ही है क्वाकि दस समय में उस बात की टीा हाव रहा हूँ जो मच है।

ना भी हा मरी विषयासक्ति (उनी तब अपने को सीमित रखूँ) कतनी वास्तविक थी कि दस मिनट की मौज के लिए भी मैं माँ-बाप का त्याग कर सकता था। चाहे बाद में उनके लिए कितना ही अनुत्पादक न करता। नहीं, यो कहे कि दस मिनट का मौज के लिए तो ग्राम नीर से कर सकता था, और विशेषकर तब जब मुझे यह विश्वास हुआ कि 'सका कोई उपसहार न होगा। मिद्वान्त मरे भी थे, जस यही कि मित्र की पत्नी पुनीत है। पर मैं त्रिबुल सच्चे मन से दो-चार दिन पहले दाक्षिण स्त्री के प्रति मित्र भाव त्याग देता था। शायद मुझे इसे विषयासक्ति नहीं कहना चाहिए। विषयासक्ति अस्विकर नहीं है। हम आदरतापूर्वक इसे दुखना कहें—एक प्रकार की जमजाम दुबलता जो प्रेम-व्यापार में शरीर के सिवाय और कुछ नहीं देख पाती। पर वह दुबलता भी खूब सुविधापूर्ण। भरी विस्मरण की क्षमता के साथ मित्र कर वह मेरी स्वच्छन्दता में बाध देती थी। साथ ही एक प्रकार की अदम्यता का आभास देकर और एक अविचल स्वतन्त्रता प्रदान कर वह मुझे मयी-नयी सफलताएँ प्राप्त करने के अवसर देती थी। रामादिक न हान के परिणामस्वरूप मैं रामास को कुछ निमित्त प्रणन दिया। हमारी महिना मित्रा की बोनापाट के साथ एक समानता है वे समझती हैं कि जहाँ और सब अगपल रहे वहाँ वे अवश्य ही सफलता प्राप्त कर लेंगी।

दस व्यापार त्रिनिमय में अपनी विषयासक्ति के अनिरिक्त मैंने एक और भूख भी पात की—जुआ खेलन की अपनी लात्र भूख। औरतो मैं भी मैं प्रेम उनमें दिया जा एक प्रकार के खेल में मेरा भाग देती थी जिसमें कम-जो-कम निष्पाद हान का स्वाद होता है। मैं आपको बताऊँ अब मुझे धमस्य है मैं जीवा में मन-बन्ताव के साधना का ही आनन्द ले सकता हूँ। कोई भी मन्त्रिज चाहे वह किन्नी भी जगमगानी हुई क्या न हो,

मुझ गीध ही उगा दती है पर अपनी मनचाही औरत से मुझ बभा उब नहीं हुई। मुझ यह स्वीकार करते हुए क्लेश होता है, पर आइस्टाइन ने दस रूपा की बातचीत में किसी खूबसूरत बारस-गल से पहली मुलाकात पर आसानी से निछावर कर देता। यह बात और है कि उससे दसरी मुलाकात तक पहुँचते-पहुँचते आइस्टाइन के लिए या किसी सम्भर ग्रन्थ के लिए मेरा मन धँसने लगे उठता। सम्भर में वहाँ तो बड़ी बड़ी समस्याओं की मुझ अपनी विनामिता के बीच में प्रवेश के प्रतिरिक्त और बभी फिक्र न होती थी। क्या बताऊँ किनी पार पटरी पर लड़ हुए मित्रों के साथ बड़े जार के बाद विवाह के बीच तक का तार मरे हाथ से छूट जाता था क्योंकि उसी समय बोईगडब की खूब सूरत औरत सबके पार करती हुई दीख जाती थी।

घन में यह खेल खेलता रहा। मैं जानता था कि उन्हें यह पसंद नहीं आता कि आपरा उद्देश्य बट से पना चल जाए। पहले बातचीत हाना गहरी था, जिसे वे कहती थी प्रमाताप। मैं आपरा से नहीं घबराता था क्योंकि न था और न कटाक्षों में क्योंकि अपनी सत्य गंगा के दौरान में एमचर ऐवन्तर रहे चुका था। मैं प्रकम्भ अपना पाठ बना लता रहता था पर नाट्य हमारा वही रहता था। मिसाल के लिए पहले तो एक छाटा-ना भय अघोधगम्य भाषण के अभिनय का रहता था, रन्ध्रमयी कोई बात का, इसका कि यह एवन्तर समझ में नहीं आता मैंने मिलजुल नहीं पाहा कि आनपित होऊँ यहाँ तक कि मैं तो प्रम से घबरा गया था—आति आति। यह सत्ता सफर रहता था, यद्यपि यह नाट्य-नाहिता के सबम पुरान भव। मैं था। फिर वह दूसरा—एक प्रसार का भेद मेरा गुण पाव का जमा गुन किसी और औरत से प्राप्त रहा हो सता था। हा सता है कि यह अघो गती हा है ही (क्याकि कोई भी भगन का पूरी तरह नहीं बचा सकता) पर यह है अद्वितीय। हमने भरावा मैंने एक छाटे-ना भाषण की तयारी कर ली थी जिसका गंगा की गानकर स्वागत किया गया और जिस, मेरा पूरा विश्वास है,

आप भी मरा होंगे। उन अंक का सार दद मरीवेवसी के साथ जोर में
 'म दान का कर्त्तव्य मे था कि ' मैं कुछ नहीं हूँ, मेर साथ फँसने म कुछ
 नहीं रखा है मरा जीवन कही और ही है, उमका दिन प्रतिदिन के
 मुत्र १ कोर्ट सम्बन्ध नहीं—जानुत्र गायद मुझे और सत्रमे अधिव प्रिय
 हाता, पर अब तो काई चारा नहीं समय निकल गया।' समय निकल
 जान के कारणों को मैं आपन रखता क्याकि मैं समझता था कि रहस्य
 म आवन हाकर गय्या पर जाना बहनर है। एक तरह मे इसके अनावा
 मैं जा कहता था उस पर विश्वास भी करता था मैं जिस भूमिका म
 उतरता था उसे जाबन्त बना दता था। फिर आरंभय क्या कि मेरी
 साधनों भा मेरी ही तरह उमाहूवक मच पर थिरकने खाना थी।
 उनम जो सर्वाधिक सबदनगील थी उन्हानि मुझे समझन की चेष्टा की
 और उसम व एक प्रकार के विमर्शित विषाद की स्थिति म पहुँच गद।
 और दूसरा जो था व इसीम मन्मुष्ट होकर कि मैं केन क नियमों का
 पालन कर रहा हूँ और कायगन होने के पहरने मवाद करन की व्यवहार
 कुशलता का प्रश्न कर रहा हूँ, गीघ्र ही वास्तविकताओं पर उतर
 घाती था। इसक भय होत थे कि मैं विजय पाया और दाहरी विजय
 पायी क्याकि उन्हें प्राप्त करने की जो कामना मर मन म थी उस तज
 करन क अनिश्चित मैं अपने निरा अपने प्रेम का भी त्रुप्त कर रहा था—
 हर बार अपनी विनिष्ट भाक्ति को प्रमाणित करके।

यहाँ तक कि उनमें मे कुछ यदि केवन यादा-भा ही मुन पहुँचाना
 थी, ११ भी मैं सम्य अत्रका के बाद उनसे पुन सम्बन्ध स्थापित करन
 की चष्ठा करता था, निश्चय ही उन कामना स प्रगति हाकर जो अनु
 पस्थिति द्वारा पापित हासी रहती है और किन्हीं सम्बन्ध के पुनरा
 विष्कार के बाद जाना है पर गायन इमतिग भी कि मैं 'म दान को
 प्रमाणित कर सकूँ कि हमार सम्बन्ध-याग मुरगिन रह है और उन्हें
 बसने का अधिकार केवन मग है। नमी-नमी तो मैं यहाँ तक करता
 था कि उनमे प्रतीक्षा करा नेता था कि व किमी और पुण्य का साथ

समपण नहीं करेगी, ताकि इस सिलसिले में मैं बिलकुल निश्चित हो जाऊँ। पर मेरा हृदय जरा भी उस चिन्ता का भागी नहीं था और नहीं मेरी कल्पना। एक प्रकार का मिथ्याभिमान मुझमें कुछ इस प्रकार जम गया था कि मेरे लिए कल्पनाहीन था यह साचना यथाथ के बावजूद, कि कोई औरत जा एक बार मरी हो चुकी है कभी किसी और की हो सकती है। जा प्रतिभा व मुझमें बरता थी वह मुझ तो स्वतन्त्र कर देती थी, और उसे बांध देती थी। उस ही मुझ निश्चय हो जाता था कि वह और किसी की नहीं हो सकती, मुझ इसका अवसर मिल जाता था कि मैं उनसे सम्बन्ध विच्छेद कर दूँ—जा करना बस मेरे लिए बरीब तरीका असम्भव होता। जहाँ तक उनका प्रश्न था मैं अपनी बात सिद्ध कर चुका होता था और काफी दिनों के लिए अपना अधिकार सुरक्षित कर चुका होता था। विचित्र है है न ? पर था ऐसा ही, मेरे प्यारे स्वप्नवासी बंधु ! कुछ ही पुराने हाता है कि मुझ प्यार करो' ता कुछ की मुझ प्यार मत करो। पर एक प्रकार का जीव हाता है सबसे बुरा और सबसे दुखी, जा पुराना है मुझ प्यार मत करो पर मेरे प्रति ईमानदार बन रहा।

यस महा है कि अन्त में कोई भी प्रमाण कभी सनातन नहीं होता इसलिए हर व्यक्ति के साथ नये सिरे से प्रारम्भ करना पड़ता है। बार बार आरम्भ करते रहने का कारण आदमी की अज्ञानता पड़ जाती है। जल्द ही बिना साध भाषण उद्गार पर ध्यान लगता है और अनायास आचरण उसका अनुगमन करता है। और फिर एक दिन ऐसा भी आता है कि बिना किसी बिनायकामता का भाषा स्वीकार कर लेते हैं। सब मानिए, कुछ लोग के लिए दुनिया में सबसे भुविर्वात बात यही है कि जिसका कामना की हो उस स्वाकार न करें।

अन्तर्गत यही दुष्ठा। आपकी यह बताने में कोई साम नहीं कि यह बोन था। इनका बनाना पयाप्त होगा कि उसने अपनी निरपेक्ष निष्ठा में मुझ आकर्षित किया था। सब बताऊँ बड़ा बाहियान अनुभव

था वह जसा कि मुझे समझ लेना चाहिए था कि होगा। पर मेरे स्वभाव में कोई जटिलताएँ नहीं थी और जिन व्यक्ति को मैं दुसरा देखना नहीं था उसे शीघ्र ही भुला देता था। मैं सोचा था कि उसका ध्यान ही उधर नहा गया है और यह तो बचपना भी नहीं की थी कि उसके कोई विचार भी होंगे। जब अनायास मरी दुष्टि में उसका निरपन्न आचरण उसे ममार में अलग कर देता था। पर कुछ हफ्ता बाद मुझे पता चला कि उसने मरी कमिया का बणन किसी तीसरे व्यक्ति में किया है। और न मुझे पता कि मैं कुछ धाया मारा है। वह अपनी निरपन्न नहा थी जितना कि मैं माचा था और निणय बरन का विवक उसमें था। तब मैंने माचा 'अर, हटाया और हँसो में टानने की कोशिश की। मैं ठहाका मारकर हँस भी पना, स्पष्ट था कि घटना महबूब हीन थी। अगर ऐसा कोई क्षण नहीं मकोब का नियम हाना चाहिए, तो क्या वह यौन सम्बन्ध का क्षेत्र नहीं है अपनी सभी अपूर्व-नैयताया के साथ? पर नहीं, हमसे हर एक अपना श्रेष्ठतम पक्ष मामल रखना चाहता है अनेक में भी। वह ता दिया मैं कि 'अर हटाया' पर मेरा आचरण क्या था? मेरी मुलाकात उस औरन में कुछ दिन बाद फिर हुई और मैं हर तरह से उसे आकर्षित करने और वास्तव में पुनः प्राप्त करने की चेष्टा की। यह बहुत मुश्किल नहीं था क्योंकि वह वह पसन्द ही नहीं है कि समाप्ति विफलता में है। उस क्षण में बिना किसी इरादे के, मैं वास्तव में हर तरह से उसके मान का उस पहुँचाने लगा। मैं उसे त्याग देता और फिर स्वीकार कर लेता। उसे बाध्य करता कि वह अनुपयुक्त गमय और अनुपयुक्त स्थितियों में आत्म-समर्पण करे। हर दृष्टि में मैं इतना दूर व्यक्तार्थ उसमें करता था कि अन्त में मैं उसी तरह अपने का उसमें बांध दिया जिस तरह कि मैं समझता हूँ जेलर बनाये बंध जाता है। यह सब उन दिन तक चलता रहा जबकि व्यापार और विपत्तियों के मिश्रित सुख की उषा अन्त-व्यस्तता में उसने नम तथ्य का मुरार अदाकति दर्पित की जा समता के पान में उसे बांध हुआ था।

उसी दिन स मैं उससे दूर दृष्टन लगा । और अब मैं उस भूल चुका हूँ ।

मैं आपसे महमत हूँगा यद्यपि आपन शालीनताका कुछ कहा नहीं है, कि यह दित-चहतान का बटुत मुदर नहीं था । पर, अपने जीवन क बारे में जरा सोचिए मर प्यार स्वदेशवासी बंधु ! अपनी स्मृतियों का जरा बुराफ साफद आपकी भी ऐसी कोई घटना याद है। भाए जा आप का मैं मुक्त बताएँगे । रही मरी, जब जब मुझे वह तुच्छ पटना का हो शानी थी मैं हँस पड़ता था । पर यह होगा दूसरी तरह की थी— कुछ-कुछ उस तरह की अभी मैं पौडवाट स पर सुनी था । मैं 'दायालव' में दिय गा अपने भाषणा और दलीला पर हस रहा था—औरता के सामने दिय गा अपने भाषणा की अपनी अपनी दलीलो पर उदादा । उनका कम-न-कम मैं बहुत भूट नगी वाला था । मरे भाव बिना किसी 'दल-कपट' के मर आचरण में स्पष्ट व्यक्त हो जात थे । प्रेम की प्रक्रिया एक स्वीकरण है । म्याप खीन उठता है दम्भ अपना प्रगत करता है और सच्ची उदारता उद्भाटित हो जाती है । निदान उस 'गाधनीय' कहानी में अपने घट सम्बन्धों में अधिक मैं जितना समझा था उससे ज्यादा स्पष्टवाणी हो गया था । मैं इसकी धायणा कर दी थी कि मैं कौन हूँ और कम जा सकता हूँ । दगा मैं जो भी लगता रहा है। अपने व्यक्तिगत जीवन में मैं श्रष्ट रहा था—तब भी और विनाशकर तब, जब मैं उस प्रकार का व्यवहार किया था जो मैं आपका अभी बताया है—आप और कोई क विषय में अपने व्यवसाय क क्षेत्र में बड़ी-बड़ी उठान जब भर रहा था उमंग बड़ी अधिक श्रष्ट । कम-न-कम इतना ता था कि दूसरा क प्रति स्वयं की आचरण करने दल मैं अपने सत्य स्वभाव क विषय में अपने का भुलाया नहीं द गवना था । कोई भी व्यक्ति अपने मान क क्षणा में पावनी नही होना—यह मैं नहीं पड़ा है मर स्वभावका बंधु का सद ही मान निश्चय है ?

जब उस प्रकार मैं इसका वापरण सिर्फ औरत में हमारा के लिए जाता मान में मुक्त जितना कठिनाई होना था—जिस कठिनाई

के कारण ही मैं एक भाष कई सम्बन्धों में फँस जाता था—तो मैं अपनी कामल-हृदयता का दावा नहीं ठहराया। जब मेरी एक प्रेमिका ने हमारे प्रेम-व्यापार के चरम निखर तक पहुँचने की प्रतीक्षा में धीरे-धीरे मुझे छोड़कर चले जाने की बात की, उस समय जिस भावना ने मुझे प्रेरित किया था वह यह नहीं थी। मैं ही था जिसे तुरन्त आगे बढ़ना पड़ा, जो झुका, जिसकी चारपट्टी जागी। रही कामल-हृदयता और अनुराग। इन्हें मैंने उसमें जगा दिया और मैं स्वयं केवल उनके ग्रहण रूप की ही अनुभव किया—केवल उस भस्तीकरण से कुछ उत्तजित होकर और एक अनुगम-सम्बन्ध की सम्भाव्यता में धरारकर। सच है कि मैं कभी कभी सोचता था कि मैं वास्तव में व्यथित हूँ पर विद्रोहिणी के जाने की देर थी कि बिना कोई चेष्टा किये, मैं उसे भुला दिया—ठीक उसी तरह जैसे उसके निश्चय बदलकर तो मैं जाने पर मैं यह भूल जाता था कि वह मेरे एक में है। जी नहीं, वह प्रेम या उत्तरा नहीं थी जो मेरी भावनाओं को जगाती थी, जब हमका मतलब मुझे होता था कि कोई मुझे छोड़कर जा रहा है, वह केवल प्रेम पान की और जिने मैं अपना समझता था उसे पाने की आकांक्षा थी। जब ही मुझे प्रेम प्राप्त हो जाता था और मणिनी भुला दी जाती थी, मैं फिर चमक उठता था, मैं छोटी पर पहुँच जाता था, मैं पसंद करने योग्य बन जाता था।

और यह भी कहा जाए कि जैसे ही मैं वह अनुराग पुनः प्राप्त कर लेता था वही मुझे उसके बोझ का अनुभव होने लगता था। अपनी प्रीति के क्षणों में मैं अपने आपसे कहता था कि समस्या का भाग्य हल होता है कि जिस व्यक्ति में मुझे दिलचस्पी है उसकी मौत हो जाए। उसी मृत्यु एक ओर तो हमारा के लिए हम दोनों के सम्बन्ध पर बाह्य लगा देती और दूसरी ओर उसकी निहित वाच्यता को दूर कर देती। पर कोई भी व्यक्ति हर एक का मृत्यु की कामना तो कर नहीं सकता और न ही भ्रमण्डल की जननूय करने का हृदय जा

सबता है—सिर्फ उस स्वातन्त्र्य को भागने के लिए जो धन्यता कल्पना
 तीन है। मरी मवेदन-गीतना इसके विरुद्ध थी और मानव-जाति के लिए
 मरी महदयता भी।

इन प्रम-व्यापारा में कभी-कभी जो गहरा मवेन मेर मन में उठता
 था वह केवल टूटना का जाना था। जब सब-कुछ मजे में चल
 रहा होता था—मुझ में बबल गति मिल जाती वरन जान पाने
 की स्वतन्त्रता भी—विभी एक के साथ इतना उगार मैं कभी नहीं
 हुना था जितना कि तब जब मोघ दूसरी के पलंग में उठकर आया
 हाता मानो मैं एक के प्रति सघा ऋणी होकर अथ सभी स्त्रियों
 का भी ऋणी हो गया होऊँ। ना भी हो, प्रवट रूप न भरे भाव
 बितन ही उलझ हुए क्या न रहे हा जिस पत्र की मैं प्राप्ति करता
 था वह स्पष्ट था। मैं अपने सार प्रम-गम्ब-का को अपनी पहुँच के
 भातर रखता था ताकि जब चाहूँ तब उनका उपभोग कर सकूँ। मैं
 स्वयं स्वीकार कर चुका हूँ कि मैं मुन्नी सभी गृह सरता था जस कि
 पष्ठी व सब प्राणी या जिनकी अधिन गया म सम्भव हा उनमें मरी
 ही छोड़ उमुख हों सन्त-जवन के लिए बचनहीन बिसा भी पक्ष
 अन्तर्व से प्रसिद्ध और किसी भा बका भरे अमित पर त-पर—म पे
 म उग दिन सब के लिए बध्यात से अभिप्राय जब तब कि मैं उा पर
 वृषा-प्रति न टाजूँ। घाट गंगा में मेरे मुख में जीने के लिए अनिवाय
 था कि जा व्यक्ति मेरे वृषापात्र भूने जाएँ के जिये ही न। उह जीवन
 का उत्पत्ति हो मना उदा और बचन मेरा गारा वाकर।

आपनी यह सब खान में भुम बोझ मरीय नहीं होता, आप सब
 मानिए। जब मैं उस बाल की याद करता हूँ तब कि मैं स्वयं बोझ मुख
 चुना बिना हर चीज की माँग किया करता था जस मैं अपनी मेवा के
 लिए इन माद साजा ता निरोजित करता था जस मैं पाक हूँ कि उन्हें
 रसिजरेटर में रख दता था ताकि जस भी मरी मरती हा तभी हाथ बढ़ा
 कर उह निरोजित सकूँ ना मैं उा उदा गता कि उस माद का क्या बहूँ

जो मर ऊपर छा जाता है। गायद वह लज्जा का भाव है क्यों ? घायल वृत्तों मुझ मेरे मित्र लज्जा क्या चुमती है ? तो गायद लज्जा ही है या उन मूढतापूर्ण भावनाओं में स वाह है जिसका सम्बन्ध मान-मयादा से रहना है। जा भी हो मुझे लगता है कि जल में अपनी स्मृति के अन्तराल में ठिपों उस घटना की मुझे याद हो आई है जब मैं इन भावना में मुझ छोटा नहीं है—और उस घटना का वर्णन करना अब मैं टाल नहीं सकता। वितना ही क्यों न ऊपर-ऊपर बहना रहे या कुछ-न-कुछ गड़बड़ सुनाने की चलावे करता रहे। इसके लिए मैं आता है घायल मुझे श्रेय होगा ही।

शक्ति, यागि रक्त गद्ग है। मेरनाथ घर तक चलन की कृपा करें। मैं कुछ प्रतीति तरह में घटना गया हूँ। इनकी दर तक जाने करने की बजह में नहीं पर इस स्थान में ही कि अभी मुझ वितना और बताना है। सब अपनी अपनी खोज के बारे में बताने के लिए तो कुछ-एक गब्ब हो पयान होंगे। और बहाने बहाने में फायदा ही क्या ? प्रतिभा का घना वरुण प्रवृत्ति के लिए आवश्यक है कि अनन्त भाषा पलायन कर जाए। ता लीजिए। नवम्बर की रात-रात का उस गाम के दानवीन मान पहन, जिस गाम मुझ यह गया था कि मर पाछे कोई हँस रहा है, मैं पौ गायन हाँसा हुआ बाँगे दिनागे अपनी घर गौट रहा था। घायी रान में एक घटा और ग्याग कीत चुका था। बड़ी हल्की फुहार पड़ गी थी जिसमें मड़का पर के कुछ-एक ला भी नितर बितर हा गए थे। मैं सीधे अपनी एक प्रतिभा का छाटकर आ रहा था, वह तब तक गायद नींद में डब चुकी होगी। मुझे उन गमम का चलना अच्छा लग रहा था, कुछ निर्विक की स्थिति में मरा गरीब अनुदिम्भ गिरती हुई फुहार के जल रक्त प्रवाह में निहित। पुन पर मेँ किसी के पीछे न गुत्ता। वह छाया राँग के ऊपर मुझी नगी का एकत्र नगी हुई भी लगी। घान में दान पर मैं काल बपड पहनकर मुझी व घातार का अनुमान कर सका। उनके जाने वाला और वाट व वाटर के बीच गरीब का पिछना हिम्मा दीनता था भागा हुआ और ठण। उनमें मुझ कुछ उत्तजित किया, पर एक क्षण

ठिक्कन के बाद मैं आगे बढ़ गया। पुनः बार बार मैं घाट के किनारे किनारे
 गा मिशेल की तरफ चलने लगा, वही मैं रहता था। मैं बाई पचास गज
 हो आगे गया था जब वह आवाज मुझ सुनायी पड़ी, जो दूरी के बावजूद
 आधी रात के सन्नाह में बड़ जार की मालूम हुई—बिसी गरीर के पानी
 पर आघात की आवाज। मैं ठिठक गया पर घूमा नहीं। उसी क्षण मैंने
 एक पुनः सुनी। बाई बार दाहरायी गई, जिन्हे प्रवाह की आर जाती
 हुई फिर आवाज मूक हो गई। बागुप्पी उसके बाद फली जब रात मटंगा
 स्तब्ध हो गई मुझ उगा कि जैसे मन्त्रीन है। मैं चाहता था कि दोड़ पड़ूँ
 पर इच भर भी बढ़ नहीं सका। मैं बाँध रहा था मेरा पिरास है कि
 ठंड और घटना के आघात में मैं अपना आपसे कह रहा था कि जल्दी
 बरनी है। पर एक चलवती दुबलना अपने शरीर में पानी हुई मालूम
 पड़ी। मुझे याद नहीं है कि मैं उस समय क्या सोचा दर बहुत हा
 गई दूरी बहुत है या दूरी तरह का कुछ। निष्क्रिय सदा मैं तो भी बान
 लगाए गुन रहा था। फिर धीरे धीरे बरसते पानी में मैं आगे बढ़ गया।
 मैं किसी को बताया नहीं।

अरे, हम सा आ पहुँचे। यही मरा घर है मरा आश्रय। बल ?
 हाँ जल्द, अगर आप चाहते हैं तो मैं आपका मार्केन के डीप, न जाना
 चाहूँगा ताकि आप जवाहरजी देन करें। तो हम साग पल ग्यारह बजे
 मेक्सिका सिटी में मिलें। क्या ? वह भीरत। मुझे मालूम नहीं। मय
 मुझ नहीं मालूम। अगले रात और डमर बाई राज बाद नर मैंने अग
 बार नहीं प।

विसृष्ट गुरुद्वारा का गांव है है न ? यहाँ अनाखन का बाई कमा
 नहीं है। पर मर दास्य मैं आपका हम डीप में अनोखान
 गिमाने नहीं जाया हूँ। विमाना जीटागिया मरई के जून और मज
 गनाए मराज जिब नामने बर मरुत, परनीजर-गोडिज का मय मे

धिर दूए, उत्तम समावृत्त रहे हा यह ना आसका आई भी दिना
मकता या। पर मैं उन आँखों ने जहाँ मैं हूँ ओ आपको व चोँतें दिना
मनन हैं जो बाम्पव म महन्व रखना हैं।

अब हम बीच पर पहुँचने दात हैं। उसी के किनार-किनारे हमरा
चरना पड़ेगा ताकि इन अनिष्ट मनाहर मकानों से दूर पहुँच सकें।
आदर, हम बठ जाए। कहिए, क्या राय है आपको? क्यों क्या नहीं है
यह एक सुन्दरम, निर्जोष दृश्य? दूधर दक्षिण जरा, रात के उस टेर
का जिस मे साम बावू का टीना कहते हैं बाँ सरफ़ जिन्हेरी बाँध है
हमार परोँ के नीचे नीनाम भूमि सुमुद्र-जट और हमारे सामन है समुद्र
बिसका पानी हल्की रात मिथित डब के समान दोन पड़ना है और
उसके ऊपर विलून आकाश जिनम पानी का फीका रंग प्रतिबिम्बित
हा रहा है—सुचमुच नीना, पसरा हुआ नरक! हर चीज तेरी, पड़ी
हुई, वहीं कोई दृश्यान्तर नहीं भ्रमन्ति निवा है और तावन्निवाग।
क्या यह बिम्ब-ध्याना विलुप्ति नहीं, एक भ्रमन्त भूय या प्रत्यय हो उठा
हो! क्यों काइ मनुष्य नहीं! सबसे बड़ी बात कि वहीं कोई मनुष्य
नहा। आप और मैं उसके द्वारा परित्यक्त इस सोच के एकाकी दगक।
आकाश तावन्त है क्या? आन ठीक कहत हूँ, मेर मिथ। बठ गहरना
है नवोन्म हाता है बाधु क नीर लोडना है और मेघ कराट बंद
काना है। बरू बगल! आपने कभी ध्यान दिया है कि हाजिद जालों
क्योंहीं से बरा रहता है? अपना ऊँचाई के कारण अदृश्य के अपने पर
फहरान है एक साथ उठत गिरत है और द्रव्यमय भ्रमराज का मिनेरी
रंग के पक्षों का घना रंगि म मर दत है—जिहें हरा पर-ऊपर
उठाती रहती है। ये कपात वहीं ऊपर वय-मयन्त प्रतीता करन हैं।
पुष्पी पर का चक्कर बाँधते हैं नीचे दृष्टि उगत हैं और उतरना
चाहते हैं पर नीचे समुद्र और नहगें के अतिरिक्त कुछ नहीं है, दुस्मानों
के सादनगदों से दका नें हैं पर पाँच परन बाध एक भी गितर गही
नहीं।

आपकी समझ में नहीं आया कि मेरा मत क्या है ? मैं स्वीकार करना हूँ कि मैं थक गया हूँ । मेरी बात का तार टूट जाया करता है , मेरे मित्रों का मन विचारों की जिम स्पष्टता का आदर करना रुचिकर लगता था वह भी गवा दी है । मैं कह रहा हूँ 'मेरे मित्र , पर यह केवल सिद्धान्त और अभ्यास की बात है । अब मेरे कोई मित्र नहीं हैं । मेरे अब केवल सांभोदार हैं । सभी पूरी करने के लिए मर्यादा बढ गई है , अब समस्त मानव-जाति तब विस्तृत है । और मानव-जाति में सबसे पहल हैं आप । जो भी अपने पास हाथी सबप्रथम हाथ जाता है । कैसे मानूँ मुझ कि मेरे कोई मित्र नहीं हैं ? बहुत आमान है । मुझ यह उस दिन पता चला जिम दिन मैंने उन्हें बकबूक बनाने के लिए या कहूँ कि सजा देने के लिए अपनी आत्महत्या करने का विचार किया था । पर आज किस ? कुछ अब को आश्चर्य होता , पर दृष्टि तो बाई भी अनुभव करती । मैं तब जाना कि मेरे कोई मित्र नहीं है । और अगर हाँ तो मेरी स्थिति कुछ बहतर न होता । अगर मैं आत्महत्या करने के बाद उनकी प्रतिक्रिया देने पाता तब कोई बात भा जाता । पर मेरे प्यारे दास्त पच्ची अथवारमय है , तात्त्व माया है और काल अपारम्परि है । आत्मा की आँखें ? हाँ यदि आत्मा है और उसका आँग होती है पर हम जानते तो नहीं और न जान हा सकते हैं । नहा तो ममस्या का कोई हल होता , कम-न-कम आत्मीयता तो कर हा पाता कि लोग उसका बोझ को गम्भीरता से ग्रहण कर । योग आपके मन का सभी स्वीकार नहीं करने न आपकी सचाई को न आपकी ब्रह्मा की गम्भीरता का—अब तब नहीं जरा तो कि आपका मर्यु न हा जाय । अब तब आप जीवित हैं आपका मामला मर्यादा है आपका अधिकार है केवल उनका मर्यादा मिश्रित विचारों का । इसलिए अगर जरा भी दगाव नियाय जाना कि आदमी खुद अपनी मौत के नाटक का रंग लभेगा तो यह बात करने योग्य जाना कि वह उनका सामने उन सच्चाई का प्रमाणित कर जिन पर निर्वासन करने का वे तयार नहीं हैं—और इस प्रकार

उन्हें अचम्भे में डाल द। पर आपन ता कर ली अपनी हया उसके वा
इसम रम ही क्या रह गया कि वे आपकी जान पर विश्वास करने हैं या
नहीं ? आप ता मौजूद हमे नहीं जा उनका अचम्भा और सुतोष (बहुत
दुआ तो भी धाणिक) देख सकें, अपनी अयष्टि-क्रिया के सानी हा
उवं—जैसा हा पान का स्वप्न हर व्यक्ति देखता ह। नदिय न बन
रहन का केवल एक उपाय है कि आदमी बना ही न रहे।

क्या यही बेहतर नहीं है ? एक लड़का ने अपने बाप न कहा,
'आपका इसका मूल्य खाना पड़ेगा। बाप न उसे कुछ जहरन में ज्यादा
मुस्तद चाहन जाने स गादा करन में राजा था। लड़की न आत्महत्या
कर ला। लेकिन बाप का किमी चीज का मूल्य नहीं खाना पडा। उसे
छोटी मछलियों के शिकार का गीक था। तीन इनवार जान जान के
वा न वह फिर नदी-किनारे पहुँच गया—जहाँ उसने कहा, 'सब-कुछ
भुला देने के लिए'। ठीक हा कहा जमन, वह भूत गया। मच जान ता
यह है कि इसने विपरीत हाता ता आचय जाना। आप सोचन हैं कि
आप अपना बीबी का मूल्य देने के लिए मरर हैं, पर सच तो यह है कि
आप उसे मुक्ति द रह हैं। पर हम जान का न देख पाना ही श्रेयस्कर
है। मौन के बाद यदि आप मुल पाने ता सिवा इसके कि आपके कृत्य के
क्या प्रेरण कारण निय जाने हैं और क्या मुनत ? जहाँ तक मर प्रान
है मुन तो अभी ही जन्मकी भाषाओं मुनापी पड रही हैं— 'उसन आत्म-
हया कर ला कर्नाकि क् यह सहन न कर पाया कि आह मेर मित्र
मनुष्य की कल्पना-मकिन किन्तु दुबल गनी है। व हमेगा यही समझत
है कि आदमा किमा एक हा कारणवश आ-मन्या करता है पर किन्ती
हा कारणों के वग हाकर भा तो आ-मन्या करना सम्भव है। किन्तु
नहा, यह उन्हें कभी नहीं मूझता। ता फिर जान-बूझकर करन में क्या
घरा है—उस बात पर अपना बलि चगने म जा आप चाहन हैं कि लोग
आपके बारे म सोचें। जब आप मर ही गण ना व इसका नाम उठाकर
बाई बहदा मा महा कारण आपक कृत्य के लिए डूँ नें। जगों का

मर दोस्त, भुता दिए जान, हमे जाने और इस्तमाल किए जाने का यांच चुनाव करना पड़ता है। रहा इसकी बात कि तब उह ठीक समझ सब—तो कभी नहीं होता।

पर हम लोग बेकार चर उधर न बहें। मुझ जीवन प्यारा है यही भरो इसकी कमजारी है। मुझ जीवन इतना प्यारा है कि मैं इसकी कल्पना करने में अभिमग्न हूँ कि वह क्या है जो जीवन नहीं है। आप नहीं समझते कि इतनी लिप्ता में कुछ गैरपरम है? आभिजात्य यह कल्पना नहीं कर सकता कि उसका और उसके जीवन का घर हुए एक अन्तराल नहीं है। अगर चरत पड़ तो वह भर मिटता है, वह नुता नहीं टूट जाता है। पर मैं भुनता हूँ, क्योंकि मैं अब भी अपने सपने करता हूँ। मिसाल के लिए मैं जानूँ कि आप को बताया उसके बाद आप क्या समझते हैं कि मेरे अन्तर में किस भाव का विकास हुआ? अपने प्रति जुगुप्सा का? जा नहीं, जो कुछ क्षम मुझ था वह प्यारा तर दूसरा के प्रति ही था। मच है कि मैं अपनी कमजोरियाँ जानता था और उनके लिए अपसोस भी करता था। ता भी मैं एक पमान की विद के साथ उह भुनता ही रहा। दूसरे विपरीत दूरी पर अभि योगसंगत की प्रवृत्ति मेरे मन में निरन्तर क्रियाशील रही। बिनाबुल क्या आपका बुरा मना? गायन आप यह सोचने लाय कि यह तनगत नहीं है? पर सवाल तनगत रहने का ता है नहीं। मवान तो बच निरन्तर का है और दूसरा भी जयान्त—हो इस भा जयान्त—इसका कि नियम से बने बचा जाए। मैं गायन का बचन का वान नहीं करना, क्योंकि बिना नियम के दण्ड ता सत्य है। उसका एक मजा है जो हमारी निर्णयता का धारण कर देता है—उम कहते हैं दुर्भाग्य। नहीं उसके विपरीत यह ता नियम से बने-बो रहने का प्रन है—उम स्थिति में वन रन का जगम निरन्तर निर्णय तो हाता रहता है पर दण्ड का वनी घाणना नहीं की जाती।

पर इतना धामाना मैं बचा नहीं जा सकता। आज ता हम नियम

करन के लिए उनही तत्पर रहते हैं जितना कि व्यभिचार करन के लिए। वेबल अन्तर एतना है कि इसमें अध्यात्म या अध्यात्म हान का कोई दर नहीं है। अगर आपका कोई मन्देह हा ना अगस्त के महीने में उन श्रीधरवालीन हाटलों में, जहाँ हमारा दानवार सह-नागरिक अपनी ऊँच दूर करने के लिए पहुँचने हैं मेजों पर बठ नागों का दानचीत जा कर मुन लीजिए। अगर फिर भी आप किमा निम्न पर पहुँचने में मकाष करें तो हमारे आज के नरपुंगवों के लेखन का पाठ कर लीजिए। नहीं तो आपन परिवार का हा अध्ययन कर लीजिए, दा-गव पाठ आप अध्यात्म मीम जागेंगे। मेर प्यार दान, हम उन् कोई भी बनाना— हाह कितना ही गीता क्या न हा—अपन पर फमना दन का न दें। नहीं तो हमारी धर्मियाँ उन्कर रन दी जाएँगी। नम साधार हाकर वही सावधाना बरतनी हागो ना गर का कावु म करन दान का दर तना पडती है। अगर फटथर के अन्दर जान के पढ़न हजामत बनाने वस्तु दुर्भाग्य म वही उम्मा म चेहरा कट जाए तो माधिम डरा पशुआ की बसा धन आणगी। मुक्त यह चाह उस दिन अकस्मान समस्त म आ गइ जिस दिन मुक्त यह नगन मगा कि गायद मैं नारीप क काबिल नहीं हूँ। तब स मैं मगव रन्ने लगा। चूँकि मेरे पाडा-मा छन वह गहा पा, मेर निग काद छुटकारा नहीं था, व मुक्त सा जान।

अपने समझतीना म मेर सम्बन्ध दानन म ता ज्यो-क-न्या ध पर लय वही जरा-मा टूट गई थी। मेर मित्रा म वार्ड अन्तर नहीं हुआ था। कभी-कदा व अत्र भी मगी सात्त्वित म मिलन बाना समन्विति आर मुग्धा का गुराहना कर लेन थ। पर मुक्त बेचन अन्तर म मेरी ककालता और अस्त-व्यस्तता का ही मान हाता था। मुक्त नगता था कि मैं भेद्य हा गया हूँ। माना मुक्त सबसाधारण द्वारा अभियाग मगाग जान के लिए मौव दिया गया हा। मेरा दष्टि म मेर गाया वह आन्तर मे मगी जनता नहीं गृह न थ निमका मैं आती था। वह वक्त जिनका मैं बे-द्र था, सद-भट हा गया था और व सब माना गव पस्ति बनाकर दयादान

पर बंद गा थ। तब ही यह बात मरी पक्क म आई कि मुझ ऐसा कुछ है जिस पर निषेध दिया जा सकता है तभी य भी मैं समझ गया कि भस्म म निषेध देने का प्रिया उनका अनिवाद्य धर्म है। व मे ता रहा पहन का तरह ही, पर अब य नैस रह थ। या भी व हूँ कि मैं उनम म जितना म मितता था मुझ समता था कि हर एक हँसी छिगाए मुझ दम रहा है। उस समय मुझ यह भी लगा था कि लोग मुझे लगी मारन को कोणिम म हैं। दो-तीन बार सावजनिक भवना म प्रवेश करते समय मैं सचमुच गिरत गिरत बचा। एक बार तो मैं चारा दाने चित गिरा भी। मेरे अन्दर जो टनाई का अनुपायी प्रासीमी था उस अपने को ममात न म म दर नहीं लगी न उन दुषटनाया के लिए एकमात्र युनि-सगत देवा शक्ति प्रयोग गया का उत्तरदायी ठहरान म। ता भी म म मन म जवा बनी ही रही।

एक बार जब मेरा ध्यान आकर्षित हा ही गया तब मुझ यह पना तगात दर न गी कि मेरे दुश्मन भी हैं पहन ता मेरे व्यवसाय म और फिर मेरे सामाजिक जीवन म भी। उनम मे कुछ पर मैंन वृषा की थी कुछ पर कनी चाहिए थी। वह सत ता स्वाभाविक ही था और वह मय जानवर मुझे कोई बहुत दूर भी नहीं हुआ। पर दूसरी तरफ यह स्वीकार करना स्यात् बठिन और बट्टदाया था कि जिन लोगो को मैं नाम-मात्र के लिए जानता था या जानता ही न था, उनम भी मेरे दुश्मन थ। म हमता मही समझता रहा था उस मरतता क माय जिसका उद्धारण मैं आपका ५ चुरा हूँ कि जो मुझ जानत नहीं थे वे मुझ जानने पर पगद किय बिना रह नहीं मकन थ। पर जग भी नहीं। मुझ विषय विगद्यता उही माता म मिता जा बिना मर स्वय उ जान हू दूर म मुझ जान थ। निस्मनेह उट दवा थी कि मग जीवन भरा-परा है और पूरा मरह मुन क प्रति समर्पित है और यह मपराय स्यात् था। मकनता क भाव जग एव माग तरीक म प्रतीति किय जाएँ ता मथा भा पाथ म तिलमिता उठगा।

नन्वे अनादा मरा जीवन आवष्ट नग हुआ था उसलिए समय के अभाव के कारण मैं बन्ना की समीप आन का चप्टाया का अमान्य कर दिया करता था। और बाद में अपनी अस्वीकृति या भी उसी कारण नून जाया करता था। पर समीप आन का ब चप्टाएँ एम नागा द्वाग का तइ हानी थीं निन्वे जीवन मग्न-भूत नहीं थे और जो भी कारण मग अस्वीकृति का याद रखत थे।

इसीलिए ऐसा हुआ कि एक ही उन्हाहरण स नें, अतीत अन्त में मेरे लिए बहुत महंगा पड़ी। आ समय में उन्हा अर्पित करता था वह पुण्या का नहीं थे पाला था और पुण्य हर बार देने लमा नहीं करत थे। 'अम क्या बार्क रास्ता है ? आपकी मफनताओं और मुव नभा क्षम्य होंगे जब आप उन्हारना मे उनम हिम्मा बंगन के लिए मयाग हा। पर मुन्वी होने के लिए प्रतिवाप है कि आदमी दूसरा के साथ जगता फता न रहे। फतल काई रास्ता है ही नहीं। मुन्वी और निर्णोन अथवा विमाचिन और दपनीय। और मर प्रति ता अन्याय और भी अधिच। मैं अनीन का मफनताओं के लिए अपनाधी उन्हाया गया था। बहुत दिन तब मैं नम अम म रहा कि मामान्य महमति मुन प्राज है जब कि चारा घार र फुलने, व्यम्य और नीले बाणा की बीउर मर ऊपर हाल नी थी और मैं उनकी उन्भा करना हुआ मुन्करता जा रहा था। गिन गिन मुझे सावधान किया गया, मेर पान-बभु खले, माग चाट एक साथ नहीं और एवदम अपनी सारी शक्ति मेंन था ना। मारा 'अज्ञाण' नव मर ऊपर हैमन ना।

और यह वह बात है जो कोई भी व्यक्ति (उन्हे छात्रर जो बामन म जीवन महा हैं—दूसर गन्ना मफने ता नीनी) सन्न नहीं कर सकता। परमात्र सम्भव प्रदगन विद्वेय का हा न। लाग फमता दन के लिए उन्हावने न्मानिग रहन है कि कहीं उन्हे स्वय भी फमता न मुनना पड जाण। क्या माचन है आप 'आदमी के मन म जो विचार विनकुन स्वामाविद गग मे उन्हा न माना उसका महत्र प्रवृति न हा उठा हा,

वह है उससे अपने निर्दोष हान का भाव । इस दृष्टि से हम सब बूझन वाले के उस फाँसीमी की तरफ हैं जो इस रात की ज़िद कर रहा था कि कनक के पास अपनी शिकायत ज़रूर लिखाएगा । कनक स्वयं भी कदी था । वह इस फाँसीमी के आगमन का रिक्ताड भर रहा था । शिकायत ? कनक और उसके साथी होंगे— बाँट रहे हैं यहाँ गिरा यत बाँट नहीं सित्वाया करता ।' पर श्रीमान वह फाँसीमी जाना, मेरी बात ही और है । मैं निर्दोष हूँ ।

हममें से हर एक की 'बान ही और हाती है । हम सब किसी न किसी के विरुद्ध अपील करना चाहते हैं । हममें से हर एक किसी भी मूल्य पर निर्णय बना रहना चाहता है चाहे हम सारी मानव-जाति और दल-लोक पर भी दोषारोपण क्या न करना पड़ जाए । आप किसी व्यक्ति को उसकी बुद्धिमत्ता या उदारता की मर्यादा से प्रमान न कर पाएँगे । पर अगर आप उसका स्वभावजन्य उदारता की प्रणाम करें तो उसकी बाँट खिन उठेंगी । उसकी विपरीत अगर आप किसी अपराधी से कहें कि उसके अपराध का कारण उसका स्वभाव अथवा चरित्र की प्रवृत्ति नहीं बल्कि परिस्थितियाँ हैं तो वह आपका उदार ही आभार मानेगा । अपने सबील के मापन में यही वह स्थान होगा जहाँ वह आँसु बहाने की माँगा । लेकिन जहाँ से ईमानदार या बुद्धिमान होने से भेद कोई नहीं है, टीन बने हो परिस्थितियों ने विवश होकर या स्वभाव से अपराधी बान से व्यक्ति के दायित्व में बाँट विरोध करने नहीं दे । पर उन बन्धनों का तो चाहिए छूट, या तो अनुत्तरदायित्व, और य बन्धनों से स्वभाव अथवा परिस्थितियों की विवशता की बाँट से तो है बाँट से परस्पर विरोधी हा ममा न हा । जरूरी तो यह है कि वे निर्दोष रह और उनसे सद्गुण पर जमानत हान के नाते सदेह न दिया जाए और उनसे पाप-जन की प्रवृत्ति दुर्भाग्यजन्य हान के कारण अस्यायी से अधिपत बनी न मानी जाए । जमा मैं बान प्रान तो निणय में बन रहने का है । चूँकि बने रहना मुश्किल है और अपना स्वभाव की एवं हा गाव स्तुति कराना

और उस धन्य ब्राह्मण रत्ना वष्ट-माध्य है इसलिए वे सब धनवान् बनने की चष्टा करते हैं। क्या / आपने कभी अपने आपने यह पूछा है ? कि प्रान्त वरुन के लिए, और नहीं तो क्या ? पर खास तौर से इसलिए कि समष्टि तात्कालिक नियम पाने के विरुद्ध दास का काम करता है अद्वय-माध्य की भीड़ से हटाकर आपका गानदार भाटार बार के भीतर पहुँचा देता है विमान-मरुतिन तान 'पुनमन' वसा और फल-काम बेवियों में न जाकर आपका औरों से पयक कर देती है। समष्टि मेरे दाम्प, एकदम छुटकारा तो नहीं है पर दण्ड-म्यगन धनदर है और इसलिए निश्चय ही ग्राह्य है।

अपने मित्रों पर उस समय कभी विश्वास न करिए जब वे आपसे अपने प्रति मन्त्रे व्यवहार का आग्रह करें। वे जबतक उनकी आशा करते हैं कि उनकी अपने बारे में जो अच्छी राय है उसे आपकी सच्ची मित्रता की प्रतिष्ठा द्वारा एक और आवासन पाकर प्राप्ताह्न भिनेगा। मित्रता का आधार मन्त्रे व्यवहार कम हो सकता है / किहीं भी दामा सचा का आग्रह जब ऐसा भावद्वेक है जान जग भी छूट देता है और न जिसका बाद अवराध करता है। वह एक अवगुण है जो कभी-कभी ही भावनाप्रद होता है या या कहें कि एक स्वाध है। इसीलिए अगर आप उस स्थिति में हैं तो मन्त्राच न करिए बादा करिए मन्त्र बालने का, और जिनके बन्धिया तरीके में ही मन्त्रे नष्ट बालन जाइए। आप उनकी छिपा हुआ भावना का तपन कर लेंगे और अपने प्रेम का दुना प्रमाण * सकेंगे।

यह बात अन्याय मन्त्र है कि हम उन लोगों में अपने मन का बात कम ही कहते हैं जो हमसे बहतर हैं बल्कि हम उनकी मगत में दूर-दूर मानते हैं। अधिकतर हम उनमें अपने मन का बात कहते हैं जो हमारी ही तरफ हैं और जो हमारा स्वतन्त्रता के मान्यता हैं। धन हम अपनी उन्नति करना या करना नहीं चाहते बल्कि वे लोग में भी यह निहित होता कि अगर न कर सके तो प्रयत्नना पर हम निष्पापनी बनना

पड़ेगा। हम तो केवल चाहते हैं कि जा राह हमने चुना है उसी पर हम सहानुभूति प्राप्त हाती रहे और हमारा उत्साहबधन किया जाता रहे। सदाप म हम चाहते हैं कि एक ही साथ हम दापी भी रहें और हमें अपने का पवित्र बनाने की चष्टा भी न करनी पड़े। न ता हम काफी रानकी ही हैं न काफी पुण्यवान। न ता हमम दुष्कर्म करने की अपेक्षित क्षक्ति है और न सत्कर्म करने की। आप दांति में परिचित हैं ? सचमुच ? अरे बाह ! मैंने कभी न साचा था। तब तो आपका मालूम हागा कि दांति ने ईश्वर और ज्ञान की लड़ाई में निष्पक्ष त्वदूतों का अस्तित्व स्वीकार किया है और उन्हे वह निम्ना में स्थापित करता है जो उससे नरक के दालान की तरह है। हम उसी ज्ञान में हैं, अरे प्यार दोस्त !

धीरज ? आप बायद ठीक कहते हैं। क्यामत का इनकार करने के लिए धारज ही अपेक्षित है। पर बात ता यह है कि हम जल्दी में हैं— जल्दी में कि मुझ अपने आपका अनुनापी निर्णायक बनाना ही पना। पर पटले मुझ अपनी नयी खाजो के साथ किमी प्रकार काम चलाना पडा और अपने समकालीन की हँसी व साथ अपना सालमल बिठाना पडा। उस शाम के बाद जब मुझ पुकारा गया था—क्याकि यास्तव में मुझे पुकारा गया था—मुझ उत्तर दना था, या कम-से-कम उत्तर खाजना ता था ही। यह आमान नहीं था और कुछ समय तक मैं लड़खड़ाता रहा। पहल ता उस अनवरत हँसी और हँसन वाला व द्वारा मुझ यह गिना मिलनी थी कि मैं अपने अन्दर में सदा दस मज्जु जिमम अन्तत यह समझ जाऊ कि मैं सारन-न्यक्तिव नहीं हूँ। मुझगइत नहीं, वह मत्य इतना सारभूत नहीं है जिनका बीगना है। जिन्ह हम सारभूत मय कहते हैं वे और बाई नहीं सिफ वे ही हैं जिनका पना हम धीरो के बाद गगता है।

जा भी हा अपने बाग में मम्बा अवपण करने के बाद मैं न मनुष्य ता मोलिक द्विविधता का पना मगाया। नव अपनी स्मृतियों को खोजने व परिणामस्वरूप में मम्बा द्विविधता का पना मुझ चमकन में मगा यना भी नमना ने विजय पाता म और सद्गुणों ने अत्याचार करने में।

मैं शान्तिपूर्ण माधना में युद्ध करता था और अन्त में निःलिप्तता की विधियाँ मैं जा चाहता था प्राप्त कर लेता था। उदाहरण के लिए अपने जर्मन् के उपसित हान की मैं कभी शिवायन नहीं की। इस विषय पर मेरी बुद्धिमानी से नागा का आश्चय हुआ था—कुछ आन्तर मिश्रित भाव के साथ। पर मेरी निःलिप्तता के कारण मैं तो और भी अधिक बुद्धिमानी थी, मेरी तोय उत्पन्ना थी कि लाग मुझ भूत जाँ ताकि मुझे शिवायत का अवसर मिले। उस विम्वान्तिमि के (निम्न में प्रगुवी जानता था) कई नि पन्त में मैं चौकन्ना रहना था, व्यन्ता में देखता था कि कोई ऐसी बात न हो जिससे उन लागों की, जिनका भूत के धाम में बड़ा था, स्मृति नाग उठे। मैं क्या एक बार यह तक नहीं सोचा कि अपने मित्र के कण्ठ की तारीख गनन कर दूँ? एक बार मेरा अकेलापन पूरी तरह प्रमाणित हो जाता तो मैं शक्तिशाली धाम कक्षा के प्रति आत्म-समर्पण कर देता।

एक प्रकार मेरे समस्त सदगुणा का पञ्चभाग शून्यता भव्य न था। यह सब है कि एक और तरह से मेरा कमियाँ मेरे लिए शान्तिपूर्ण मित्र हूँ। अपने जीवन के दूषित अंग का छिपान की जा बाध्यता मैं अनुभव करता था उसने मेरी आकृति पर एक निर्वन् की मुद्रा ला दी थी, जिससे लोग सदाचारिता का मुद्रा समझन की भूल कर बैठने प। मेरी उन्मत्तता मेरे प्रति प्रेम जगाना थी। मेरी स्वाध्यायता की चरम परिणति मेरी उन्मत्तता थी। यहाँ मैं स्वीकार नहीं करता शक्तिशाली साम्य पर तक की गड़बड़ दगा। पर बात ना यह है कि बाहर मैं बड़ा कटार शान्तता था कि भी कभी एक प्याला गराव या निम्न औरत के धाम अंग की मैं सम्बोधन नहीं कर सका। मैं शिवायत और उन्मत्तता समझा जाता था और मेरा माया-ज था शान्तिगार। मैं अपनी सचाई का विनाशना करता था, पर मैं नहीं समझता कि ऐसा काम भी व्यक्ति है जिसमें मैं प्रेम किया हो और जिसे अन्त में पारा न दिया हो। पर हम सब नहीं कि मेरे विश्वासघात मेरी सचाई में बाध

नहा देने। अकर्मण्यता की प्रमिष अरधिया म में काफी बाम निपटा लिया करता था, और मैंने पड़ोसा की सहायता करना कभी नहीं छोड़ा, मुझे उसमें शुभ जा मिलता था, इसी कारण। पर इन तथ्यों की मैं कितनी ही बार अपने स क्या न टुहराता रहा हूँ, मुझ उनमें केवल सतही मानवना भर मिलनी थी। किन्हीं किन्हीं क्षणों में अपने विरुद्ध अभिप्राय भरी भाँति तयार करके इस परिणाम पर पहुँचना था कि मरा प्रधान दाप रहा है तिरस्कार करना। वे ही लोग जिनकी मैं समयमें ज्यादा सहायता करता सतत ज्यादा निरस्तुन भी थे। माना मैं गिण्टनापूषण सवेगसिपन दृढ़ता के साथ, प्रतिदिन भ्रष्टा के भ्रष्ट पर दूषता रहा हूँ।

मुझ साफ-साफ बताइए क्या इसक लिए कोई समुचित कारण हो सकता है ? है तो एक पर वह इनका साक्ष्यात है कि उन पैग करने की कल्पना भी नहीं कर सकता। मर जा भी हो लीजिए बताता हूँ— मैं कभी इस बात पर विश्वास नहीं कर सका कि मानव-व्यापार कोई गम्भीर विषय है। यह मैं जिसने नहीं जानता था कि गम्भीरता यदि है तो किमम जानता केवल इतना ही था कि अपने धारा धारा जो मैं देखता था उमम तो नहीं ही थी—यह मुझ विश्वास-ता लगता था, मनारजक या उमान माला। मचमुच ऐसे बहुत से प्रयास हैं, बहुत से विश्वास हैं जिन्हें मैं कभी नहीं समझ पाया हूँ। मैं उन विचित्र जीवों का अचम्भे में और सतह में गेगा था जो अपने कर्तव्य जान दते थे या किसी पक्ष या प्रतिष्ठा के लिए जान में धार नगण्य में डूब जाते थे, या अपने परिवार की सम्पन्नता के हनु वह ही गार गराव के साथ आत्म बलिदान करने थे। मैं उम मित्र या ज्यादा धार्मिक तरह समझ पाता था जिन्होंने एक बार मिगरेट नौबत का निश्चय किया और मात्र दूरे निश्चय के कारण अपने भा दृष्टा। एक दिन मुझे उमा अन्धकार होता पड़ा कि पहले उद्भजन-वम का विस्थापन हो गया है, उससे समत्वारी प्रमाणा के धार में जागा-मममा और फिर मग्नता हुआ तमगासू की दुआ की तरफ बढ़ा।

यह सच है कि कभी-कभी मैं जीवन के प्रति गम्भीर दान का दहाना किया करता था, पर ग्रीक ही मुझे गाम्भीर्य की निरयच्छता का ध्यान हा आता था और मैं केवल यथाशक्त अपना पार्ट मदा करता रहता था। मैं पाट मदा करता था भाव-कुण्ठ होन का, बुद्धिमान होन का सदाचारी हान का, अन्ध नागरिक होने का, ममाहत हान का, समागीत होन का, दायित्व-परायण हान का, मनीषी हान का—सारे में तून दन की ता काई आवश्यकता नहीं है यह ता आपकी ममन्त में था ही गया हागा कि मैं अपन उन हान-बुद्धिमिया की तरह था या यहा होने हुए भी नहीं हैं। अपन अधिकतम विस्तार के क्षण में मैं सबया धनुस्स्थित रहता था। मैं कभी भी बहुत गम्भीर या डबाही नहा रहा हूँ, केवल खेल म भाग लेत समय का छाड़कर, और उन समय का छोड़कर जब मैं फीज में था और अपने ही मनारजन के लिए किय गए नाटकों म भाग लेता था। दोना म ही खेल के नियम थे जा गम्भीर नहीं थे, पर जिनके प्रति गम्भीर रहने में हम रस लेत थे। अभी भी रवि बार क खेल क यका उचावच भर हुए स्टडियम म और गेट-गाला में—जिसके प्रति मरा अप्रतिम अनुराग है—मनार में य दो हा स्थान एम हैं जहाँ मैं निर्दोष धनुभव करता हूँ।

पर कौन इस प्रकार क दृष्टिकाय का उचिन मानेगा, प्रेम, मरण और अकिंचनता-जम विषयों के ममत्त ? पर इनके बार में किया ही क्या जा सकता है ? मैं ज्ञान-के-न प्रम की अभ्यन्ता व्यवसाय में मयवा नाटक में ही कर सकता था। कभी-कभी मुझे लगता था कि मृत्यु-शाय्या पर पर गति अपन पाट का म्पत्ता कर रह हैं। मेर बचने मुक्कित्त जो कुछ सोचत थे वह मुझे लगता था दमी नमून में बात रह हैं। धन लागों क बाव रहत हुए, जिना उनकी मच की वम्पुओं में रन लिय में जा बा करता था उन पर मरी शाय्या नहा हा पाती थी। मैं इतना घालमी भा था और गानीन भी कि अरन व्यवसाय में, परिवार म मयवा नागरिक जीवन म मुन्न जा भी अशानि था वह पूरा कर दता था पर हर

बार इतनी उदासीनता के साथ कि बात बिगाड़ देता था। मेरा समस्त जीवन दाहरे सिद्धांतों के अधीन रहा और मरी गम्भीरतम त्रियाएँ बहुधा व होती थीं निम्न मरा न्यूनतम लगाव रहता था। मेरा सारी भूलों के ऊपर क्या यही वह बात नहीं थी जिसके लिए मैं अपने को क्षमा तहां कर सना, जिसने मुझा उस निणय के विरुद्ध तीव्र विद्रोह की प्रेरणा दी जिस निणय को मैं अपने अन्तर्गत और परिवेश में भूत होता हुआ अनुभव कर रहा था, और जिसने मुझ परलयन करने के लिए बाध्य किया।

कुछ दिन तक तो देखने में मेरा जीवन वसा ही चलता रहा जमे इसमें कोई परिवर्तन न आया हो। मैं जमे रेल की पटरी पर भागे दौड़ता ही चलता जा रहा था। लोगो की प्रशंसाओं में बढि हाता गई—माना किसी उद्देश्य से। और वहीं मैं विपत्ति का आरम्भ हुआ। आपको वह उक्ति याद है— 'दुर्भाग्य होगा तुम्हारा जब सब तुम्हारी प्रशंसा करने लगे ?' आह, जिनमें य बात पढ़ कर उसने कितनी बुद्धिमानी की बात कही थी। दुर्भाग्य मेरा। परिणामतः हज़न मनमानी करी लगा और उसमें अजीब अजीब सरावियों पदा हान लगी।

उसी समय मेरे दैनंदिन जीवन में मृत्यु के विचार का विस्फोट हुआ। मैं अपने जीवन का मृत्यु के समय से प्यार करने वाली अवधि का अनुमान करने लगा उन लोगों के उदाहरण देखने लगा जो मेरे समय-य थे और जिनकी मृत्यु हो चुकी थी। और मुझे इस विचार से प्रेरणा होने लगी थी कि कहीं ऐसा न हो कि मुझ अपना काम पूरा करने का समय न मिले। जीवन का काम ? मैं तिलकुल नहीं जानता था। साफ़ पानसो यह थी कि जा मैं कर रहा था यही क्या करते रहने योग्य था ? पर एवम् यही बात नहीं थी। वास्तव में तो एक हास्यास्पद घासना मेरा पीढ़ा कर रही था—अपने मारे मठ स्वीकार किया बिना कोई काम कर सकता है ? ईश्वर के गामन या उसके किसी प्रतिनिधि के सामने नहीं, इस समय तो मैं ऊपर का जमा कि आप घासानी में समझ सकते

हैं। नहीं, वान मनुष्य के सामने स्वीकार करने की थी किसी मित्र के सामने, किसी प्रेयसी के सामने। नहीं ता अगर जीवन में एक भी झूठ छिपा रह गया तो मृत्यु उन मृतरन्दमर दीगी। काँ भी, कभी फिर न जान सकेगा कि उस तथ्य के बारे में सच क्या है क्योंकि जो एक व्यक्ति जानता था, वह वही भव्य व्यक्ति था जो अपने रहस्य को लिये सो गया था। मृत्यु की उस पूर्ण हत्या के विचार-मात्र न मरा सिर चक्कर खाने लगा था पर आज उसके बजाय वह विचार मुझे एक भूख मुक्त ही दगा। मैं ही एक अकेला व्यक्ति हूँ जो वह बात जानता हूँ जिसे बाकी सब बूढ़ रह हैं और भरे घर में एक ऐसी चीज दिगी है जिसके लिए तीन दगा की पुलिस बुला मागनी फिर रनी है यह विचार मुझ परम आनन्द देता है। पर दसम हम ना न पडें। उस समय मुझे यह तुम्हा नहीं मिला था और मैं परगान था।

बगव, मैं अपने का संभाता। पीने-दर-पानी के इतिहास में एक व्यक्ति के झूठ का क्या मत्व? और यह भी किननी घटना थी कि सत्य के पूर्ण प्रकाश में एक छाती माटी बदमासी का धमौटकर नान की दृष्टि हा, जो सत्या के सार में उमी तरह ला गई थी जउ समुद्र में बालू का एक कण। मैं अपने आपका यह कटकर भी समझाया कि गारार की मृत्यु—ना मौनें मैंने देखा थीं उनक साधार पर कहूँ ता—अपन में ही पर्याप्त दण्ड है और उसमें सम्यक् परिभाजन हा नाना है। मुक्ति प्राप्त होता है (अपान हमारा के लिए अन्तधान हान का अधि कार) अय-यानना के स्वद से। फिर भी अमलाय बन्ता गया मनु निष्ठापूर्वक मरा गम्या के माय नी रही सुख मैं अपने जानता था ता उसके साथ। प्रणमा की गलाबनी मेर लिए अधिस्तधिव अमत्य होती गद। मुझे लगना था कि उसके माय मेरा अमत्य देने अमा धारण मय म दिगान होता जा रहा है कि मैं कभी अपने का जमान न पाऊँगा।

एक दिन आया जउ मर लिए सहन करना अनुभव हो गया। मरी

पहलो प्रतिश्रिया अत्यन्त उग्र हुई। क्योंकि मैं असत्यवादी था इसलिए मैं इस बात को प्रकट कर दूंगा और अपनी द्विविधता उन सब मूर्खों के सामने ल पटकूंगा इसके पहले कि वे मुझे उमरा पता लगा सकें। जब मुझे सत्य के लिए सतवारा गया है तो मैं चुनौती स्वीकार करूँगा। इसके पहले कि नाम मुझ पर हसना शुरू करें मैंने चारों तरफ से उठते हुए उपद्राम के बीच अपने को भोरा देने की सोची। वास्तव में तब भी प्रश्न निणय से वचन का ही बना रहा। मैं चाहता था कि हंसन वाले मरी तरफ हो जाएँ या कम-से-कम मैं उनकी तरफ जा मित्रूँ। मैं सोचता था यही उदाहरण है कि, कि सड़क पर चलते अंधा को धक्का देता चरु और इस विचार से जो मुक्त, अप्रत्यागित उत्साह मेरे मन में जगा उससे मैंने जाना कि मेरे मन का एक अंग उनसे बिलकुल ज्यादा पृथक् करता रहा था। मैंने पशुपति की पहियार कुसिया के पहिये पत्तर करने की याजनाएँ बनाई जिस मवान पर मजदूर काम कर रहे हैं। उसका नाम जानकर गद प्रातिदेरियन। चित्ताने की यास सोरी, अठर घाउण्ड में गिनुमा को चपतियान का विचार दिया। मैंने इन सबके सपने दल पर दिया कुछ भी नहीं और अगर इस तरह की कोई चीज की भी है तो अतः तब उसे भूल गया हूँ। जो भी है 'याप' सब मान से प्राप की अजीब नूकान मेरे मन में उठ आता था। 'यापालय' में अपना भाषण देने समय भाष्यनतावग मैं उमरा उपयोग करता रहा, पर हमारा बदला मैं निवाल सता था खुन भाम मानवतावादी भावना की निन्दा करके। मैंने घोषणा की कि मैं एक विनम्रि छपाऊँगा, जिसमें गांधीनारा द्वारा भक्तता पर दिये गए अग्न्याचारा का धोखा कर रहे दूंगा। एक दिन जब मैं एक महक के बिनार के रस्तरों में बठा मछली का रहा था और एक भिखमरी ने मुझ निह करना शुरू किया तो मैं रस्तरों के मानित का गुस्साकर बना कि उम भयाद और 'याप' के उम भाष्यवादा के दाना का द्वारा मैं समझन दिया कि कोई गुम लागी है क्या परगात कर रहे हैं? उसने कहा, 'पर जरा, इन

भद्र महिरामा और मज्जनों की जगह अपने को नो रख के देखो।' और अन्त में उन जागान, जा सुनने को तैयार हो जात, कहता था कि मुझे जमी बान का अभिमान है कि अब यह सम्भव नहीं रहा कि उस जमी जमीनार की तरह आचरण किया जाए चिमना में बहुत आदर करता था। वह अपने उन किसानों का भी कोन्ने लगवाता था ता भुन कर उस मलाम करत थे और उन्हें भी जो नहीं करते थे, ताकि वह उस दुष्माहम को दण्डित कर सके जिसे वह दानो दगाघा में समान रूप में घण्ट समझता था।

नेकिन मुक्त अनिरुध के अधिक गम्भीर अवसर भी याद आते हैं। मैं एक स्तुति का वाक्य 'पुलित के प्रति' और एक 'गिलोटीन बन्दना लिखना गुरु किया। इस नी ज्यादा—मैं अपने को वाक्य करता था कि नियमित रूप में उन विविष्ट कठोर जाऊँ जहाँ हमारे ध्यानसाधक मानवतावादी स्वतन्त्र विचारन नास्तिक डकट्टे हात थे। मेरे विगत सप्ताचरण के कारण मेरा स्वागत तो पूव निश्चित रहता था। वहा दिन। किती प्रत्यक्ष प्रमाण के मैं कोई निषिद्ध बात हवा में उड़ान देना था, जमे ईश्वर को धन्यवाद है या केवल इतना हा कि 'हे भगवान्।' आप ना जानत हा हैं कि हमारे कठोर नास्तिक किनत सुकोची बालक की तरह हात हैं। मरणा का उल्लापन करत जाते इन गान के बाद कुछ मन्त्रिमत् दान बान जात थे भीचके-से ब एक-दूसरे की तरफ दस्त दे और फिर बालाहन फूट पड़ता था। कुछ तो कठ छोड भाग निकलते थे, कुछ किसी बान पर बान दिव बिना बन्दगते हो जाते थे और सब-के-सब धार घानना मे उमी तरह छेड़ने-तपने जान थे जमे पुनीत जन मे गतान।

आपकी यह सब बहुत बचाना लाना होगा। पर गायन इन छाट-भाटे मन्त्रों के पाठे कोई ज्यादा गम्भीर कारण रहा हा। सब बिगाड देना चाहता था, और सबम जगान यह चाहता था कि अपनी नवनामा को नष्ट कर दूँ तिमके विचार मे ही मुक्त गार का

गुस्ता आ जाता था। लोग भीठी तरह कहने, 'आप जमे व्यक्ति—' और मैं जल उठता। मुझ उनका सम्मान नहीं चाहिए था क्योंकि वह सावजनान नहीं था और सावजनीन होता भी बस जब मैं ही उसम मामीदार नहीं बन सकता था ? इसीलिए बहुत था कि मजरे निणय और सम्मान को उपहास के आवरण से ढक दू। जो भावना मुझे घोट रही थी, उसे किसी भी मूल्य पर मुक्त कराना आवश्यक था। सबको आसरा के सामने प्रगट करन के लिए कि वह बाहे का वना है, मैं उस सुन्दर मां के पुत्र के को सोझ डालना चाहता था जिसके रूप में मैं हर जगह दीखता था। मिसान के लिए मुझ याद है कि एक बार तीसगिय बकीना के लिए मुझे एक अनौपचारिक व्याख्यान देना पडा। बार एमासिएन के अध्यक्ष न भरा परिचय जिस अतिथय स्तुत्यात्मक ग दिया उससे बिचकर मैं ज्यादा देर अपने को राख नहीं सका। भाषण शुरू तो मैंने उसी भासातिरव और उत्साह के साथ किया जिसकी मुझ आशा थी गई थी और जिसका आवाहान भरे लिए कठिन नहीं था पर महना मैंने प्रतिष्ठा की प्रणाली के रूप में सचि-सम्बन्ध की राय देना शुरू कर दिया। वह सचि-सम्बन्ध नहीं मैंने कहा जो आधुनिक धानना-यन्त्रों की पूजना के विनमित कर लिए हैं और जो और और गाढ़ बार का एक ही तराजू मनीने दे ताकि हमारे को पहल के अपराधों के बोझ से दबा दें। इसके विपरीत मैं और के एक-समयन के लिए ईमान दार के अपराध प्रगट करना चाहेंगा अर्थात् इस प्रसंग में बनाव के। इस बात को मैं बड़ी स्पष्टता से समझाया

मान लीजिए कि मैं किसी बजार दयायी नागरिक के एक म गगन हाना स्यावार किया है जो दुष्टा के कारण हत्यारा बन गया है। जूरी के माध्य सम्मेलन गाविए उग (मैं कहेंगा) जारी की द्वय भावना द्वारा अपनी स्वाभाविक सज्जनता की परा का को जान पर दाय धाना जाता साम्य अपराध है। उनके विपरीत क्या यह गुन्धर अपराध नहीं है कि सभी स्वयं सज्जन बने बगर या बिना कभी धाना गान

आदमा वहीन बनकर ज्वा में सड़ा है वहा सड़ा हो ? मैं म्वनत्र हूँ
 आपके कठोर दण्ड से सुरभिनु, पर मैं हूँ कौन ? गव मैं लुं चौखें की
 तरह, काम-आमनाम बहरे की तरह, आनामि म फा की तरह और
 आनस्य का बादगाह । मैं किमी की हया नहा की । सब है अभी
 तक ता नहा । पर क्या मैं भने जागा का मरन नहा दिया ? गापद ।
 और गापद मैं फिर वही करन का नयार हाऊँ । जब कि यह व्यक्ति—
 देखिए जरा इस—यह व्यक्ति फिर ऐसा नहीं करता । जा-कुट वह कर
 वठा है उमने वट् स्वय ही अभी तक अनिभूत है ।' इस मापन में मेरे
 मुत्रा महयोगी कुछ पसरा गए । कुछ गग म उहने तम दिया कि इस
 पर हंस दिया जाए । और व पूरी तरह आन्यन हा गए जब मैं मापन
 की समाप्ति पर पहुँचा और मैं व्यक्ति व जा और उसके तयाकपित
 अधिकारा का आवाहन किया । नम दिन अन्त म इन्त की हार और
 आन्य का जीत हूँ ।

इन मतेदार सादरवाहियों का बार-बार करके मैं अपन बारे म
 सागा का राय का केवल उनका बन म हा मरन हुआ, उमे निहया
 करन म नही और अपन-आपना निहया करन म तो विनकुल ही नहीं ।
 अपन आनामा म मुम अचानक के आ नाव अधिकतर मिन—उनका
 कुछ मौन-सा मकोच कुछ-कुछ बना हा जमा आप दिया रहे हैं—नहा,
 मही आप नकाड न दें—व मुम उरा भी गान नही करत थे । वान
 म है कि अनन का निरपगम मिद करन के लिए अन ऊर दापा
 रागा करना बाकी नहीं है—करना मैं ता विनकुल हा भाता माना बन
 जाना । अपन ऊर एग गाम तरीके म गायगना करना जाना है उन
 विधि को सिद्ध करन म मुम बाजा समय लग । जब कि मैं विनकुल
 दीन-जीन अगन्या म पहुँच गया तब जाकर मुम वहीँ उसरा पता
 लगा । तब तर हँसों की पुगारें मरा आर बट् आया करनी रहीं और
 मेर यग-कग किय मर प्रयत्न उमे उन मदय, प्राय कामत गुग से, जा
 कि मुम पाठा पहुँचाना था—पूदक करन म मवया भामय रहे ।

पर लगता है समुद्र बड़ा आ रहा है। हमारी नाव से छूटन में अब
 दर रहा है, दिन समाप्ति पर है। नलिए नपोत यही झुट्टा हा रहे हैं।
 प्राय निश्चय। प्रवाण क्षीण हा रहा है। आप ननी चाहत कि हम
 नोग मौन होकर इस कुछ अमयम-म क्षण का आनंद ले ? नहीं। मरी
 बाता में आपका मजा आता है ? आप उहुत मेहरवान हैं। हमने
 असावा अब मुक्त बावर्द इसका गतरा मासूम होता है कि यही मैं, मरी
 बातें आपने लिए दिलचस्प न बन जायें। अनुतापी निणायक की व्याख्या
 करने में पहले मुक्त आपन बात करनी होगी विलासिता की—घोर
 पाल काठरी की।

आ गली पर हैं मित्र, जहाज का पूरी ननी ने चर रहा है पर
 उवाँडरजी मृत समुद्र है या मृतप्राय। उसके समतल किनारे
 कुहास में लाय हुए हैं। मासूम हा नहा पडता कि यही उमरा आरम्भ
 है घोर वहाँ अल। अन हम लाग बिता किमी माग रिह्ल के सहारे बन
 रहे हैं अपनी चाल की नजी का कोई अनुमान नहीं कर सकते। हम
 प्रगति कर रहे हैं पर कुछ बच नहीं रहा है। यह नौयात्रा नहीं है, सपना
 ऐसा है।

यूनानी टापूमा व समूह में मरा अनुभव हमके विपरीत था। निति
 पर निरन्तर नय-नय द्वीप दीप्त जात थे। उनकी वन विहीन रीज की
 हनी निमिज रमा था और उनका निनारा मागर न तीव्र विरोध में
 उमरला आता था। यहाँ मृत का वार्द सम्भावना न था। तत्र रोगनी
 में सभी-पुष्ट माग रिह्ल था। और एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक नाव पर,
 जो फिर भी गहर गति में ही चल रही थी मुझ निरन्तर ऐसा लगता
 कि हम रात दिन बढ़ा जा रहे हैं टण्डी सठगी के बीच पर, फन और
 हँसी की बीजारा से भरी एक सखी शीट में। तब मैं यूनान का स्वयं
 ही भर घनर में कही प्रवाहित होना लगा है—मुधिया के गिर पर,

अच्छ पर गकिण, रोकिण मुझ ! मैं भी प्रवाह में बग जा रहा
 मैं तो बकिण बगन ना ! मुझे राकिण, मित्र !

अब आप प्रान्त में परिचित हैं ? नहीं ? तो और भी अच्छा
 है। हम लोग बग बगेंगे ही क्या मैं पूछता हूँ ? बग ना भाव्यदन्ता
 ह गुड हृदयों की। आप जानते हैं कि वहाँ दो मित्र, मडक पर एक दूसरे
 का हाथ पकटे प्यारे हैं। हा और भी घर बठनी हैं और प्रनिष्ठित अग्रह,
 मूँछपानी पुरान पटरा पन गम्भीरतापूर्वक इन्म बगते हुए, मुहकों पर
 घुमने हैं घुमने गम्भीर की जैमियों में अदनी उँलिया फैलाए हुए।
 अच्छा तो पूछ बगों में भी ऐसा ही हाता है ? कभी-कभी ? हाँ,
 हाँ। पर बानिण, आप परिस की सडका पर मंग हाथ घुमन हाथ में
 नेकर घुमोगे ? अब मैं तो मजबूत बग गगन था। अब लोगों में तो
 और भी के भाव रहते हैं जमारों प्राकृतिक तमझ हा हमारा भावरेण
 और चारिण बना गयी है। पर प्रान्त के लोगों में अवनति हात में
 पने तो हम मना भाति अदनी परिमात्रन करता पडगा। वहाँ की जवा
 पावन है वहाँ मागर और गेन्द्रिक मुख पागदगी है। और हम

आप, हम इन डेक-बगम पर बठें। क्या कहिये छाया है। हाँ,
 ना मंग जयात है मैं बाल-काल तक पहुँचत-गहूँचन घनन का राक
 निदा था। जी हाँ मैं बताने आपका कि मेरा आग्रह क्या है। मध्य
 करन के बाद अदनी छपनापा की ममी चेष्टापा का बुका अब क बाद
 घनन छाने प्रयत्ना का व्यपत्ता में हनोपहित हाकर मैंने आनिदा
 की मुन्ना छान दा का निबन किया। जा नहीं, मैं किसी महान
 जी कामना नहीं बग भी अर ता बार्ड गग भी नग है। मैंने मा बगन
 और भी ब बोंच गगन थी। आप तो जानते हा हैं व किन्ती भी अवनता
 वा बान्धव में निरस्वार नहीं बगनी है उनको तो अच्छा रहनी है जमारों
 गति का निहया बना नेन की या उमकी मान-गति बगन की। उमों
 बगन नारा माद की नहीं अदनी की हाता है। वहाँ उमका बन्द
 गाद है उनका छाथय। किन्ती और भी का गगन में हा अधिक गग

गिरफ्तार किया जाता है। पृथ्वी पर स्वर्ग का क्या वही एकमात्र भग्न नहीं है जो घर तक हमें उपलब्ध है? आपद्काल में मैं भी अपने सहज सुरक्षा-स्थल की तरफ भागा। पर अब मैं भीड़-भीड़ें भाग्य नहीं दता था। भ्रातृ के कारण मैं अब भी कुछ दौब तो लगाता था, लेकिन कहानी गढ़ने की बरत का अभाव हो गया था। मुझे कहने में सकोच होता है, क्योंकि मैं शायद कुछ और वजिह गम्दावली का व्यवहार पर जाऊँ। लगता है कि उस समय मुझे प्रेम की आवश्यकता का अनुभव हुआ। अलील है है न? जा भी हा, मुझ एक गुप्त पीड़ा अनुभव हुई, एक प्रकार का अभाव, जिसने मुझे और भी रित्त कर दिया और इसकी अनुमति दे दी कुछ तो अन्तर से और कुछ बौद्धिक समझकर, कि मैं कुछ वादे कर दूँ। जितना हा मुझ यह लगता था कि मुझे प्रेम करने और पान की आवश्यकता है उसी मात्रा में मैं समझता था कि मैं प्रेम में पड़ गया हूँ। हमारे शब्दों में अभिनय करना रहा।

अन्तर में अपने को एक प्रान्न करता पाता था जिस कि अनुभव की व्यक्ति होने के कारण पहले मैं हमेशा बचाता रहा था। मैं अपने को यह पूरता सुनता था कि तुम मुझमें प्रेम करती हो? आप जानते हैं इस तरह की बातचीत में उत्तर यही होता है और 'तुम?' अगर मैं कह दता था हाँ तो मैं दत्ता कि अपनी वास्तविक भावनाओं से अधिप गहरे में पहुँच गया हूँ। और अगर मैं ना करने की हिम्मत करता तो यह डर होता कि मैं प्रेमपान में भी वचित रह जाऊँ और परिणामस्वरूप मुझ पीना भवती पड़। जिस भावना से मुझे शांति पान की आशा थी उस मापना का जितना ही अधिप मैं मरुट में पड़ी दत्ता था उतना ही अधिप अपनी गतिशील उगरी मांग करता था। अंत में अधिवाधिर स्पष्ट वादे करता गया। इस प्रकार मैं एक मोहिनी मूर्ख के पम-माग में पम गया जिसने रखी रीति प्रमाण इतनी अच्छी तरह पढ़ रहा था कि वह प्रेम के विषय में उम्मीद विवास और दत्ता से जान परना की जगह यदि बुद्धिजायी बगहीन समाज के बारे में कर। इस प्रकार का

विद्वान् आप जानने ही हैं सखामक होता है। मैं भी उसी तरह प्रेम की चचा करके दत्ता और अन्त में विश्वास दिना ही दिया। कम-न-कम तब तक जब तक कि वह मेरी प्रेमिका नहा बनी और मैंने यह नहीं देखा कि रंगीले प्रवागना द्वारा प्रेम के विषय में चचा करना कितना ही क्या न आ जाए, प्रेम की कला की गिना नहीं मिलती है। तात का प्यार करने के बाद मुझ मोना पडा सापिन के साथ। पुस्तका में चचित वह प्रेम जा मैं जीवन में कभी नहीं पाया था, मुझे अचानक टूटन जाना पडा।

पर मैं अनम्यस्न था। तीस वर्ष में अधिक हो गए थे कि मैं केवल अपने-आपसे ही प्रेम करता रहा था। इस आदत का छुड़ाने की क्या सम्भावना हो सकती थी? मैं नहीं ही छोड़ पाया और प्रेम-व्यापार में खिलवाड करता रहा। बादे मैंने दुगुने चांगुने कर दिए। जिस प्रकार पहल एक साथ कई प्रेमिकाएँ रहनी थी उसी प्रकार अब एक साथ कई प्रेम-सम्बन्ध हा गए। इस प्रकार दूसरा के लिए अब मैं कही ज्यादा मुनीजतें इकट्ठा करदा, वनिम्न यमपनी उस गाननार उदामीनता के समय के। मैं आपको बताया कि मर तात न दुख में धवराकर भूख में जान दे दन की साथी। भाग्यवत् मैं समय में पहुँच गया और तब तक उनका हाथ पकड़कर बटन के लिए तयार हो गया जब तक वह इजीनियर, जिसके कनपटी के बाल सफेद हो चने थे और जिसके बारे में उमने अपने मनपसंद साप्ताहिक में पढ़ रखा था बाली का यात्रा में वापस न लौट आए। जा भी हा, यह होन के बजाय कि प्रेम में पडकर मैं इतना उठ जाऊँ कि वाम की अननता में विनीन हा। नाऊँ, जमी कि लोकोक्ति है मैं अपने अपराधा के भार में, और सदगुणा की राह में पथनष्ट होने में ही, वृद्धि करता रहा। परिणामस्वरूप मैं प्रेम की भावना से इतनी घणा करने लगा कि भासों तक मैं प्रगिद्ध प्रेम-गीता 'लावी आँ रोउ और 'लीवलाट' का मुनकर दान पीन बिना नग रह पाता था। अब मैं धीरता का एक तरह में त्याग करने की चप्टा की और प्रत्यक्ष

का पालन करने की । आविर उनकी मित्रता-भात्र से भी मुझे सन्तोष मिलना चाहिए था । पर यह तो जुआ छोड़ने के बराबर था । वासना के होते हुए औरतो से मुझ आगातीत ऊँच लगी और स्पष्टतः मैंने भी उह उगाया । जुआ नहा और नाट्यगाला नहीं—गायद मैं सत्य के क्षेत्र में पहुँच गया था, पर मत्य, मेरे दोस्त, एक भयकर ऊँच है ।

प्रम और ब्रह्मचर्य ने निराश होकर मैं अपने मन में कहा कि विलासिता के अनिरिक्त और कुछ नहीं बचा है, जो प्रेम का स्थान ले सकती है, हँसी को दया देती है और शान्ति को फिर वापस ला देती है सर्वोपरि अमरता प्रदान कर सकती है । निमल उमा के एक विशिष्ट स्तर पर पहुँचकर, देर रात बीते, दो बेश्याओं के बीच पड़ हुए वामना ने सक्का रिक्त आशा उलीडन नहीं रह जाती बुद्धि पूरे अनीत पर छा जाती है और जीरित रहने की ब्यथा सदा-मयदा के लिए तिराहित हो जाती है । एक तरह से मैं हमेशा विनासता में ही डूबा रहा था अमर होने की इच्छा का मेरे मन में अभी अन्त न हुआ था । क्या यही मेर स्वभाव की कुती नहीं थी और उम आत्म रति का परिणाम जो मैं आपने बता चुका हूँ ? हाँ मैं अमरता की काशा के मार मरा जा रहा था । मुझे स्वयम् अपने से इतना अधिक अनुराग था कि यह तो मैं चाहता ही था कि मरा अमृत्य प्रम-भात्र अभी आर्धान न हो । क्योंकि जागन की स्थिति में और कुछ आत्म-बोध का पनस्वम्प इसका कोई कारण नहीं दाखता कि किसी वास्तु बदर को अमरता क्यों प्रदान की जात इगलिण अमरता के उल्ल आदमी को मुद्य-न मुद्य प्राप्त करना ही पड़ता है । ज्योकि मैं अमर जायन की आशा करता था, मैं बेश्याओं के साथ साया और गराव पीने में रातें गुजार दी । मुझ ऊँच मेरा मुँह नदरता के बडन स्वाद में भर जाया करता था पर रत तो चुका था घण्टा घानद में मग्न । क्या मैं आपने सामने स्वीकार करने का माहम बहें ? मैं अभी भाप्यार में कुछ रता की माद करता हूँ जब मैं एक निरुष्ट नाइट-क्लब में वहाँ की एक नाचने

वाला औरत स भित्तन जाया करता था और वह मुझे अपनी कृपा से सम्मानित करती था और उसके पीछे मैं एक नाम एक डोंग हावने वाले दानियन म आहा भी किया था। हर रात मैं गराबवान मे अकट कर घूमता था, उस पायिव स्वग की लान बसी और धूल मे—बहुद भट बोलता हुआ और खूब गराब पीता हुआ। मैं टपा की प्रतीक्षा करता था और तब अन्त मे अपनी राना के अम्न-व्यस्त रिम्तर पर ना पहुँचा था जा यत्रवन् केलि-क्रिया सम्पन्न करके और फिर दिना किसी मद्रमग का स्थिति मे धुतरे हुए सा जाती थी। दिन चुपके-मे आकर इस दुघटना पर प्रकाश डाल दता था और मैं उठकर आभा-मण्डित उप-प्रकाश मे निश्चल बड़ा हा जाता था।

मदिरा और नारी मैं मानता हूँ, य ही दाना मुझे वह सान्त्वना प्रदान करनी थीं जिसके योग्य मैं था। मैं यह रहस्य आपक सामन उदघाटित कर रहा हूँ मर दोस्त इसका उपयोग करने से आप डरें नहीं। तब आप इन्हें कि सच्चा विनासिता मुक्तिप्रद है, क्योंकि वह विनासी पर कनव्यों का काद भार नहीं डालती। उसमे डूबकर आपका स्वन्व अपने तब ही रहता है, इसीलिए स्वयं का ध्यार करने वाले महान् प्रेमिया का यही प्रिय आभास हो सकता है। यह ता अनीत और भविष्यरहित एक अरप्य ह जिसमे कोई वाद नहीं, कोई नात्वानिक दण्ड नहीं। जहाँ प्यका उपभाग किया जाता है व स्थान समारम पथक हैं। प्रवण करने पर आदमी आगा और भय का पीछ छान दता है। वही बानाना की आवश्यकता नहीं जिसे पान के लिए आन वहाँ जाते हैं। वह गण्य के बिना भी भिन सकता है और अकसर ता रूप के बिना भी। आह मुझे अनुमति दें आप, निज अशान्त और विस्मृत स्त्रिया ने उस समय मरी महायना की थी उह अदावनि अग्नि करने का। आन भी मरे मन मे उनकी स्मृति मे आदर की तरह का ही वाई भाव सन्निहित है।

जा मा हा, उस मुक्ति भाव का मैंन पूरा-पूरा लाभ उठाया नहीं तब कि मैं पाप का समर्पित एक हाटन मे ना दखा गया, एर ही समय

म एक प्रीति बना और उच्चतम समाज की एक अविवाहित युवती के साथ रहना हुआ। पहली के साथ ना मैंने रसिया हान का नाटक किया और दूसरी को जीवन के कुछ तथ्य जानने का अवसर दिया। अभिगम्यवश वंश की विनयुक्त मध्यवर्गीय मनावृत्ति थी, बाद में उसने आत्मकथावाले एक पत्र के लिए जिसमें आधुनिक विचारों के लिए रास्ता खुला था, अपने सस्मरण लिखना स्वीकार कर लिया। मुझे इसका भी कुछ कम अभिमान नहीं है कि उस समय मैं बराबरी की हेसियत से एक ऐसे पुरुष-समाज में प्रवेश पा सका जिसकी अस्तर भलना की जाती है। पर मैं इस पर जार नहीं दूंगा। आप जानते ही हैं कि बहुत बुद्धिमान व्यक्ति भी इसमें अपना गौरव ममभते हैं कि पास बैठ व्यक्ति से एक बातल प्यादा पा सके। शायद अंत में मुझे उस सुखमय विलासिता में शान्ति और मुक्ति प्राप्त हो जाती। पर वहाँ भी मुझे अपने ही अंदर एक बाधा का कारण मिला। दम थार वह था भरा बलजा, और एक ऐसा भयानक अवसाद जिसने अभी तक मुझे नहीं छोड़ा है। आत्मीय भ्रमरता का खेल खेलता है पर कुछ हफ्ता बाद उसे यह भी पता नहीं रहता कि अगले दिन तक भी टेंगा रह सकेगा या नहीं।

उस अनुभव का एकमात्र लाभ यह हुआ जब मैं रात्रि के अपने आसो-छोड़ चुका था कि जीवन मेरे लिए अपशङ्कित कम घटतायी हा गया। जो अवसाद मेरे दारीर को बचोट रहा था उसने एक साथ अन्ध बच्चे काव कहा लिए। हरण्य अति मनुष्य की शक्ति को कम कर देती है और शीतल व्यापक का भी। विसासिता का कोई उल्का नहीं होता—जसा कि समझा जाता है उसका विपरीत। विलासिता सिर्फ एक लम्बी नींद है। आपने देखा होगा कि जो लोग वास्तव में सचेत में जलते हैं उनकी समस्त तीव्र दृष्टि शक्ति ही रहती है कि उस औरत के साथ गाये जिनका बारे में वे जानते हैं कि उसका विवाहघात किया है। विलासिता व एक बार फिर अपने आपका इसका विश्वास निगाना चाहते हैं कि उनकी प्रिय सम्पत्ति अभी भी उन्ही की है। जसा कहा जाता

है, वे उस पर अधिकार पाना चाहते हैं। पर माय ही यह भी है कि उसक तन्त्रात अतःतर उनके दिल की जड़न कम हा जाती है। शारीरिक विद्वेष कल्पना प्रभूत तथ्य है और साथ ही आत्म निरपेक्ष भी। अपन प्रतिद्वन्द्वा पर आदमी वह नीच विचार आरोपित कर देता है जो उन परिस्थितियों में उनके अपन मन में रूचुके हैं। भाग्यवश एन्द्रिज तन्त्रि की अति कल्पना और निणय गतिन दोना को क्षीण कर देती है। वेदना तब तक सुपुस्त पड़ी रहनी है जब तक पुनस्तव। इही कारणों से नवयुवक अपनी आध्यात्मिक अगतिन पहली प्रमिता क साथ ला देते हैं, और बुद्ध विवाह-सम्बन्ध, जो केवल धन व्यभिचार हैं, दुस्माहम और काल्पनिक निमाण को अर्थों धनकर रह जाते हैं। हा, मेर दास्त, बूजुआ विवाह-सम्बन्ध न हमारे दण का स्तोपर पहनाकर तयार कर दिया है और गौध ही उमे मौन के दरवाजे तक पहुँचा देगा।

मैं अतिगयातिन कर रहा हूँ? नहीं, पर विषयान्तर अवश्य कर रहा हूँ। मैं तो केवल यह जानना चाहता था कि मैंन उन महीनों की धार विलासिता से क्या नाम उठाया। मैं एक प्रकार के बुहाने में रह रहा था जिममें वह हँसी इननी दण गई थी कि अन्त में मुझे उमरा बाध होता हो वन्द हा गया था। जो उदामीनता पहने ही मेरे अन्तर में भर चुकी थी उमे अब कोई अनिरास नहा मिलता था, उसन अपना कारक प्रभाव विस्तार कर दिया। अब वाई मवग नहीं। एक मतुनित भाव, या कह कि भाव ही नहा। साथ अन्त फकडे मुखाने में गेग भुक्त निऐ जात हैं और धीर धीर अपने प्रभुन्त स्वामी को ही घोट डालने हैं। मेर साथ भी यही हुआ। मैं गतिनपूर्वक अपनी ही औपध में भर गया। मैं अभी भी अपन व्यवसाय से जातिना निवाह कर रहा था, पर मेरे नाम पर माया की मरी उडाना के कारा गहरा धक्का लगा था, मेरे जीवन की अस्त-व्यस्तता में व्यवसाय गेक्षति पहुँचनी थी। पर यह ध्यान देने योग्य बात है कि मुझ अपन गतिन की उमरा के कारण अपन नग आचरण की अति की अपणा अधिन विरोध मिता। अपन भावना क दौरान

म 'यायाधीन' व सामन भरा ईश्वर का नाम लेना, जा कि मात्र 'ग' प्रयोग ही था, मर मुक्किल्ला के मन मे मर प्रति सन्नेह पदा कर देना था। उह गायद यह गवा हा जाती थी कि परमात्मा उनक हितो की रक्षा उतनी अच्छी तरह नही कर सक्ता था जितना कि 'याय' गायत्र म अजेय बनील। वहाँ स इस निष्पक्ष पर पहुँचना सिर्फ एन कृष्ण आग बढ़ाना था कि मैं अपनी अनभिज्ञता के अनुपात म ही पर मात्मा की दुहाई देता हूँ। मर मुक्किल्ला ने यह कदम बढ़ाया और विरल हो गए। कभी-कदा मैं किसी मुकद्दम म बहस करने चला जाता था। कभी-कभी यह भी हाता था कि इस बात का भूलकर कि मैं जा कह रहा हूँ उसम मुझ बिश्वास नही है, मैं अच्छी परी भी कर देता था। मेरी अपनी बाणो नेनद करती थी और मैं उसका अनुसरण। मैं पहले की तरह उठान तो नही भरता था पर कम-न-कम भूमि तो छोड़ ही देता था, और कुछ उछल-बूद कर सक्ता था। अपना व्यवसाय व बाहर मैं बहुत कम लोगो स मिलता था और बडे ही कष्टपूर्वक मन दा-एक अवसन्न प्रम-भम्ब-चा को जीवित रखा। यह भी हुआ कि दो एव 'गामे' मैंने गुद्ध मन्त्रीपूज वातावरण म बितायी, जिनम वामना का नाई आभा न था, पर इस अन्तर व साथ कि ऊन के आग आत्म-समर्पण करके मैं जा कहा जाता था उन सुनता हा न था। मैं कुछ मोटा हुआ और तब मुझ यह बिश्वास होन उगा कि सकल पार हा गया है। अर कुछ भी नही रह गया था सिवाय इसके कि उम्र बढ़नी जाए।

पर एव 'जि' समुद्र की गर करन हुए जहाँ मैं अपनी एन महिला मित्र का घुमान स गया था उन बिना यह धताए हुए कि अपनी रोग मुक्ति की गुणी मना रहा हूँ मैं एक बड जहाज पर था, ऊपर घात डक पर। सहसा दूर पर एन काला-मा धब्बा दृष्टान्ती महासागर म गिराई पड़ा। मैंने एकत्रम मुँह पर लिया और मरा जिल जार-जोर स धड़कन लगा। अब मैंन फिर बलपूर्वक अपना मुँह उधर किया तो ऐसा कि वह काला धब्बा नहा था। मैं चित्तान को हा था भूषों की तरह महापता

के लिए पुकारने को था, तभी मुझे वह फिर दिखायी पड़ा। वह उस कबाड़
 का एक टुकड़ा था जो अकस्मिक जहाँ-समुद्र में छोड़ दिया करने हैं। पर
 मैं उन देखते रहना सह नहीं पाया था। क्या तुरन्त मेरा ध्यान एक
 दूरत हुए व्यक्ति का खरफ गया था। तब मैंने सुन्धिर चित्त से यह
 समझा। उसी तरह जैसे आप किसी विचार का स्वाकार कर लेते हैं
 जिसकी सत्यता के बारे में बहुत पहले से जान-बूझते हैं, कि वह पुराना
 जा साला पहल सन नदी पर से मेरे बाना में पड़ी थी। कभी मौन नहीं
 रुई, नगी ने उसे सागर तक पहुँचा दिया था—सारा भर में धूमत रहने
 के लिए, सागर के अनन्त विस्तार-अनन्त और उसने उस दिन उन बहा
 मरा इन्तजार किया था जिस दिन फिर मरा उसमें सामान्य हुआ। साथ
 ही मैंने यह भी जाना कि वह पुकार नदियों में और सागर में, हर जगह
 मेरा इन्तजार करती रहेगी—जहाँ-जहाँ मर सस्वार का अपवित्र जल
 पहुँचेगा। आर ही, यहाँ भी क्या हम पानी पर ही नहीं हैं? इस सपाट,
 एक-एक, अन्तहीन जल पर जिसकी सीमाएँ पृथ्वी से अलग पहचानी नहीं
 जाती? क्या विश्वास होता है कि हम साग कभी भी एम्बरडम पहुँच
 सकें? पुनीत ननक इस त्रिगल पाथ में हम लोग कभी बाहर नहीं
 निरन्तर सपने। सुनिए, सुनिए! आपको क्या अदृश्य जन-पाँतियाँ क
 स्वर नहीं सुनायी पड़ने? यदि वे हमारी ही दिशा में पुकार रहे हैं तो
 क्या विमने हेतु?

ये बड़ी जल-पथी हैं जो अन्तर्लानिक महासागर पर उस दिन पुकार
 रहे थे जिस दिन मैंने हमारा के लिए यह जाना कि मुझे रोग-मुक्ति नहीं
 मिला। कि मैं अभी भी जान में पड़ा हुआ हूँ और अब वन पड़ वम ही
 निमाना है। जानदार जावन का अन्त हुआ। साथ ही उद्गर्ग और अति
 रवा का भी। मुझे घुटन टन टन पड़ और अपना अपराध स्वीकार
 करना पड़ा। मुझे बाल-बोहरा में रहना पड़ा। निश्चय ही आप उन
 बात-बातों में परिचित नहीं हैं जिन मध्य युग में 'नितल ईन' कहा
 जाता था। त्यागवर यह होता था कि उनमें पड़ आदमी का जीवन भर

के लिए भुला दिया जाता था। अथवा ल-कोठरियां म और उसम अनर
 उसके विलक्षण आयाम का था। वह इतनी ऊंची नहीं होती थी कि बाई
 उसम राडा हा सके और न इतनी चौड़ी कि उसम लेट सब। आत्मी को
 विचित्र आनंद बनाकर निरछ निरछ जिंदा रहना पड़ता था। सान ता
 मनलय था दर होकर पड रहना और जागो का उनडू बठ रहा। मर
 प्यारे दोस्त, दम सीधी-सी कारीगरी म विलक्षण प्रतिभा थी—और यह
 समझ लीजिए आप कि मैं अपने शत्रु तोलकर इन्ममान कर रहा हू।
 हर रोज अपनी उस कमी न गीली पडने वाला सिमुडन द्वारा निम्ने
 उमरा शरीर में ठेका ही जाता था, अपराधी को यह आपित होना रत्ता
 था कि वह बोली है और निर्दोषिता आह्लात्मय प्रसार म निहित है।
 आप गिम्परी और ऊपरी टेन पर विवरण करने वाले व्यक्ति की उस
 बान-नाठरी मे कल्पना कर सकते हैं? क्या? आदमी उस बाल-कोठरी
 म रहता हुआ भी निर्दोष था? इसकी सम्भावना नही। निश्चय नहीं।
 नहीं ना। मेरा तब ही दर हा जाणगा कि निर्दोषिता का दा स्थिति म
 गड्ढा दिया जाए कि वह कुजडा होकर रहे मैं इस परिस्थिति को
 एक क्षण के लिए भी स्वीकार करने को तयार नहीं। इसके अनिश्चित
 हम किसी की भी निर्दोषिता का दावा नही कर सकते हैं यद्यपि निश्चय
 क साथ हरणव क लोग ही पापका अवश्य कर सते हैं। प्रत्येक व्यक्ति
 दूसरी क पाप का भागी हा जाता है—यही मरी आस्था है और यही
 मरी आशा।

गल मानिए आप घम उमी समय गुमराह हा गते है जयव आदमी
 को उद्घाटन करन गमत है और उनका उपलब्ध दो रगा है। पाप
 का गुजन करने या दण दन क लिए ईश्वर ही आवश्यक्ता नही। हमारे
 गह्वर मानव ही शत्रु लिए काफी ह हमारी गहायता क साथ। आप
 नयामत की बान कर रहा थ। मुझ अनुमति द कि मैं मात्र दो पर
 हर्नू। मैं उमर लिए दूहाकर दन्तार कसेगा क्याकि मुझ उत्तम ख्याल
 बुरी चीज का ख्याल गिरा घरा है—मनुष्या क निजय का। उनर लिए

काद परिस्थिति अपराध की गुना घटाती नहीं, वहाँ तक कि मनप्रेरणा भी अपराध टहराये जाती है। आपन कम-से-कम धुक्ने वाले बन्दी-गह की बात तो मुनी हा होगी। इनका निमाण एक जाति ने हान ही म किया था, यह मिद्ध करने के लिए कि वह पृथ्वी पर अप्रत्यक्ष जाति है। चारों तरफ दोनारा से घिरा एक बक्का, जिसमें कभी बिना हिने डुल सड़ा रह सकता है। मामट के उस कोष्ठ में जो ठस दरवाजा उसे बन्द करता है वह ठाड़ी की उँचाई तक का हाना है। इसलिए मिद्ध उसका मुह लाना रखा है और ऊपर से निचलन हुए हर जेवर मुह भर के लम्बे ऊपर धुक्ना जाता है। बंदी चारों तरफ से घिरा हुआ अपना मुह पात्र नहीं सकता—हानाकि उस अपनी आँख बन्द कर लेने की इजाजत रहता है। यह, मरदान्त मानव की मजता है। इन श्रेष्ठ इति के लिए उँगे ईश्वर की आवश्यकता नहीं पड़ी।

मा क्या ? इश्वर का एवमाय उपयोग होता निर्दोषिता की प्रति-भूति करना और मैं धम को इस दृष्टि में देखता हूँ जो वह पुनर्दि का एक महान कागजाना हो। कुछ दिना के लिए या भा—बनन तीन वष के लिए। तब उस धम कहकर नहीं पुकारा गया था। तब से माबुन की कमी हा गई है हमारे चेहरे गन्द हैं और हम एक-दूसरे की नाक पात्रने रत हैं। सब मूढ़ हैं, सब दण्डित आदम हम सब एक-दूसरे के ऊपर धुक् और बन्दी कर लिखन ड्ड की कान कोठरी में पहुँचने की। हर आदमा की चपटा रहना है कि मजम पहने थक मके बस। मैं आपका एक बड़ा रहस्य बताता हूँ, मर प्यार लान। क्यामत का इल्लशर मत कीजिए। वह तो हर राज आती खनी है।

नहीं काँद वाल नहीं। इस बाहियान उमन का बज्रहम मैं कुछ काँप रहा हूँ। हम तट पर पहुँचने ही वाले हैं कीजिए, आ गए। पत्न धार। परजगत् ररगकि मरी प्रायना है और घरतक भर भाय पत्न धारि। मुझ और बन्त बन्त का है। जरी गगना ही तो मुक्ति होता है। बहिए, भाय जानत हैं हम, जिनके बार में गायद हम दाग भाय जात रह

हैं कि उस सलीब पर क्या चढ़ाया गया था ? उसके अनेक अनेक कारण थे । किसी भी व्यक्ति की हत्या के मदा अनेक कारण रहते हैं । उसके विपरीत, उसके जीवित रहने का अधिकृत्य प्रमाणित करना असम्भव है । इसीलिए पाप का परोकार ता हमेशा भिन्न जाते हैं और निर्दोषता का कभी कभी ही । लेकिन उन कारणों ने अलावा, 'ता हम पिछले दो हजार वर्ष से समझाए जाते रहे हैं उस भीषण यथणा का एक प्रधान कारण और भी था । मालूम नही क्या उस इतनी सावधानी से निपाया गया है । असली कारण यह है कि यह जानता था कि वह पूर्णतया निर्दोष नहीं है । जिस अपराध के लिए वह दापी ठहराया गया था अगर उसका भार उस पर नहीं था तो भी उसने और दूसरे अपराध तो क्या ही थे—चाह उसे मालूम भी न रहा हो कि कौनसे । क्या सच में वह नहीं जानता था ? आखिर वही तो भूल में था । उसने निर्दोषों की कम-स-कम एष हत्या के दार में गुनाही हागा—जूझिया के बच्चा की हत्या, उस समय जब कि उनके माँ-बाप उसे सुरक्षा स्थानों ले जा रहे थे । वे बच्चे उसकी बजह से नहीं मरे तो क्या मरे ? वे खून से सने सिपाही के दा टुकड़ा में काटे गए गिरु । पर मान ल कि वह यसे ही था जसा कि हम समझते हैं ता मुझ विश्वास है कि वह उह मुता नहीं सकता था । और रही उस उदासा की बात जो उता हर काम में दीवानी थी क्या वह उस व्यक्ति का अनिर्वास निपाती थी था जिस हर रात रोना की आवाज अपने बच्चा के लिए रोती हुई और हर प्रकार की सावना अस्वीकार करती हुई गुनाही पाती था । वह आनाकार रात का और दता था रात अपने बच्चा का पुनरावी थी जो उमना बाह में मारे गए थे और वह समय जामित थी ।

उस रात का जाना हुआ जिसका वह जानता था मनुष्य की हर बात में परिचित—आह कौन था विश्वास करता कि दूसरा का मरने दना गान मरने का आना अन्तर अपराध है । निम्न रात दो निर्दोष अपराध का सामना करने हुए उता निम्न भय में चले रहना कठिन हो

गया। मेहनत था कि इस दगा का धन कर दे—प्रतिज्ञाद न कर मर जाए ताकि वही अपने जीविन रहने वाला न बचे कटी धीर चला जाए जहाँ शायद उस मायता प्राप्त हो सके। उसका ममथन नहीं किया गया, उसने गिकायत की और आगिरी चीज यह हुई कि उस दापी टहराया गया। हाँ, मैं सोचना हूँ शायद वह तीसरा इवेंजलिस्ट या जिमने उसकी गिकायत को पहले पहल दवाया था। 'तूने क्या मेरा माय छोड़ दिया है?'—यह बिद्रोह का स्वर था या न? 'तो चनाओ कची।' आप इतना समझ लीजिए कि स्कून ने अगर कुछ कहा न होता तो शायद किसी का उपर ध्यान भी न जाता, मर जो भी हो उसका इतना महत्त्व तो न ही होता। इसी तरह नियन्त्रण जिसे वर्णित करता है उसी का स्वयं पुकार-पुकारकर विनापन करता है। समार की व्यवस्था भी इसी तरह व्यथन है।

कुछ भी हो निर्णय अपराधी के लिए चलने रहना अमम्व हो गया। धीरे मैं जानता हूँ दोस्त कि मैं कह क्या रहा हूँ। एक समय था जब मुझ किसी एक क्षण जरा भी पना न हाता था कि मैं दूसरे तब कमे पहुँचूँगा। हाँ आदमी इस मसाह म मुझ छेन सरना है प्रम का स्वाग कर सकता है, अपने सह-मानव को यातना देमकता है और कबल बुनाई की सलाई चलाने चलाते पचोमी की निगा कर सरना है। पर बिन्हा मसाह म चलने रहना सिर्फ चरत रहना ही एक अति-मानवीय काय हा जाता है। और वह अतिमानव नहीं था, आप मरा जान मानें। उसने अपनी यत्रणा पुनारकर बनायी और इसीलिए मैं उस प्यार करता हूँ मेरे मित्र उस जो बिना जान ही मर गया।

दुर्भाग्य यह है कि वह हम अपने छोड़ गया चलने रहने के लिए कुछ भी हाता हो चलते रहने के लिए तब भा जब हम 'लिटल इव' की कान-बोडरी म गिरफ्तार हा—अपनी नाफ मे यह सब जानने हुए जो उसे मालूम था पर उसने जो किया उा करने म अयाय और उसकी तरह मरने म असमय। स्यामाधिक था कि नागा न उसकी मृत्यु स

कुछ मवल पाा की चप्टा की। आगिर हमस यह कहता तो एर रिल
क्षण बुद्धिमत्ता की बात थी कि “तूतना तो निश्चय है कि देगन म तुम
सुन्दर नहा हा। मर हम इसमे अधिक न जाएंगे। मर-कुछ एक धार
ही मलीब पर समाप्त कर देंगे। पर अब तो बहुत ज्यादा लोग सनाव
पर चल्ते नग हैं, ताकि दूर दूर से दगे जा सक—चाह यह भी हो कि
जा वहाँ तनी नर म है उस कुछ रीतना ही पड। उहुन ज्यादा लोगों ने
यह निश्चय किया है कि बिना उतारता के काम चलाएंगे ताकि दान
गीन हा सकें। चाह कितना अयाय, कितना धार अयाय उमके माय
निया गया है। दिल पर चोट लगती है।

घोष कितनी रासाती में आत्मी अपनी लीन पर खीट जाता ट—
मै ना बिगुन बचनरी मे भाषण नेन के बरीब पहुँच गया। मुक्त क्षमा
कर और ममकृत कि हमने पाछे कारण ह। यहाँ मे दो चार मोड प्राण
एक सप्रधानय है जिसका नाम है ‘अटारी म हमारे प्रभु। उस समय
उम अटारी म कत्र की क्याकि यहाँ ब तहयाना म पाती भरा रहता
है। पर आज—आप निश्चिन रह—उनक प्रभु न अटारी म है और
न तहयान म। उहाने उह उठाकर पिणायक की कुरसी पर रिटा दिया
है अपन मा के अन्तराल म और के आपात करत हैं। सखन प्रडी बात
तो य कि ये निणय करने है उनक नाम पर। उहनि मृन्ता से स्वरिणी
न परा था और मै तुक्त भी दाप नही दता। पर उमसे क्या, के तो
किसी का तहा द्यन्त सखको दापी ठहरात हैं “प्रभु क नाम पर य
ना जा तुम्ह मिलना चाहिए। प्रभु? उन्नि मरे नाम, इतन का
माना नही की था। यता कवल चाहते थे कि लोग उन्हें प्यार करें यम
और कुछ नहीं। बात है एग नाग जा उह प्यार करते हैं ईगाइया
म भी हैं। पर उनकी गया बहुत तहा है। उहाने ना यह भा नान
निया था उनम हंस ला ता क्षमा थी। पीटर जानत हैं आप उम
बायर उम पीटर न उन्हें असाधार लिया “मै तही जानता म
व्यक्ति को मै नही जानता तुम क्या कर रहे हा आदि आदि।

सबमुक्त वह भीमा का पार कर गया था। और मेरे वे मित्र शब्दा में उक्त हैं 'तुम पीटर हा और नी गिना पर मैं अपना गिरना पर बनाऊंगा। व्यस्य इसम आग नहीं जा मन्ता था नहीं साचन आप ? पर नहा विन्य नहीं का होता है।' मुनिण न्हति कटा था। उन्होंने कटा था निचय ही वह प्रश्न की पूरी जानकारी थी। और फिर वह हमारा व निश्चये गए, उन्हें छोड़ गए निगय और निन्दा करने के लिए आग पर क्षमा और मन में दर्प के भाव निग हुए।

यत् नहा कटा या सक्ता है कि कम्पा नेपनही है अर नहीं हम उसही बात कर्त सकते नही। वन नना हो है कि किमी का भी निर्दोष नहीं माना जाता है। निर्दोषिता के शब्द के ऊपर निणायक मडराने हैं, हर प्रकार के निणायक प्रभु के नाम पर निग्न करने चान और प्रभु का न मानन जाने—ना वाप्नव मए—म ही हैं निटल री की काल काठरी न पट्टेकर धुन मिन जाउ हैं। क्याकि मारा बाप आस्पावाना के मर्य नहीं मर दना चालि। दूसरे भी वनम गामिन हैं। आप जानत हैं अग गटर म एक मवान की तिमन न्काई रत्ता था, क्या गनि हूह ? पागनगता बन गया है वन। हाँ, यह सामान्य प्रभाव है और उन्नीडन। हम भी स्वाभाविक ही है कि वन पट्टेचन पर ग्राह्य हा। पापन ता यत् दन ही निमा है नि नें मुक्त छोन्ना नहीं और रती आपकी मो में जानना न नि आप म। नी तरत् भाचन हैं। अतः क्याकि हम सब निणायक हैं इतिहास हम सब एक-दूसरे के मामन लाया है, अपने आदर डा न मर मगीहा है एक व गान एक नवीव व नरनाह हुए और हमारा बिना जान न कि क्या। और उनीर पर ता हम जाना ही था अगर मैं कमजोर मैं गन गान न्क निवाचना, एक-आध हन मर्य भनन

नहीं नें न्क र्हा नें मर गान, हरिए नहा। उनके अनावा मैं आपका गाय ध्यान वन है, क्याकि मर नरनाह पर पट्टे व गन हैं म। अवनपन म और अनाद के क्षण म आदमी का प्रवति अपने का

पगम्बरसमभन भी हो जानी है। सब-मुछबह चुकने के बाद यही तो मैं हूँ भा, पत्थरा के बोहर के और स्थावर जन के रेगिस्तान में गरण सिये हुए—पुरे जियों के लिए एक मोमला पगम्बर मसीहा के बगर गलाहजा बुलार और गरान में भरा हुआ पपूर्ण समे हुए इस दरवाजे पर पीठ देने, घिरे हुए आवाज की ओर उंगली उठाए, उन सम्भार बिहीन व्यक्तियाँ पर अभिगाथा की भीछार करना हुआ, जो निणय महन नहीं कर पाते हैं—क्याकि वे नहीं महन कर पाते हैं, परम प्रिय मित्र और यही तो सारा प्रश्न है। जो किसी विधि में धारणा रखता है वह उन निणय से घबराता नहीं जो उसे उगवे समुचिन स्थान पर रन लेता है। तेसी व्यवस्था के अनगत जिसमें उनका विद्वान है। पर मनुष्य का नीपगनम यातना पहुँचती है जिना किसी विधि के निणय पाते हैं। हम उसी यत्रणा की भोग रख हैं। अपनी प्राकृतिव बरणा के अभाव में हमारे निणायक जो कि खुदे छाड़ सिये गए हैं वेनहाना प्रयत्न पाम निपटान जा रहे हैं। इसलिये हम उनमें खादा तब बढना है है न ? और यह धावर्द्ध पागनगाना है। पगम्बर और भीम-हसीम गाना में बढन जात हैं, व जगत् से कोई उत्तम ज्ञानून या कोई न्यायीन व्यवस्था नकर वही पहुँचता ज्ञान है। सत्ता के रिक्त हो जान के गहल। भाग्य रण में आ गहुषा। मैं हूँ आदि और घात के विधि की घोषणा करना है। गान में अनुतापी निणयिक हूँ।

होना मैं वन भागना बताऊंगा कि इस अष्ट व्यवसाय के अनगत यमाना है। भाग परमा जा रहे हैं इसलिये हम जानी है। मरे पर आशाना अर्थात् तीन बार घनी नीत्रिणा। भाग वेरिन बापन जा रहे हैं ? गरि बढन दूर है गरि बढन गुप्त है मैं उगे नूना गही हूँ। तब ही मीमम में उगरी मोमनी-बनाया की मुभ माँ है। स्त्री और गढगजनी हूँ मध्या घात में गाली गडी लूना व उतर उतरना है नगर गगनगाना है गाना माना पीछे का महन मगनी है। तब मैं गडाना पर पूजा करना था। ये धर्मी भी घुमन है मैं जानता हूँ। य समने है

श्रान्त भाया और कड़े अनुशासन में व्यवस्थित घर की आरंभिकी में जान का बहाना करते हुए—आह मर दास्त, आपकी मालूम है वह जीव बना जाता है जो उड़-बड़े गहरा में अनेक धूमना करता है ?

मुझे गरम मानूँ होती है कि आप आये हैं और मैं विस्तर में पड़ा हूँ। कुछ खास नहीं है थोड़ा-सा बुझा है जिसका इनाज मैं 'जिन' गराव में बंधा हूँ। मुझे इन दोस्तों की आदत है। मरिया है मेरी ममम में मुझे तब ही गया था जब मैं पोष बना था। नहीं, मैं तो या ही मजाक कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ आप क्या साच रहे हैं मेरी बातों में सत्य और असत्य का सुनझावर अलग करना बहुत मुश्किल है। मैं मानता हूँ आप ठीक ही सोचते हैं। मैं स्वयं एक व्यक्ति का मैं जानता था या मानव-जाति का तीन उगों में बाँटा करता था—वे जो यह समझते हैं कि झूठ बोलने पर धाँध होनी चाहिए यह बेहतर है कि छिपाने के लिए कुछ ही ही मैं दूसरे व जो झूठ बोलना पसंद करते हैं, हमारी अपेक्षा कि छिपाने को कुछ भी न हो और अन्त में वे जो शोनी ही पसन्द करते हैं झूठ बोलना भा और छिपाकर रखना भी। अब आप ही तय कर लें कि मैं किस वर्ग में शामिल होना चाहूँ।

पर मुझे क्या परवाह ! क्या असत्य अन्तर्गतता मत्त तक नया पहुँचाना ? और क्या मेरी सांगी गाथाओं में सत्य हो या असत्य, एक ही निष्पत्ति की ओर उगित नहीं करती ? क्या उन सबका एक ही अर्थ नहीं है ? फिर हमने क्या कि वह सत्य है या असत्य यदि जाना ही स्थिति या उसका मद्देनजर बनाने में है कि मैं क्या रहा हूँ और क्या हूँ ? कभी कभी मत्तवाणी की अपेक्षा असत्यवाणी के मन में भाव नाना उदात्त सामान होता है। मत्त प्रमाण की तरह चौंधिया जाता है। हमारे विपरीत असत्य एक सौम्य धूमने की तरह है जो हर चीज का उभाकर नामन कर जाता है। मर आप जमे चारों तरफ एक बनी-निबिड़ में

मरा नाम पोप रखा गया था ।

बठ जाइए मन्त्रवानी में । आप कमरे का परीक्षण कर रहे हैं ? बड़ा खाती-खाती है पर साफ है । वरमियर की किसी कलाकृति के समान फर्नीचर और नाम्न पात्रों में रहित पुस्तकों में भी रहित, क्योंकि काफी दिन हुए हैं पटना छांट दिया । एक समय था जब मरा घर भय-पदी किताबों से भरा रहता था । यह उनकी ही चाहियत चीज है जिनकी उनकी भावना जो 'फामाया का एक टुकड़ा बाट लेते हैं और जारी पिकिया देते हैं । जो भी हो मुझे स्वीकारोक्तियों के अलावा और किसी के लिए रुचि नहीं रही और स्वीकारोक्तियों के लेखक पास पस पस से लिखते हैं कि सच्चा स्वीकरण बचा जाए, जो वे जानते हैं उसने घर में कुछ न बनाए । जब वे कष्टप्रद स्वीकरण के समीप पहुँचने का दावा करते हैं तो भावधान होना पड़ता है क्योंकि तब व गन का टगार करम बनने हैं । विश्वास कर आप मैं खूब जानता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूँ । इसीलिए मैंने उन्हें कर दिया । १ बाइ किताब न और कोई बनार चीजें मात्र आनन्द्यता की वस्तुएँ स्वच्छ और समरती हुई जम ताहून । इसके अलावा यहाँ पसल इतना सख्त इनकी निष्पन्नक वादर इतना तो आत्मीयता की भर जाना है जैसे कफन में लपेटा हुआ हो पावनता का लय लगाय हुए ।

आप यह जानने के लिए उद्युक्त हैं कि मैंने पोप बनकर क्या-क्या कारनामों किये थे ? कुछ भी असाधारण नहीं था तब मानिए । क्या मुझमें इतनी गहरी शक्ति होगी कि मैं आपका बना ताहूँ ? हाँ बुगार उत्तर रहा है । व गन बहुत पुरानी बात है । अफावा में लिट्टी मिस्टर रोमेन की कृपा में मुझे हाँ रहा था । मैं उसमें फँसा नहीं था घरराइत नहीं । मैं तो यूरोप के मुझे ही सब लिखता था । गतिधारण हुआ तो था पर मैंने तब सटार्ड नहीं दमी । एक तरह से मुझे उतना पता था है । आप यह धृष्टि बहुत गाँधी में परिवर्तित था । आगामी मना का मार्ग पर मरा आवश्यकता नहीं थी, उमा ता बनने पाछे

गहन म दिखा उन की मुझसे माय की थी। कुछ दिन बाद मैं परिम
 वापस पहुँच गया जमना के बीच। मुझ प्रतिगद्य आन्दोलन न आरंभित
 किया उसके बाद मैं जाग जगना उमी नमय चला करने को थ जब
 मुझे नका जान हुआ कि मैं दग प्रेमी हूँ। आप मुझकरा र है? आप
 गतनी पर हैं। मुझ यह जान मने के गलियारा म हुआ था गहने स्थान
 पर। एक कुत्ता गलियारों की भूत भुलया म पहुँच गया था। बड़ा-सा
 झरने वाला वाला एक बान ऊपर को उठाए, हँसती हुई धावें निय
 वह छान जान बावों का टीनों मूषना कुछ रटा था। मुझ बहुत पुराना
 और बहुत म्यायी प्रम कुत्ता के लिए रहा। मैं हूँ हमलिया पमद
 करता हँ क्योंकि वे मेगा गमा व देन हैं। उमे मैंन आवाज ही। व
 मजाव मे छिया। स्पष्ट ही मैंन उस जीत लिया था। मुझसे कुछ गत
 माग उगातूवक अभना दुम जिताना हुआ कहा हो गया। सभी एक
 युवा जमन निपाही छता म वदम बगता हुआ मर पाम म गुजरा। कुत
 क पाम पहुँचकर उमने समक अबरे सिर पर हाथ परा। नि मकाव वह
 पगु उतने हा म्या व जाय कदम-न-नदम मिताना हुआ भरी आत्मा
 म आभन हा गया। विद्वप और नीच गाम के आ भाव जमन निपाही
 क प्रति म मन म उठे उनन माकू जालिर हा गया कि मने प्रतिश्रिया
 म प्रम म प्रतिश्रि थी। अगर कुत्ता किसी धामीमी नागरिक के माय
 चना जाना ना मैं ध्यान भी न रता। पर मैंन उस स्थानाम कुल का
 जमन मना के माय चिह्न क रूप मे बलना की और जमम मुझे बहन
 गाना जाय थाया। इन परीक्षण प्रामाणिक मिद हुआ।

मैं दक्षिण-पश्चिम पहुँचा म उह म कि प्रतिगद्य आन्दोलन के
 बार म पता लगाऊँगा। पर वही पहुँचकर और पना लगान पर मैं
 मराव कर गया। वह उजाग मुझ का पातन-मा नका—एक गद
 में बड़े ना गमाटिक। मैं माचता हँ कि मूल जाय कस्ता के ना मेर
 स्वभाव के हा अनुभूत या और न ऊच-दया ना मने मुझे
 एसा लग कि मुझा का आ रहा है किना ०६

पर बुनाई करता रहे—रात दिन लगातार, जब तक कि किसी जगह से लड़कन के लिए कुछ दानक न आ पहुँचे और मेरी बुनाई उधेड़कर मुझ घसीटते हुए दूसर तहाने में न ले जाएँ जहाँ भार-भारकर मेरा दम निकाल दे। जो उस रमातली बीरता में भाग ले रहे थे मैं उनकी सराहना तो की, पर उनका अनुकरण न कर सका।

पिर मैं समुद्र पार कर उत्तरा अफ्रीका पहुँचा। मैं कुछ घस्पल्ला मा उद्दयल्लादा पहुँचने का था। अफ्रीका में स्थिति साफ न थी। दोनों प्रतिराधी दल समान रूप से मेरी दृष्टि में सच्चे उतरते थे इसलिए मैं मलग तिनारे खड़ा रहा। आपसी चेष्टाओं में मुझे लग रहा है कि आपसी शत्रुता में बहुत जल्दी-जल्दी इन जानों का पट्टे जा रहा हूँ जिनका कि कुछ महत्व हा शक्यता है। पर यों वहे हम कि आपसी सच्चा मूल्या बन करके ही मैं जल्दी कह रहा हूँ ताकि आप इन जानों पर ज्यादा ध्यान न दें। जा भी हो, मैं ट्यूनिशिया पहुँच गया जहाँ एक स्नेही मित्र ने मुझ कुछ काम दे दिया। वह मित्र एक बहुत बुद्धिमती महिला था जो किम व्यवसाय से सम्बन्धित थी। मैं उनका पीछे पीछे ट्यूनिशिया पहुँचा पर उनका घरानी घाघा अनजोरिया में मित्र राट्टो के उतरने के बाद वह तिनों तक पता न लगा पाया। उस दिन जमानो ने उन्हें बन्द किया और मुझ भी तिनो तिनो उद्दयल्लादा। मुझ नहीं मालूम उन महिला का क्या हुआ। रहा मेरी सो मुझ ताई जानि नहीं पहुँचायी गई और मैंन काफी परतानी के बाद जाना कि मुझे बंद करना मात्र सुरक्षा के हेतु था। मुझ टिपात्ती के पास गया तिविर में नजरबंद रखा गया था ताई हमने अत्याचार का अन्वेषण ध्यास और तारिदिय में ज्यादा ध्यान पाया। उमरा वषात में नहीं धरोगा। हम जो इन ग्रथ जानात्ती के आत्मज हैं, हम एम म्याना की वषात परतन के लिए किसी जाने की आवश्यकता नहीं पटता। जो वषा पहले लोग भीना और वना के बारे में भाव विभार हो जाने थे। आज वषा-काष्ठ ही हमारी कविता है। इसलिए मैं आप पर आशा रखता हूँ आपका कुछ ही जाली मोती जानें जाइनी हागी—

गन्धो, मिर पर सूँझ, मक्खियाँ और पानी का अनाव ।

मेरे साथ एक युवा फ़ानीमी या तो आग्यावान था । हा बगल
या परी-बना-सी है डूबना की तरह ही हो गयी । वह मुँह करन के
लिए नाम की सीमा पार कर स्पन पहुँचा था । वहाँ अचानक अनग
न उन अन्दर कर दिया और यह देखकर कि प्रहो के शिविनों मे
बिब-भार मठरी का ही रोम का आगीर्वाद प्राण है उन घर विपाद
हा था । न तो अफीका आकाश ही नहीं वह उमर बाद पहुँचा था
और न शिविर का अक्काश न। उन विपाद मे उनका नाम टान म
मनय हुआ । उसने चिन्तन न श्री नूरज ने भी, उन कुछ-कुछ शिविन
कर दिया था । एक दिन जब हम जेज अन्दर थे नमम म माना दिपना
हुआ सीमा बू रहा था । हम दस-बाराह अदना मक्खियाँ के बीच पड़
होकर रहे थे । उनमे पाप के विच्छेद जिने वह राखन कहकर पुकारना था,
अदने विपास गद-बाण छाटना शुरू किया । उन हमारी तरफ, अपनी
एक हफ्त की बड़ी शान के ऊपर मे पापना की तरह घरकर देना ।
कमर तक गया बदन पमीन म अचानक, अपनी ठमरी हुई पम्पियों के
कुली-कनक पर उनमे उठानियाँ बगना शुरू किया । उनमे हमारे सामने
पापना की कि एन नय पाप का आद-नकना है जे दोन गीना के बीच
रह न कि मिहामन पर बैठकर प्रभु का नाम जब, और जिन्नी ही बला
यह हा मने उनका ही अच्छा हा । उसने अपना सिर हिलाने शुरू उनका
भी नन्हा नहम पूरा । हा, उनने फिर कहा जिन्नी, नी मन्तर
हो सक उन्नी नहीं । फिर वह सदा गान हो गया और ता मन्तर
म शोना कि हम पाप के स्थान पर अपने हा नीव म न किया का खुन
में उसके मा अद-पा और गुणों के साथ एक सम्मूह पुण्य को कुने और
उस पर निष्ठा करने की सपथ लें बवल उस मन्त्र कि वह हम बाण
पर राखी हा कि अपने अन्त म और दूसरा जे अदर हमारी बदन-पा
का नाति का जीवन्त रमना । उनमे पूरा, "नमम म विच्छेद अन्तु
मनम अधि- है ? मन्त्र म मैं अपना हाथ उठा दिया और अब मैं

ही निकला जिनमें अपना हाथ उठाया था। "ठाक है, जॉन्सपटिस्ट ही सही। नहीं, उसने एकदम यह तो नहीं कहा, क्योंकि उन दिनों मेरा नाम दूसरा था। उसने यह घोषणा की कि अपने का नाम बदलकरना जिस प्रकार कि मैंने किया था, महानतम गुण की भी पुनः-कल्पना कर लेना है और इसलिए उसने मुझ निर्वाचित करने का प्रस्ताव रखा। दूसरा न भी हूँ मैं ही मान लिया पर उनकी हँसी में गम्भीरता का कुछ पुट था अवश्य। सच तो यह है कि डुगेकला ने हमें प्रभावित किया था। मुझ लगता है कि मैं भी कबल मजाक ही रही कर रहा था। पहली बात तो यह है कि मेरा विचार था कि हमारा यह झूठा सा पगम्बर सही कह रहा है और फिर मूरज का बड़ी धूप, पस्त कर देन वाला बठोर धर्म पानी के लिए मध्यम—हमारी दगा कुछ बहुत अच्छी नहीं थी। जो भी हाँ मैं अपनी धर्माध्यक्षता कई हफ्ता तक चलायी, निरन्तर बढ़ता हुई गम्भीरता के साथ।

उसमें था क्या-क्या? मैं एक प्रकार का दल नेता 'रा' था 'सम' का मंत्री की तरह। दूसरा की उनकी भी जिन्हें आस्था नहीं थी, जन्म भी हो मेरा आदेश पालन करने की आदत पड़ गई। डुगेकला को बेचना भी मैंने उस बेदना का उपचार किया। तब मैंने जाना कि मैं जितना आसान समझता था पाप बनना उतना आसान नहीं है, और कल ही मुझे यह बात याद आई उस वक़्त जब मैं अपने भाई निनायका के बारे में इतना चक्कर लगा रहा था कि निबिन्स में सबसे बड़ी समस्या थी पानी का बँटवारा करना। दूसरे दल राजनीतिक या साम्प्रदायिक बन गए थे और हर एक अपना अपने साधियों के पक्ष में था। परिणामस्वरूप मुझ भी अपने दल के साथ पालन करना पड़ा। अन्त में इसी विघाटन में हुई। अपना दल के भीतर भी मैं पूरी समझौता नहीं रख पाया। अपने साधियों की जगा के या जा काम उठ करना पड़ना था उनका, घुमार बसा एक का साथ बसा दूसरे के साथ विभाजित कर देना था। साथ विनाश कर एक प्रकार के भेद भाव का बहुत दूर तक प्रभाव

पढ़ता है। पर निश्चय ही मैं 'ग' गया हूँ और उन दिनों के बारे में अब माचना नहीं चाहता। इतना ही कहूँ कि उस दिन मैं चरम सीमा पर पहुँच गया जिस दिन मैंने स्वयं एक भ्रमणासन माथी के हिस्से का पाना पी लिया। नहीं-नहीं, वह डुगेना नहीं था, वह तो तब तक मर चुका था—शायद इसी वजह से कि वह अपने प्रति बहुत कजमी बरतता था। इसके अलावा अगर वह जाना तो उसके प्रति स्नेह के कारण मैं ज्यादा दूर तक अपने को राख रहता, क्योंकि मैं उससे स्नेह करता था—हा, मैं उससे स्नेह करता था मुझे लगता तो कम-से-कम ऐसा ही है। पर मैंने पानी पिया, इतना तो निश्चित है, अपने का यह विश्वास दिलाते हुए कि दूसरों का उसकी अपेक्षा मेरा ज्यादा उच्चतर है। फिर वह तो किसी भी हानि में मरा ही जा रहा था और दूसरों के लिए अपने का जिन्ना खतना मेरा वतव्य था। इस प्रकार, प्रिय मित्र माम्राज्य और सम्प्रदाय मरण मान्य के अज्ञान जन्मत हैं और मैंने कर ना कहा था उसका कुछ गोपन करने के लिए मैं आपका अपना वह महान् विचार यथाज्ञा जो वह सब कहते हुए मर मन में उठा और जिसके विषय में मुझे अब निश्चय नहीं है कि वह अनुभूति थी या स्वप्न। मेरा महान् विचार यह है कि मनुष्य को चाहिए कि पाप का क्षमा कर दे। पहली बात तो यह है कि क्षमा का सबसे अधिक आवश्यकता उसी का है। दूसरा यही एक तरीका है उसमें ऊपर अपने का स्थापित करने का।

आपने दरवाजा ठीक से बंद कर दिया था? हाँ। उरा अब नाचिए मेहरवानी में। माफ करें मुझे मैं चिटक्की-ग्रियस पोडिम हूँ। ठीक माँग लगने के समय मुझे यह नहीं याद रहता कि मैंने चिटक्की लगाई है या नहीं। और हर रात उठकर मुझे दर्जना पड़ता है। जमा मैंने भारी बनाया है आदमी को किसी बात का निश्चय नहीं हो सकता। यह माँ गोविण्डा कि चिटक्की के बारे में यह परमाणी एक महम हूँ गन्ध का प्रतिनिधता है। दोन दिनों में मैं न अपना घर बंद करता था

और न अपनी मोटर। मैं अपनी धन नींवत को ताल में नहीं रखता था जो मरा था उममें मैं चिपका नहीं रहता था। सब तो यह है कि किसी भी चीज का स्वामी होने में मुझे गम लगती थी। सामान्य बात चीत के दौरान मैं बैठ उठता था, गम्भीरता से कि 'सम्पत्ति राजानी हत्या है। इतना बड़ा नित न रखते थे कारण कि अपनी सम्पत्ति गुपात्र निधनों के साथ बाँट लूँ मैं उसे अनन्त चारा के प्रति समर्पित कर देता था इस भाँति से कि अयाय का मयोन स ही सही, परिणोष कर सकूँ। और आज मैं किसी चीज का स्वामी नहीं हूँ। इसलिए मुझे अपनी सुरक्षा का खयाल नहीं है। मुझे मयारा अपना है और अपनी मा स्थिति का। उतमा ही मैं उतमुक हूँ अपने उस धिर हुए घाते न मयार का पट बन्द कर देन के लिए जिसका कि मैं राजा हूँ धर्म व्यक्ष हूँ और निर्णायक हूँ।

नर आप कृपा करके क्या उस आत्मा की का खाल में ? हाँ दिया उम चित्र को। आप नहीं पहचानते ? यह है कि जस्ट जजेट'। आपका अचम्भा नहीं होता ? क्या सम्भव है कि आपकी सस्त्रुति ममुछ द्वारा रह गई है ? पर अगर आप अगवार पक्षत रहे हाँ सों आपकी या होगा कि १६ ४ मं गों के सट-यवन गिरजाधर म देन आदय के मुप्रसिद्ध बनी मित्र कि लोपेगन ऑफ दि थम्य के एक भाग की चोरी हो गई थी। उस भाग का नाम था कि जस्ट जजेट । उसमें निर्णायकों का घोड़ों पर सवार पुनीत पशु की आराधना के हेतु प्राप्त हुए चित्रित किया गया था। क्याकि मून कृति बनी मिली नहीं उसी स्थान पर एक उत्तम प्रतिनिधि रम दी गई थी। यह है वह मून कृति । गद्दी मरा उमम काई हाय नहीं था। मकिनको गिटी का चकार काटन वाल एक आत्मी न—आपने उस नाम को उम देना था—वनमानुष के हाथा गरावकी एक बोस के लिए गय रान बटून पीवर पसना वेच दिया था। मैं न पहन अपने मित्र का राय दी कि उमे किसी बड़ गम्मान के स्थान पर लटकाए और धटून कि नत्र जय हमारे निष्ठायान निर्णायकों की लोन

सार सत्कार में मची थी, वे 'मिक्सर मिटी' में गरमिया और दाना व ऊपर प्रतिष्ठापित बठे रहे। फिर बनमानुष ने मरी प्रायता पर उन्हें यंत्रों पर सरक्षण म रख दिया। आड़ी धानाधानी की उमर पर ज़रमैन उन दान समझायी तो डर गया। तब म ये आदरणीय निणायक मरे एक-मात्र मायी हैं। 'मक्सिका सिटी' में गरम की आन्मारी के ऊपर आपने देखा था वे कसा खानीपन टोड आए हैं।

मैन चित्र का वापस क्या नहीं किया? आहो, आपकी प्रतिष्ठिता ना पुलिस दाना जसा है? हाँ, वरत तो मैं आपका बमे ही 'तर दूगा' म सरकारी बकीर का देना, आरकभी किसी का व्यान भी जाना कि मर कमर म इस चित्र को शरण मितो हानी। पहली दान तो यह कि यह मेरी सम्पत्ति नहा है जन्म 'मक्सिका सिटी' के स्वामी की है जो कि उसका अधिकारी हान व लिए उनका ही माय है जिनका मा के प्राच विप। दूसरी दान, नि जालाग 'एडरगन मॉफ़ दि लम्ब' क मामन स गुत्रते हैं व भूत कृति और प्रतिनिधि में अन्तर नहीं बना सकत इसनिम मरे म दुराचरण मे किसी का हानि नहा पहुँचनी। तीसरी दान यह है कि इस प्रकार में महिमा-मणित है। कृतिम निणायक पूज जान क लिए ससार के सामन रख गए हैं और अननी म वरल में ही परिचिन हैं। चौथी दान, कि इस तरह कदवान बन जान की सम्मानना है और यह विचार ही एक प्रकार स आनयक है। पाचवी दान कि व निणायक 'लम्ब' मे मिलन जा रहे थे और अब कोई 'लम्ब' (या मानापन) नेप नहीं ह और क्याकि वह चतुर उदसाग जिमन, यह चित्र चुगया था, किसी अनात 'याय' का नाघन-मात्र था, निम 'याय' के माग म वापा डालना उचिन न हाना। और आखिरी दान कि इस प्रकार मर-कृत्र सन्तुलित हो जाता है। हमेगा के लिए न्याय निर्णोपिता मे अना वर दिया जाना है—एक सनीद पर चडा है और दूसरा आन्मारी म व—मर लिए अपनी धारणाया के अनुम्य आचरण करा का रास्ता साफ़ है। निमन मन मे मैं अनुनापी निणायक का कठिन घ-चा कर सकना

हैं जिसमें मैंने कितने ही अतर्विरोधों और विनष्ट आशाओं के बाद अपने को स्थापित किया है और अब, क्योंकि आप जा रहे हैं, समय आ गया है कि मैं आपको यह बताऊँ कि वह है क्या।

पहले मुझे उठकर बैठ जान की इजाजत दें ताकि मैं ज्यादा आसानी से साँस ले सकूँ। ओफ, मैं कितना कमजोर हो गया हूँ। मेरे निर्णायकों का कृपा करके बंद कर दीजिए। रही अनुनापी निर्णायक के घघ की बात सम्प्रति मैं वहीं कर रहा हूँ। आमांयत मरा दफ्तर 'मेक्सिको सिटी' में रहना है। पर वास्तविक बात तो काम करने की जगह से परे पहुँच जाता है। जिससे मैं पड़े हुए बुलार से गस्त भी मैं कायरत हूँ। उसके अलावा इस पक्ष को किया नहीं जाता, यह तो निरन्तर आदमी की हर भास में रहना है। यह न साँचिएगा कि मैंने इतने विस्तार में पाँच दिन तक जो आपसे बातचीत की है वह सिर्फ मन-बहलाव के लिए। नहीं मैं अनीत में बहुत बच-बक कर चुका हूँ। अब मेरे पास उद्देश्य पूर्ण होत हैं। स्पष्ट है कि उनका उद्देश्य होना है हँसी का चुप कराने का व्यक्तिगत रूप से निर्णय से बचने का यद्यपि कोई छुटकारा है नहीं। छुटकारा पाने के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा क्या यह नहीं है कि हमी सबसे पहले अपने आपको दापी ठहराएँ? इसलिए आवश्यक है कि पुरे में हाँ दाप का बिना भेज भाव के सबसे बड़े दो ताकि प्रारम्भ से ही उसी सधना कम हो जाए।

किसी के लिए कोई छुट नहीं प्रारम्भ से ही मेरा सिद्धान्त रहा रहता है। मैं सम्पूर्ण करना हूँ गतिविधि को आदर माय भूम को, अगाधपाना का शोष का हँका करो वाली परिस्थितियाँ को। मेरे लिए क्षमादान अथवा आमांयत दो का प्रश्न नहीं उठता। हर एक चीज को सीधे-साथ तरीके में जाह लिया जाता है और फिर 'इतना हुआ तुम कुतर्कों हो पिताच हा जम से ही असादरानी हो मप्राप्तिक व्यविचारी हा कताकार हा आदि आदि। यत, यों ही। दाने हा नये गजों में जिस प्रकार राजनीति में उसी प्रकार दान

मन्ना में उसी सिद्धान्त का अनुयायी है जो आत्मी का निर्दोषिता प्रमाण करना अस्वीकार करता है और उस आचार प्रणाली का समर्थन करता है जो उनके प्रति दापी की तरह व्यवहार करे। मुझे मेरा ज्ञान, आप दबत है गुनामी के समर्थक एक प्रबुद्ध वकील का।

। कुछ तो यह है कि गुलाबी के दाँव वाई निश्चयात्मक नहीं हो सकता। मुझे बहुत जल्दी उसका ज्ञान हो गया था। एक समय था जब मैं हमारा स्वतंत्रता की बात किया करता था मुझे यह ज्ञान के समर्थन में उन मन्त्रज की तरह गल्ट पर जाना दिन-भर उस खाना रहना और साथी-संगिनी की मर्मास्पर्श में स्वतंत्रता की मुक्ति मध्य मिला करता। उस मनमन्त्र में मैं अपने एक विराधी का धरणायी कर देता मैं उसका अपनी का आभा और अपना गुस्सा बंधु उपयोग किया। पलक पर लट्ट हुआ अपनी संगिनी के ज्ञान में मैं यह मन्त्र पुनर्पुनरा और इसी उस त्यागन में मुझे सहायता मिलना। मैं चुपके में उसे पर टरिण, मैं आकाश में आकाश जा रहा हूँ और अपना अनुत्तम खाए दे रहा हूँ। आखिर कभी-कदा स्वतंत्रता का उपवास अतिरिक्त निर्दिष्ट भाव में भी मैं किया है या आरम्भ भी—जरा याचिए ता मैं किन्ना माना था—कि दो-जानदार उसका मुखा के लिए खोजा जा हुआ, पर बाव इस तब नहीं कि उसके लिए जान दे दू। फिर भी कुछ उत्तर ना मैं उठाए ही। उस उत्तरनेपन व निरामुक्त समा मिलना चाहिए मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं नहीं जानता था कि स्वतंत्रता होद गुस्सा अथवा उदाधिना है किन्की गुणी अपने पाक मनायी जाए। नहीं वह का उपहार है या नराममिण्या का दिव्या आ एसा है कि आप अपने आँखों में रखा जाँ। भर नहीं। एक विपरीत वह ता दृष्टि अम है और पर नम्बी और एकदम एक ही और यह यवान वाला। सम्पन्न का इतिहास ना सम्पूर्ण दृष्टि में खड़े हुए आपने अभिवादा म अन्तर्निहित उठाए। एक मया वह कमर में अन्तर्निहित निगाहना के सामने का एक कटपर में खड़े

और अपने निणय के समक्ष भयवा दूसरों के निणय के समक्ष निरवय
 करने के लिए भी भवेन। सब-कुछ संस्कार स्वतंत्रता याधालय में
 मुनाया गया निणय है इसीलिए स्वतंत्रता का बाध उठाना इतना
 दुष्पर है, खास तौर से तब जब आप बुगार में पड़ हो या व्यथित हा
 या किसी से भी प्यार करने परत हा।

आह मेरे दोस्त उस व्यक्ति के लिए जो भवेता है, बिना परमात्मा
 और बिना किसी स्वामी के, दिन प्रतिदिन का बोधा भयकर हा जाता
 है। यत आदमा को कोई स्वामी चुनना ही पडता है क्याकि ईश्वर का
 भव फान नहीं रहा। उनमें भलावा उस शक्त के भव कोई भय नहीं
 रहे, उसमें भव इतना उत्तरा भी ता गही है कि किसी को धरना पहुचा
 सके। हमारे नस्तिव दासनिता का ही स सीनिए रितनी गम्भीर प्रवृत्ति
 के होत हैं—अपने पडोसी को प्यार करा बगरह बगरह। धार्मिक
 ईगाइया और उनमें भय कोई धनर नहीं है केवल इनना हो कि वे
 गिरजापरा में जानर उपनग गही देत। आपनी गय में वह क्या चीज है
 जा उत घम-परिवर्तन करने से रोवती है? सम्मान, दायद मनुष्या के
 लिए सम्मान ही आत्म-सम्मान। व अपयग नहा बमाना चाहने, सो
 अपना भाव अपने तद ही रखत हैं। एर नास्तिवतावादी उपयासपार
 का मैं जानता हूँ जा हर रान प्राथना करता था पर उसरा कुछ हुमा
 हयाया नहीं। अपनी बिनाशो में ईश्वर की कमी खबर ली उनने। क्या
 भाग लगाई है। एर लडाकू स्वात्र विचारवादी में मैं यह बात बही
 उमने अपने हाथ ऊपर से उठाए—बिमो दुभायना से नहीं, मैं
 आपराधिवाग निसाता हूँ—उपर दसलाव की तरफ 'शुभ शुभ शुभ
 नया नहीं बना रह हा,' उस वणि १ लम्बी साँम लेकर बहा, वे सब
 एगे ही जान हैं। उनमें बयतागुमार इनार घसी प्रनिगत लाव, धगर
 अपनी वृत्ति पर अपना नाम देना क्या मक तो परमात्मा ये गुणगान
 ही लिता करे। उनका कटता था कि व अपना नाम दा हैं क्याकि व
 अपने को ही प्यार करत हैं और व किसी का भी गुणगान नहीं करत

क्याकि वे अपने में घणा करते हैं। पर क्योंकि वे बिना नियम दिये रह नहा पान, उसका अभाव उपदेश दफर पूरा कर लेते हैं। अभ्येप म, उनका पिताच सदाचारा होता है। विचित्र युग है यह। कोई आश्चर्य नहीं कि जागा के दिमाग गोरखघरे में पैम गए हैं और उसमें भी नाज्जुम नहा कि मेरा एक मित्र जब वह आदम पति था ता नास्तिक रहा और धर्मिचारी बनने पर धमनिष्ठ बन गया।

आह वे ओछे दगाबाज, उरलव दिवान बाने नट, पास्तनी, पर फिर भी किन्नर करण। बिश्वास मानिए व सज करण होत हैं, उम समय भी जब दवनाक म आग लगाते हा। नास्तिक हा चाहे थड़ा स गिरजा घर जान बाने, मम्कोवाट हो चाहे वास्टोनियन, सज धमनिष्ठ ईसाई हैं बाप मे वेडे तब। पर वास्तव म तो कोई पिता रहा नहीं कोई नियम रहा नहीं। वे स्वतंत्र हैं उसलिए अपने ही महारे उह चलता है और क्याकि वे स्वतंत्रता या उसके अन्नगन नियम चाहत नहीं, वे माग करत हैं कि उनके हाथ पर बेंत नगानर दण्ड दिया जाए। वे घोर नियम बनान हैं बेल्गैवर सूली लफडिया के तैर लगाने हैं गिरजाघरा का स्थान पेन क लिए। सबानोगेना हैं मय-के-मय मैं कहता हूं आपन। पर व केवन पाप म बिश्वास करतें हैं, दामा म नहीं। सोचने अवश्य हैं उमके बारे म। दामा ही है जो उ- चाहिए—स्वीकरण आत्मसमपण, मुक्त, और गायद क्याकि वे भावुक भी हैं, राग्दान, बुमारी बधू, ईमानदार मनुष्य और गिरजाघरा का मगीन। मुझे ही न नीनिण—और मैं भावुक नहीं हूं—आप जानत हैं मैं किसका स्वप्न देता बरता था? एक सम्पूर्ण प्रेम का पूरे मा और सगर का प्रेम, रात दिन का अनवरत आलान, ऐंड्रिक सुन और मानमिर भारानिरेक—सज पांच बय तक रहकर मरु म विलीन हा जाए। विन्नु हाय।

स्मनिण ल-केर, वाग्दान और अविग्न प्रेम वे अभाव म होगा विषाह पागविक विवाह शक्ति और बाढे क आघार पर। मून बान तो यह है कि सब-कुद मरत हा जाए, जम बच्चे क लिए सरल हा जाना

है हर काम का आदेश मिले और अच्छा और बुरा, किसी एक के द्वारा मनमाने ढंग से निर्दिष्ट करने (अन स्पष्टन) बताया जाए। मैं बिलकुल इसने पक्ष में हूँ चाह ईसाइया ही तरह न होऊँ और जितना ही सितेली या गावा को क्या न देखू। यद्यपि आन्तिम ईसाई के लिए मेरे मन में स्नेह है, परपण्डित के पुत्र के ऊपर मैंने भी जाना कि मैं स्वतन्त्रता से डरता हूँ। इसलिए, जय हो स्वामी की। वह कोई भी क्यों नहीं जो दधी विधान का स्थान ले ले। 'हमारे पिता, जो अस्थायी रूप में यहाँ हैं हमारे मागदगव, पुलकित करने वाले हमारे कठार स्वामी, और नित्य और परमप्रिय नायक'। मक्षप में बहने को या कि स्वतन्त्रता रखना ही, और अनुनाप में अपने में उड़े बदमाश के आदेशों का पालन करना हा मूल तत्व है। जय हम सब दोषोद्धार तभी यह गणतन्त्र होगा। और हाँ प्यारे दोस्त यह भी कि अवेले मरने के लिए हम बन्ना सना होगा। मृत्यु अवेनी होती है जबकि दासता सामूहिक है। दूसरा को भी मित्रा है और सा भी उसी समय जब कि हमें—और यही सा असनी बात है। अन्त में माध पर घुटन टक् और ननशिर।

क्या यह अच्छा नहीं है कि हम बाकी सब समार की भाँति ही रहें और उससे लिए क्या चिन्ता नहीं है कि बाकी समार हमारी तरह ही हों? धर्मकी मान-गति पुनः उमड़ रूपता के पावन सत्कार हैं। उपशित आघेठव गन्तु की तरह लोहाया जाता हुआ, और बाधा में तभी दिना मारा कि मरा मूल्य क्या है। मैं जा हूँ उमर रख सखाता हूँ और अन्त में प्राप्त प्रसन्नता हूँ। इसीलिए मेरे दोस्त स्वतन्त्रता के प्रति आग्रह करने में उत्तम निणय किया कि जो भी आना मिल जाए उसीको जन्मी से यह स्वतन्त्रता मोंग लेनी पड़ेगी। और जय भी कर सनता हूँ मन्त्रिका मिटी के अपने गिरजाघर में मैं उपने दना हूँ। मैं उन मद्रजना को धाम प्रण दता हूँ कि अधिकार के प्रति धाम संगणन करे और विषयपूर्ण दासता की गुत्रिधाधा की याचना कर—गात मुक्त इस मवता वास्तविक स्वतन्त्रता का रूप ही क्या रखना पड़े।

पर मैं पगला नहीं गया हूँ, मैं खूब जानता हूँ कि दासता तन्का नही प्राप्त की जा सकती। जना ही है कि भविष्य में एक वर्गान सिद्ध होगी। तब तब मुझे नौ वतमान के साथ निवाह करना है इसीलिए किमी कामचलाऊ समाधान की खोज करनी पड़गा। इसीलिए मुझे और तब नियम का विस्तार करने का बाड और माघन बूटना पड़ा ताकि मेरे अपने बंधों पर उसका भार कम हो पाए। मुझ साधन मिन गए। पिडकी जरा खोल दीजिए। बड़ी गरमी है बहुत ज्यादा न खोनिगा, मुझे ठण्ड भी लगती है। मेरा विचार मरल है और उबर है किम तरह सबका पैसा दिया जाए ताकि मैं स्वयं बाहर घन में बठा रह सकूँ? क्या मैं बहुत से सम्मानित समकालीना की भांति उपेक्षा मात्र पर आम्ह होकर मानवता का शोभू? बहुत खतरनाक है यह। किसी दिन या किसी रात अगर चेतावनी मिले हमी फूट सकती है। आप जा नियम और पर कर रहे हाने हैं ठिठक कर आपके ही मुह पर आता है और कुछ हाँ भी करता है। तो इसमें क्या आप पूछते हैं। १) यह है समाधारण प्रतिभा का प्रमाण। मैंने जाना कि बेंत लिये हुए स्वामियों की प्रतीक्षा करते हुए हम नागा को कोपरनिकस की तरह तब को उलट देना चाहिए नात्रि जीन हमारी ही हो, क्योंकि तत्काल अपने ऊपर नियम दिय बिना दूसरा पर दायागेपन नहीं किया जा सकता। इसलिए दूसरो पर नियम देने का अधिकार पाने के लिए आवश्यक है कि अपने को पूरा तरह अभिभूत कर ल। क्योंकि हरएक निषायन किसी-न किसी दिन अनुतापा बन ही जाता है जमलिए दूसरे द्वारा म राह पाइएर अनुतापा का व्यवसाय अपनाता होगा, ताकि किसी-न किसी दिन अन म निषायन उन मरें। आप मनभ रह हैं मेरी बात? बहुत अच्छा। पर अपनी बात और भी स्पष्ट कराने के लिए मैं आपका बताऊँगा कि मैं कल काम करता हूँ।

पहले तो मैं कबानत का अपना दफार बन्द किया, देखि छाडा और भ्रमण किया। मैंने इगना किया था कि नाम बदलकर दूसरी ग्राह जमूँ जहाँ मुझ काम की कमी न हो। मगर म बहुतेर स्थान हैं

पर मयोग, सुविधा नियति का व्यर्थ और साथ ही एक प्रकार का आत्म पीटा की आवश्यकता न मुझे प्रेरित किया। पानी और बोहरे स भरी नहरो का मगलाना मे बंधी, विशेष रूप से भौंड म भरी राजधानी चुाने के लिए—ऐसी जहाँ कि गृष्टी के चारो बाना स लोग आते थ। मैंने अपना दफतर नाविको के मुहल्ले मे एक गरावगागे मे स्थापित किया। बन्दरगाह म विविध प्रकार के गाहन मिलते हैं। गरीब धनाढ्यो के मुहल्लो म नही जात उन कि सम्म समाज के साथ चक्कर काटत हुए एन नार इन कुत्सित म्यानों म पहुँच ही जाते हैं, जसा कि आप रम्य देख चुके हैं। मे पासतौर से बूहु आ की गह देखता हें और पथ भ्रष्ट बूहु आ की विनापकर उमीमे मुक्त अधिातम फन की प्राप्ति होनी है। किसी बुलभ बागलिया क गान्ध की तरह मैं मगीत के सूदमतम स्वर उसी म निवालाता हूँ।

एक तरह मैं अपना उपयोगी व्यवसाय कुछ दिना स भेजितना छिटी म करवा रहा हूँ। उसक अनगत पहले सा यह है जसा आप अपना अनुभव से जान गए है कि आवचनिक पाप स्वीकरण जितनी बार हा सके किया जाए। मैं अपने को पुरान पुनारकर बान-कोन म आप गाधी धापित करता हूँ। कुछ मुत्तिन नही है क्याकि अब मुभ म्मृति का धरान प्राप्त हो गया है। पर जाना कह दूँ मैं धापम कि मैं बहूने दम म छाती पीट-पीटकर अपने का दोषी नही ठहरता। नहीं मैं पुनानता म जान गेता हूँ भे बिभना और इधर-उधर का जाना का मयनन करते हुए—या कह कि अपने श्रोता के अनुरूप मैं अपने शानो का जान लेता हूँ और उन आगाना हूँ कि मुभम यह चक्कर कह। जिन जाना का दूसरा म सम्बध है और जिनना मुक्त ही म सम्बध है उह में मिता जुना गेता है। मैं उन विनापनाया को चुना हूँ जा गमान रूप म हम जाना की होनी है उन अनुभव का जा हमन साथ सहे है उन कमजोरिया का जा हम जानते थ है—मर-कुछ बह दम या होना है मगर थ उनपुन मनुष्य बाम्भव म जगा जो मुभम और दूसरों म

पावन करता है। इन सुवर्ण नेत्रों में गगन चित्र का निमाग करना =
 तो सबका प्रतिरूप है और किसी का भी नहीं। या वह चित्र एक
 मुखोप है बुद्ध-बुद्ध बना जाता मन्त्रमान चित्र जाता है या
 सदाव और विशिष्ट भी होता है और निष्प्राण और गति-बद्ध ना
 निम दबकर योग कह जल हैं "यन् एतन्ता मे भिन्न बना"। तब
 चित्र बनकर तयार हो जाता है, जसा आप नाम हा गया है, तो मैं उसे
 कुछ क माय उम दिखाना है, 'यह है मैं, हाय।' बाप की ओर म
 आपागोपण समाप्त होता है। पर माय ही जो चित्र मैं अपने मन-
 कालों का दिखाना है वह दर्पण भी बन जाता है।

अपमान में सदा, बान नाचना चेष्ट पर नाचून के निगान निय,
 तबिन धपन वाली शक्ति में देखना दुधा में समस्त मानवता के सामन
 बना होता है, अपने कलाचारा की कहानी सुनाना दुधा—पर बिना
 उस बात का मुनाय हुए नि कसा प्रभाव डार रहा है और यह कसा
 दुधा कि मैं भीचा म निम्नतम है। तब चपक में मैं 'मैं' की जगह 'हम'
 कहने लगता हूँ। जब तक मैं इस स्थान पर पहुँचना हूँ कि मैं 'तम' के
 तम तब तक वेन छूम हा जाता है और मैं जानासा का घना बना
 स्वप्ना है। निश्चय ही मैं उही जमा हूँ। हम सब एक ही गले म मान
 हैं। तबिन मैं उनसे श्रेष्ठ हूँ इस बात में कि मुझे यह मानून है और
 इसलिए मुझे बानन का अधिकार प्राप्त है। निश्चय ना आप हमका
 आपका स्व पाने हति। चित्रना हा मैं अपने जग आपागोपण बना
 हूँ जतना हा मुझे आपके बापे म निगय करने का अधिकार मिलता है।
 असु भी अच्छा मैं आपका उकसाना हूँ कि आप स्वय अपने विषय
 में निगय हें और जसा मेरा उम हृद तक नार कम हो जाता है।
 पाह, पर जस हम अज्ञान वाश्यान जीव हैं और धार हम अपने
 तब जीवन पर दृष्टिगत करें ता गग अवमरा का कमी न हागा तबिन
 मैं प्रवम्मा ना और ना हम उज्जावनन कर दें। वर स्थिति प्राप्त।
 पार सब मानें, मैं वर ही भान भाव न आपका स्वीकृत मुनूता।

हैंसिए मत । हाँ, आप बड़े बेठक मुक्किल हैं, यह तो मैंने तुरन्त ताड लिया था । पर अनिवायन आप पट्टेबंदे वही । अधिकतर लोग बुद्धिमान होने की अपेक्षा भावुक ज्यादा होते हैं, वे एकदम विचलित हो जाते हैं । बुद्धिमानों के साथ कुछ समय लगता है । उनके लिए तो पयाप्त है कि प्रणाली उह पूरी तरह समझा दी जाए । वे उस भूलते नहीं मनन करते हैं । देर-सवेर, कुछ तो खिलवाड में, कुछ भावावेश में वे समर्पण करके सब-कुछ बता देते हैं । आप न केवल बुद्धिमान हैं अनुभव से मैंने मँजाए भी दोस्त हैं । पर मान नाइए कि आज आप अपने से उतने प्रसन्न नहीं हैं जितने कि पाँच दिन पहले थे । अब मैं इतना बरुंगा कि आप मुझे पग भेजें या यहाँ वापस नौट क्योंकि आप लौटेंगे इसका मुझे निश्चय है । आप मुझसे बड़ी अलग नहीं पाएँगे और मैं बदलूँ भी क्या जरा कि मुझे वह आनंद प्राप्त हो गया है जो मेरे अनुभव है ? मैंने द्विविधता को स्वीकार कर लिया है, यथाय उससे परेमान होने के । मैं तो उसमें जम गया हूँ और यहाँ मुझ वह आगम मिला है जिसे मैं जीवन भर मँता रहा हूँ । मैं गलती पर या जरा मैं आपसे कहा कि मूल बात यह है कि निर्णय से बनो । मूल बात तो यह है कि अपने का हर चीज की छूट दो, चाहे यह भी हो कि समय समय पर अपनी ही शक्ति को जोर-जोर से याद दिलाना पड़े । मैं फिर मैं अपने को हर चीज की छूट देता हूँ और दूसरे बार जिना उस पर हँसी है । मैंने अपने जीवन का ग्य बर्ता नहीं है मैं अब तो अपने को प्यार करता हूँ और दूसरों का उपयोग करता हूँ । बस इतना ही है कि अपने पापा का स्वाद मूल फिर सँभलने लिन ग श्रीगणेश करन की मुविधा प्रदान करता है और दादगी प्रगतिता दता है—गलती तो अपना स्वभाव की और दूसरे एवं मनमाना गचाताप की ।

जब मैंने समाधान ढूँढ़ लिया है तब से मैं हर राज के सामने झुक जाता हूँ—घोड़ों के दम्भ के ऊपर व आश्रितों के और यही सब कि उग मुबारक भी जा बड़ मज्द में हम समय बड़ रहा है । अतः मैं मैं

प्रभुता प्राप्त कर लेता है—हमेशा के लिए। एक बार फिर मैं उस
 जेबार्ड पर पहुँच गया हूँ जहाँ तक कबल में ही चढ़ पाया हूँ और जहाँ
 मैं हर एक पर निगाह दसूँगा हूँ। उम्मेद-उम्मेद अचानकों के बाव
 किसी मुशकिली रात का मुझ पर अभी-अभी एक पर हमला सुनायी प
 जानी है और मैं फिर भाग्य में पड़ जाता हूँ। पर शीघ्र ही मैं सब-कु
 छबन देता हूँ। तागा का घोंघातों को, अचानक हीवना के बोझ के नीचे,
 और फिर मैं तुरन्त चपक जाता हूँ।

तो मैं आराम इन्तजार करता 'मस्किंग सिटी' में त्रिभुज के
 आरामकता हाथी अपनी देर। यह कम्बल जग हटा दानिए, मैं मुँह
 बना चाहता हूँ। आप आगे न ? मैं आपसे अपनी गनी की मूँह
 बनें बताऊँगा क्योंकि मुझे आपके प्रति एक प्रकाश का स्पर्श हो गया
 है। आप रात रात मुझ तक को एक सिवान पार्किंग के घण्टित हूँ।
 आज ही शाम को मैं फिर एक कर दूँगा। मैं उसका रिता उठा सकता
 और न ही अपने का लन सगा न बचिन रखना चाहता हूँ जब गराव
 का सम्पत्ता में लन काइ एक टेर हो जाता है और अपनी छाया पीटना
 एक कर देता है। तब मैं और सम्बा हा जाता हूँ म'प्यार दान्न और
 उम्मा। मैं खल-रमास लेता हूँ मैं गन-गिर पर आसक्त जाता हूँ
 और मरी आकों के सामने समनन वृत्ति का विस्तार होता है। पन
 पिता परमात्मा के समान अनुभव करना और चुबगितता और बुनी
 अन्तों का प्रमाण-यत्र बाटना जितना मादक जाता है। मैं अपने बु
 द्धियों के बाव सिगमन पर आसक्त होता हूँ डक स्वा के लिए प
 और मैं दस्ता हूँ जन-मुशकिल का अपना आर चत आउ हुआ बाहर और
 पाना न निवर्तन-निवसदर। बघा बा लय बट्ट हूँ लन में सदन
 धा बाव का पर्वता में दख रहा हूँ। नव अचलचलित हाथ न
 पाय-के चहने प मैं पट मगता हूँ—जमी तामन्य दान का विचार
 और उसमें पनादन न कर पान का हनना। और जहाँ नग मैं दिना
 पान-मुक्त सिद्धिया करता हूँ बिना समाप्ति उरानुनति प्रगत करता

हैं और इससे बड़ी बात—कि मैं यह अनुभव करता हूँ कि मरी आराधना हो रही है।

हाँ, मैं चर फिर रहा हूँ। एक अच्छे मरीज की तरह मैं पलंग पर लेटा बस रह सकता था? मुझे तो आपसे ऊँचा होना जरूरी है और मेरे बिना मुझे ऊपर उठाने हैं। ऐसी रातों का, या वह कि ऐसी मुझ (क्याकि पतन उपायनाल में ही हाता है) मैं बाहर जाकर तभी मनहरी व बिनार दहलता हूँ। सुरमई आवाज में पग की वहे भीना पड़ी जानी हैं बपोत बुद्ध और ऊपर चल जाते हैं और छना के ऊपर में एक गुलाबी प्रकाश मेरी सृष्टि के नय दिन का घोषणा करता है। डोमर पर पहली ट्राम गाड़ी नम हुआ मैं अपनी घटी बजाती है और यूरोप व इस छोरे पर प्राणिया के जागन की सूचना देती है—इस छोर पर जहाँ उसी दाग हारा-साया मनुष्य मर प्रजाजन, टप्टपूया बिस्तर छो बाहर निरगत हैं मुह में कन्हाट भर, अपने अपने आनन्दीन घघा पर जान के लिए। तब इस महाद्वीप पर उदयन भरस हुए, जो सारे-का गारा जनजाने ही मर अधीन है उगने हुए दिवस की सर्गिम आभा का पाव करता हुए दुःख के नये मर मैं सुना होता हूँ मैं कहता हूँ आपसे कि मैं सुनी हूँ मैं आपका यह न सोचन दूँगा कि मैं सुना नहीं हूँ मैं मृ-मु-मयन सुनी हूँ। धीरे सूय मागर व्यापारी बागुमा का राह व द्राप और यौवन त्रिगवी स्मृतिर्या मनुष्य को नरान्य में भूता श्री हूँ।

मैं फिर बिस्तर पर उठा जा रहा हूँ मुझ माफ करें। मुझ डर है कि मैं घाटा में आ गया था पर मैं अभी नहीं वहा रहा हूँ। अभी पानी आदमी बहा जाया है तथ्यो पर गारा करता हुए उस समय भी जब कि उगन मनुजीवन व रहस्य का पना का लिया होता है। अगर मर गमाधान आदम नहीं है। पर जब आपका अपना जीवन पसंद न है जब आपकी पना गा हा कि जाया बनता ही पदगा ता पना का नार्द प्रान नहा रहे जाता है या रहे जाना है? कोई दूसरा व्यक्ति

वन जान क लिए क्या कर सकते हैं आप ? असम्भव है। आदमी को कुछ भी होन जो स्थिति त्याग दनी पड़ेगी, अपना स्वत्व दूसर के लिए नष्ट देना पड़ेगा। कम-से-कम एक बार। पर कब ? मेरे प्रति ज्यादा बजोर न हो आप। मैं जब बूटे भिखारी नौ तरह हूँ जो एक दिन बर्फ के चूल्हे पर मेरा हाथ छोट हो नहीं रहा था। "आह, श्रीमान इतना ही नहीं है कि मुझ को अच्छाई नहीं है, पर आदमी मे डर लगता ही है कि कहीं शत्रुता की रक्षा का भी न का बडे।" हा, हमन प्रजा की रक्षा का दा है व मुजमान भी और उनकी वह पुनीत निर्दोषिता भी जो अपने का क्षमा कर रहे हैं।

द्विए, द्विए, बर्फ गिर रही है। शीत में जल्द बाहर आऊंगा। मैंने रात्रि में साफ नुमा छम्स्टडम, बर्फ से टके पुता के नीचे गहरी हवा नहीं, मूनी सटके मरी दवा हुई पगध्वनि—बहु हागी पावतता बाह का स्थिति ही क्या न हो, बल के कोचक के पहन। द्विए, बटा-का मुष्ट परले निहका के गीने पर ठंकर था रही है। जल्द ही मैं आता हूँ। अन्त में निश्चय करत ही हैं नीचे उतरत आ, व प्यारे पक्ष में व पानी को भी धनों की परों की माटी तह में टक दन है, हर स्थिति की मामल फट्टान हैं। क्या आक्रमण है। आता है कि घञ्जी नजर ही लाए हूँ। हर एक व्यक्ति तर जाएगा ? हाँ, क्या ? केवल तिन चुन श नही। मण्डलिमार कठिनाइयों का सामा हाता भी आप, जगहों के लिए, आप आपन मह रात मेरे खातिर अभीन पर सावेंगे। मान ताए कि शार स्वयं में मुक्त से जान क लिए कोई विमान उतर आए या बर्फ में आप नग ताण जो आप स्थिति रह आएँगे। आपकी स्थिति नहीं ? न मुझे हा। परता मा बाहर जाना मेरे लिए उम्मी है।

दण्ड-अच्छा मैं चुन हुआ जाता हूँ, धवपान नहीं। मेरा भावा का और प्रजाप का दन्ता मन्नीर न समझिए। व निश्चित है। अर पत्र जब आप मुझ पर आते मे वार्ते बरत बात हैं तो मैं देखूंगा कि

मेरे समय कर देने वाले स्वीकरण ता एन उद्देश्य पूरा हुआ या नहीं।
 असल में मैं हमारा आगा करता रहता हूँ कि मेरे साथ बातें करो वाला
 कोई पुलिस वाला होगा और मुझे 'दि जस्ट जजन' की चोरी के अपराध
 में गिरफ्तार कर लेगा। सही रह रहा हूँ न कि बाका बाता के लिए
 कोई मुझे गिरफ्तार नहीं कर सकता? पर जहाँ तक उस चोरी का
 मवाल है वह कानून के नियमों में है और मैंने सब व्यवस्था इसकी कर
 ली है कि मैं उसका सह-अपराधी माना जाऊँ। मैं उस कला-कृति को
 रखे हुए हूँ और जो देखना चाहता है उसे दिखाता हूँ। तो आप मुझे
 गिरफ्तार करेंगे यह तो सुभारम्भ होगा।

पर आप पुलिस वाले तो हैं नहीं होने तो खड़ी आसानी हो जाती।
 क्या? आह मुझे यही तो पता था। ता जो अजीब सा लगाव मुझे
 आपसे लिए महसूस होता था उसका कुछ आधार था। ता आप परिसर
 में कपालन का गौरवगाला पक्षा करत हैं। मुझे लगा था कि हम एक
 ही जाति के हैं। हम सब क्या एक-न ही होते, निरंतर बालते रहते
 हैं पर किसी व्यक्ति विशेष में नहीं हमारा उही सवालों का साधना
 करत रहते हैं यद्यपि उनसे उत्तर पहले से ही हम भालूम होते हैं। तो
 कृपा करके बताइए मुझे मन नदी के घाटा पर एक रात आपका क्या
 अनुभव हुआ था और कम आप अपनी जान खतरे में न डालन का क्या
 सवे? आप स्वयं के गमन जा मरी रात में निरंतर प्रतिध्वनित होते
 रहे हैं और जित्त आपका मुह उ आगिर में बह सकूंगा सो युवती एक
 बार फिर पानी में कूज जा ताकि मुझे उस पानी का बचान का एक
 अवसर फिर मिले। दूसरा अंगर। आप क्या उत्तरनाय सुभाय
 है। कल्पना कीजिए मेरे मातृक कि नमारी का अंगरग मान ली
 जाए ता? तब ता हमरा यह सब करना ही पड़ जाएगा—आप—
 पानी बितना ठहा है। पर हम क्या परगात हा? अब तो बहुत दर हा
 गई। हमारा व लिए बहुत पर हो गई—भाग्यवत।

‘पतन’ में आए विशिष्ट सदर्थों का अर्थ

शोमनो एव प्रागतिहासिक जाति-विशेष, जिसके अवशेष १८६८ में पास में आमानान नामक गुफा में पाये गए थे।

वेबल की मोनार वाचित्र की एक कथा के अनुसार जल प्रलय के बाद नूह के जहाज में जा मनुष्य बच गए थे उन्होंने वेबल में एक ऐसी मोनार बनाने का वादा उठाया जा आकाश का छू ले। पर सबकी भाषा अलग-अलग होन के कारण यह मोनार कभी न बन सका। इस लिए आनकारिक भाषा में ऐसी जगह को जहाँ सब अपनी अपनी बात कहते हैं पर कोई किसी दूसरे का बात समझना न हो, वेबल का मोनार कहते हैं।

सूमा ईसा के जन्मकाल में यहूदियों का एक सम्प्रदाय जो भूत प्रता, परितो और पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखता था।

ग्वारडा हाइट की सबसे बड़ी नदी।

बन्स-बर्नार्ड विजनी की भाड़ू जो मारा गद्द खींच लेती है।

साहसि ‘हमा का नामक’ (नाइट ऑफ द स्वेन) नामक जर्मन दल-कथा में पवित्र नाम पात्र का पुत्र।

सोजन आरु आनर फाम की सर्वोच्च सम्मानसूचक उपाधि।

सापवेन आर्मी (भुक्ति मेना) धार्मिक परोपकारी मस्था।

क्रासिस्तन आर्या का एक सम्प्रदाय विशेष जिसकी स्थापना मन्त फ्रांसिस न १२०६ में की थी।

परनाड एक प्रकार का भाद्रक पत्र।

पन फ्रांस का नया जिसके तिनारे परिम नगर बसा हुआ है।

एन्ता निम्ना द्वीप पर एक ज्वालामुखी पर्वत।

ध्यापारी बाएँ भूमध्य रेखा के निकट चलने वाली हवाएँ जिनके महारे पुराने उमान में व्यापारी जहाज बना करते थे।

धेनस रामन स्वता जिसके १० मुह थे, एक आग और एक पाछे।

प्लत रोर बूनापर पनाम आ एक पश्चिमी पहनावा।

डिगोन फ्रांस का वृत्तमान राष्ट्रपति जो द्वितीय महायुद्ध में बहुत प्रसिद्ध मननामक रह चुके हैं।

आइगान्त आगवी गताब्दी के महानतम वैज्ञानिक और दार्शनिक जिन्होंने मानवता के सिद्धान्त की स्थापना की।

रेफा (१५६६-१६०) फ्रांस का फामासी वैज्ञानिक और दार्शनिक।

इल्लन बाइ नाडियों का कुब्जात नजरवन्नी कम्प जहाँ हजारों-लाखों

यहूदिया को यत्रणाएँ देकर मौत के घाट उतार दिया गया था।

दांते (१२६५/१३२१) प्रख्यात इतालवी कवि।

लिम्बो रोमन कथोलिक धर्म-ग्रन्थ के अनुसार वह जमह जहाँ ऐसे लोग मरने के बाद भेजे जाते हैं जिन्हें जीते जी गिरजाघर की कृपा प्राप्त नहीं हुई, पर जो इतने पापी भी नहीं थे कि उन्हें जान-बूझकर पाप करने वाला का नज़र दिया जाता।

इसोल्डे किंग घायर से सम्बन्धित एक प्रेम-कथा की पात्रा जो सर ट्रिस्टन में प्रेम करती थी। अपनी पत्नी के विश्वासघात के कारण (पत्नी का नाम भी इसोल्डे था) सर ट्रिस्टन को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। अपने प्रेमी के वियोग में इसोल्डे ने भी अपने प्राण दे दिये। दोनों को एक कब्र में दफनाकर उस पर गुलाब और अनूर की दावतें लगा दी गई जो एक दूसरे में इस तरह मिल गई कि उन्हें अनन्त वरना असम्भव हो गया।

गिलोलीन फ्रांस की शान्ति के समय शान्तिवारियाँ न अपने विरोधियों के सर काटने के लिए इग यत्र का प्रयोग किया था।

सुई घोषह (१६३८-१७१५) फ्रांस का बादशाह।

फैरो प्राचीन मिस्री शब्दाह।

डेव चेयस जहाज की खुली छत पर इस्तेमाल की जाने वाली कुर्तियाँ।

लिटल ईज टावर आफ लदन में यातनाएँ देने के लिए बनाया गया काल कोठरिया।

इवेन्जेलिस्ट एक ईसाई सम्प्रदाय।

लूक ईसाई सत्त जिन्होंने ईसा का जीवन-वृत्त लिखा है।

पोटर इगार्ड सत्त जिन्हें स्वयं ईसा ने सत्ता का पना चुना था।

एपाइडा इसाइन के शब्दाह अगत्र के समय के एक पैगम्बर।

येरमियर एक प्रख्यात चित्रकार।

फोफ्रा पा एक कामीगी परवान।

शेरस्ता चौन्टवी पताला के बाद प्रख्यात मनापति।

दि जस्ट जजिड चित्रवना की एक प्रख्यात कृति।

गौ (घट) हालट का एक प्रसिद्ध नगर।

मस्कोवाण्ट मारनागामी।

योस्टोनिपन धमरीका के प्रख्यात योस्टन नगर के निवासी।

